अमावस्या का चांद

उपन्यास

बैरिस्टर गोविंद दास

अनुवाद

दिनेश माली

--

अमावस्या का चांद

उपन्यास

बैरिस्टर गोविंद दास

अनुवाद

दिनेश माली

आमुख

ओड़िया साहित्यकार डॉक्टर प्रसन्न कुमार बराल द्‌वारा संपादित ओड़िया पत्रिका 'गोधूलि लग्न' में जब मैंने बैरिस्टर गोविंद दास के अन्यतम उपन्यास 'अमावस्या का चांद' पर उनकी समीक्षा पढ़ी तो मैं भाव-विभोर हो गया। मुझे ऐसा लगा मानो मेरे हाथ में अमूल्य साहित्य का कोई छुपा हुआ बहुत बड़ा खजाना लग गया हो। तत्काल मैंने भुवनेश्वर में लगे पुस्तक मेले से इस उपन्यास को खरीदने की व्यवस्था की और खरीदकर उसे बड़े चाव से पढ़ने

लगा। जैसे-जैसे मैं उसे पढ़ते जा रहा था, वैसे-वैसे इस उपन्यास के मुख्य पात्र काउल में मुझे कभी भगवतीचरण वर्मा के कालजयी उपन्यास 'चित्रलेखा' के नायक 'बीजगुप्त' तो कभी मुंशी प्रेमचंद के विख्यात उपन्यास 'सेवासदन' के गजाधर पांडे तो कभी धर्मवीर भारती के कालजयी उपन्यास 'गुनाहों के देवता' का नायक 'चंदर' की याद ताजा हो जाती थी। सभी पात्र एक से बढ़कर एक थे! उपन्यास के महिला पात्रों में नीरा 'सेवासदन' की 'सुमन' लगती तो मनीषा 'गुनाहों के देवता' की 'सुधा' दिखने लगती तो बाईजी 'चित्रलेखा' की नर्तकी चित्रलेखा की प्रतिच्छाया प्रतीत होने लगती थी। इतने सारे पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं, अभिनेयता, मनोस्थितियों को एक कलेवर में समेटकर उपन्यासकार बैरिस्टर गोविंद दास ने भारतीय साहित्य में अपना नाम अमर किया है। ऐसा लगता है कि तत्कालीन हिंदी साहित्य में भी पाप-पुण्य, भाग्य की विडम्बना, शून्य से शिखर तक पहुँचने वाली विचारधारा दृष्टिगोचर थी। 'सेवासदन' की वेश्या सुमन को उसका साधु बना पति गजाधर पांडे वेश्याओं के बच्चों को पढ़ाने के लिए सामाजिक कार्यकर्ताओं में मदन सिंह आदि की मदद से आवासीय विद्यालय 'सेवासदन' जैसे खोलने की सलाह देता है तो इस उपन्यास में वेश्या नीरा की आर्थिक मदद कर काउल पतित स्त्रियों के बच्चों को पढ़ाई के लिए स्कूल खुलवाकर उसकी सामाजिक प्रतिष्ठा लौटा देता है। दोनों आदर्शवादी घटनाओं का सादृश्य बहुत ज्यादा है!

पाप-पुण्य को परिभाषित करने के लिए उपन्यासकार ने भगवतीचरण वर्मा की 'चित्रलेखा' के पात्रों जैसे श्वेतांक, विशालदेव, कुमारगिरि, बीजगुप्त, नर्तकी चित्रलेखा, यशोधरा और दृश्य-विधान के लिए पाटलिपुत्र के राजगृह, हिमालय की प्राकृतिक छटा आदि का सहारा लिया है। असल में उपन्यासकार की दृष्टि में पाप-पुण्य व्यक्ति विशेष की मानसिक स्थिति और समय के सापेक्ष अपना रूप बदलते रहते हैं। धर्मवीर भारती के 'गुनाहों का देवता' में सुधा की उपन्यास के अंत में अपने प्रेमी चंदर के सामने प्रसव-पीड़ा के दौरान मृत्यु हो जाती है तो बैरिस्टर गोविंद दास के उपन्यास 'अमावस्या का चांद' में मनीषा की कैंसर हॉस्पिटल में अपने प्रेमी काउल के लापता होने के गम में और उसके लौटने का इंतजार करते-करते मृत्यु हो जाती है। दोनों उपन्यासों की वेदना भी काफी हद तक मिलती-जुलती है। क्या यह सादृश्य संयोगवश हो सकता है अथवा तत्कालीन भारतीय साहित्यकारों की सम विचारधारा इसके मूल में हैं? जिस तरह 'गुनाहों का देवता' सन 1954 में ज्ञानपीठ, दिल्ली से प्रकाशित होकर आज तक अपने 70 संस्करण पूरे कर चुका है, इसी तरह 'अमावस्या का चांद' ने सन 1964 में ओड़िशा बुक स्टोर, कटक प्रकाशित होकर अपने 33 संस्करण पूरे कर चुका है। आज भी दोनों उपन्यास अपनी-अपनी जगह पर लोकप्रियता की पराकाष्ठा पर है। यह देखकर मैंने हिंदी में इस

उपन्यास का अनुवाद करने का निश्चय किया। मेरे परम मित्र उमाकांत मोहंती ने मेरे इस निर्णय को और ज्यादा सशक्त कर दिया। उनके अनुसार अगर हिन्दी का कोई श्रेष्ठ प्रकाशक इस पांडुलिपि को प्रकाशित करता है तो यह उपन्यास भी अवश्य हिंदी जगत में विशिष्ट स्थान प्राप्त कर लेगा। इस तरह मैंने साहित्यिक अनुवाद कर अपना धर्म निभाया। अब परिणाम अच्छे रहेंगे या नहीं, यह तो पाठकों की प्रतिक्रिया और उपन्यास के भाग्य पर निर्भर करेगा। फिर भी मैं आशान्वित हूं कि यह अनूदित उपन्यास आज नहीं तो कल, हिंदी-जगत में कामयाबी के शिखर को अवश्य स्पर्श करेगा।

ईश्वर से यही कामना करते हुए

दिनेश कुमार माली
तालचेर

अभिमत

1.बैरिस्टर गोविंद दास और अमावस्या का चाँद:-

“ अंगूर खाओ, स्वास्थ्य के लिए अच्छे हैं;मगर इन अंगूरों के रस का क्वाथ गिलास में लेकर पियोगे तो तुम्हें मद्यपान करने वाला कहा जाएगा। एक नारी का उपभोग करोगे तो समाज तुम्हें उसका पति कहेगा, मगर ज्यादा नारियों का उपभोग करोगे तो समाज तुम्हें लंपट कहेगा। भविष्य में अपनी आर्थिक उन्नति के लिए जगन्नाथ जी के सामने धन बांटोगे तो समाज कहेगा धार्मिक, मगर रेस-कोर्स में पैसा कमाने के लिए लॉटरी खरीदोगे तो लोग कहेंगे जुआरी, गैंबलर। ” ये पंक्तियां याद आते ही मेरे स्मृति-पटल पर तरोताजा हो जाता है ओड़िया साहित्य का एक बहुचर्चित उपन्यास- “अमावस्या का चाँद”। उस समय मन में प्रश्न उठता है कि ऐसा कालजयी उपन्यास बैरिस्टर गोविंद दास ने लिखा कैसे?अनगिनत पाठकों के मन में बहुत दिनों से उठ रहे इस प्रश्न का उत्तर खुद गोविंद दास देते हैं:-

वह ढलते शनिवार की आलस भरी दुपहरी थी। कटक विकास प्राधिकरण में स्थित दास भवन में उनसे मिलने के लिए ‘हमारा समय’ अखबार की तरफ से मैं वहां गया था। उस दिन मेरा मन बहुत इच्छुक था, करोड़ों युवाओं के आदर्श प्रतीक चरित्र काउल को सशरीर देखने के लिए।

क्या यह संभव है! क्या भौतिक जगत में एक शरीरधारी मनुष्य आधुनिक युग में काउल बन सकता है?भौतिक विमुक्तता इतनी सहज बात नहीं है! फिर उम्र की ढलान में **अगर वह काउल काउल जैसा लगता है-** यह जानने की मन में अभिलाषा थी। मन में कामना थी, कामना रूपी घोड़े पर सवार होकर उसे अपनी इच्छा से दौड़ाने की, फिर **उस** दौड़ के दौरान उस रास्ते पर चुपचाप छोड़कर लौट आता एक दर्शक बनकर यह कहते हुए ‘तू अपने रास्ते पर जा’ और वह फिर अपने रास्ते पर लौट आता था। कह सकते है नए रास्ते की खोज में रेस कोर्स, घोड़े, दर्शक, हार-जीत आदि को पीछे छोड़ कर चलता जा रहा था काउल! अरे, काउल का घर और कितनी दूर है!

प्रिय पाठको! मैं आपको काउल को याद दिलाने की धृष्टता नहीं करूंगा। क्योंकि बैरिस्टर गोविंद दास का ‘काउल’, ‘अमावस्या का चांद’ का ‘काउल’ शायद ओड़िया साहित्य में पहला पात्र है जो जाति-वर्ग-वर्ण-देश की सीमाओं से ऊपर उठकर अंतर्राष्ट्रीय चरित्र का प्रतिनिधित्व करता है। ओड़िया उपन्यासों में ‘अमावस्या का चाँद’ के सर्वाधिक संस्करण (अभी तक 33 बार) प्रकाशित हो चुके है। काउल के चरित्र की सफलता इस बात से उजागर होती है कि 50 वर्षों से अधिक समय से पाठकों को काउल के डायलोग कविता की पंक्तियों की तरह याद हैं। काउल ने ओड़िया पाठकों के हृदय में, सपनों में, आदर्श में, पत्र-भाषा में, सभा-समिति में,

आलाप-आलोचना में, साहित्य में ऐसी जगह स्थापित की है, वैसी जगह किसी अन्य ओड़िया उपन्यास के पात्र के भाग्य में नहीं है।

इसलिए काउल से मिलने के लिए हम पहुंच गए उपन्यासकार गोविंद दास के घर और 'अमावस्या का चाँद' जैसे कालजयी उपन्यास-रचना की पृष्ठभूमि के गर्त में छिपे हुए कथानक की तलाश करने लगे। गोविंद दास अपनी स्वीकारोक्ति इस तरह करते हैं:-

हरमन हेस के विख्यात उपन्यास 'सिद्धार्थ' ने मेरे मन पर गंभीर प्रभाव डाला। जीवन की विभिन्नताओं के भीतर उस पात्र के मूल्यांकन करने का प्रयास मेरे लिए आकर्षण का अन्यतम कारण था। इसके अतिरिक्त, सिद्धार्थ जिस तरह अंत में गौतम बुद्ध के अष्टांग मार्ग की 'सम्यक समाधि' के निकट पहुंचकर जीवन को समझ पाता है, वही कहानी मुझे उद्वेलित करती है। इसलिए मैंने सोचा कि मैं भी एक ऐसे चरित्र को तैयार करूंगा, **जो जीवन की विभिन्न अवस्थाओं में मानवता के मापदंड की कसौटी पर खरा उतरेगा।** इस प्रकार इस कहानी का स्केच मुझे मिला हरमन हेस के पास, जिसका ट्रीटमेंट मैंने अपनी रुचि और आवश्यकता के अनुसार किया।

बड़े मजे की बात है, काउल ओड़िया पात्र नहीं है। इसी तरह मुख्य घटनाएं भी ओड़िशा की नहीं है जैसेकि रेसकोर्स, बाईजी का कोठा-ये सब ओड़िशा में नहीं है। फिर ओड़िया पाठकों के प्रिय पात्र के अंदर **जीवंतता है**, जीवन खोजने का साहस है**, इसलिए उन्हें यह पात्र पसंद** आता है। विभिन्न मनस्थितियों वाला 'काउल' उनकी इच्छा और अभिलाषा का प्रतीक बन गया है। इसलिए मैं ओड़िशा के वृहत्तर पाठक वर्ग के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं।

आप जानना चाहते होंगे कि वह काउल मैं हूं या कोई और। नहीं तो और कौन है? कहानी इस प्रकार है-

कोई भी पात्र, कथावस्तु या विचार धारा अगर लेखक की अनुभूति नहीं है, मेरा विश्वास है वह कृति पाठक जगत को आंदोलित नहीं कर पाएगी। इस पात्र में आप वह प्रेरणा खुद खोज सकते हैं। मैं जब विलायत से बार-एट-लॉ करके लौटा, उस समय मैंने नहीं सोचा था कि मैं क्या करूंगा। ओड़िशा में रहूंगा या सुप्रीम कोर्ट जाऊंगा **या ये सब-कुछ छोडकर कोई और** काम करुंगा-ये सारे मेरे सामने प्रश्नवाचक थे। एक समय ऐसा आया-मैंने निश्चय किया, जीवन जिस रास्ते पर जा रहा है जाए, मेरा काम उसके साथ खेलना है, इस जीवन से खेलने की हिम्मत मुझे मेरे अतीत की पृष्ठभूमि ने प्रदान की।

छात्र जीवन से ही दुस्साहसिक काम करने की मन में इच्छा थी। हमारा एक मध्यमवर्गीय परिवार था। मेरे मित्रों ने, जो धनी परिवारों से संबंध रखते थे, कटक में पढ़ने का निर्णय लिया, उस समय मेरी कोलकाता की प्रेसिडेंसी कॉलेज में पढ़ने की इच्छा हुई। उस समय कटक के लड़कों के लिए प्रेसिडेंसी कॉलेज में अध्ययन करना एवरेस्ट की चोटी पर चढ़ने के तुल्य था। प्रेसिडेंसी कॉलेज से बी॰ए॰करने के बाद मैंने ऑक्सफोर्ड में बार-एट-लॉ के लिए अप्लाई किया। ऑक्सफोर्ड में पढ़ना भी कोई आसान बात नहीं थी। पहले तो वहाँ सीट पाना भी कोई साधारण बात नहीं थी, उसके बाद पढ़ाई का खर्च निकालना भी इतना सहज नहीं था। मगर मुझे सीट मिल गई और मैंने पिताजी से आगे पढ़ने की हठ करने लगा। पिताजी ने मना नहीं किया। ऋण लेकर मुझे ऑक्सफोर्ड भेजा गया। मुझे आज भी याद है- जब मैंने घर में बैरिस्टर बनने की इच्छा जाहिर की तो हमारे घर में मानो वज्रपात हो गया। क्योंकि बैरिस्टरी की पढ़ाई करने के लिए उस समय शायद कटक शहर में दस-बारह जनों को छोडकर किसी के पास इतना पैसा नहीं था।

मैं पढ़ाई में अच्छा था। उसके अलावा, उस समय मेरा समाजवादी आंदोलन से घनिष्ठ संबंध था। सन 1951 में छात्र-आंदोलन के समय जेल भी गया था। बीच में समाजवादी अखबार 'कृषक' का संपादन कर रहा था। मैं अपने पिता की इकलौती संतान था। वे चाहते थे कि मैं डॉक्टर बनूँ। अगर मैं चाहता तो उस समय आई॰ए॰एस॰ बन सकता था। परंतु ये सब छोड़कर मैं वकील बना। ओड़िशा में पहले वकालत शुरु की। यहां खूब प्रतिष्ठित होने के बाद अचानक मेरी इच्छा हुई दिल्ली जाकर सुप्रीम कोर्ट में प्रैक्टिस करने की। उस समय ओड़िशा में जो मुझे प्रतिष्ठा मिली थी, उससे आराम से धनोपार्जन किया जा सकता था। मगर मैंने दिल्ली में नए सिरे से अपने आप को स्थापित करने के लिए संघर्ष करना ज्यादा पसंद किया। शायद मेरे मन में भविष्य के प्रति एक पुंजीभूत आग्रह था, जो मुझे आगे-से-आगे खेल खेलने के लिए प्रेरित कर रहा था।

उस समय और एक ऐसी घटना घटी, जो इस उपन्यास की मुख्य कहानी है। उस समय हस्तशिल्प पर सरकार ने टैक्स लगाया। सरकारी संस्थाओं छोड़कर प्राइवेट संस्थाओं को इस टैक्स के घेरे में ले लिया गया। प्राइवेट संस्थाओं ने इसका विरोध किया। मैंने इस केस को लिया। इस संबंध में निर्णय लेने के लिए अशोक मेहता कमेटी का गठन किया गया। वह कमेटी कोलकाता से आई थी। कमेटी के आगे कानूनन दावा करने के लिए उद्योगों की तरफ से मुझे दायित्व दिया गया। इस काम के लिए मुझे कोलकाता में लगभग तीन महीने रहना पड़ा था। मैं ग्रेट ईस्टर्न होटल में ठहरा हुआ था। वहां के वातावरण ने मुझे जिंदगी को

चारों दिशाओं में फेंककर एक भिन्न-शैली का जीवन-यापन कर रहे मानव **को बचाने प्रेरणा दी।** वहीं पर मैंने उस समय 'अमावस्या का चाँद' उपन्यास लिखा। वहीं पर 'काउल' का जन्म हुआ। सच कहूँ तो फाइव स्टार होटल के उस परिवेश से 'माटी का मनुष्य' का बरजू जैसा पात्र कभी नहीं आ सकता था।

'काउल' नाम की एक संभावना है। मैंने जानबूझकर यह नाम दिया, जो किसी जाति और भौगोलिक सीमा से परे होगा। लोग **अपनी** निगाहों से उस काल्पनिक पात्र को देखें। इसलिए काउल केवल एकमात्र चरित्र नहीं है। वह एक इच्छा है। वह एक प्रेरित अभिलाषा है। (तथ्य सौजन्य: द टाइम्स ऑफ इंडिया/हमारा समय)

2.अमावस्या और चाँद: एक मुग्ध अनुभव:-

अमावस्या एक ऐसी तिथि है, उस रात को चंद्रमा नहीं दिखता है। यह चंद्र का भाग्य है। सौर-मंडल में **सूर्य, चंद्र, तारे, ग्रह, नक्षत्र सभी विज्ञान-सम्मत** गतिपथ पर चक्कर लगाते हैं, अमावस्या के दिन वे अपने पथ पर स्थिर हो जाते हैं इसलिए दुनिया के लोग उसे देख नहीं पाते। इतनी बलवती युक्ति का भी मनुष्य के आवेग और भाव-प्रवणता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। सूर्य पृथ्वी के चारों तरफ घूर्णन करता है **या पृथ्वी सूर्य के चारों** तरफ चक्कर लगाती है, यह तथ्य हजारों साल पहले प्रकाश में आ चुका हैं। अर्ध शतक पूर्व बैरिस्टर गोविंद दास ने अमावस्या तिथि में जो चंद्र-दर्शन करवाया था, वह आज तक ओडिया पाठकों को आहलादित करता है, पुलकित करता है। उस अमावस्या के चाँद की शीतल चांदनी में पाठकों को वही अनिर्वचनीय, अतुलनीय विमुग्ध अनुभूति होती है।

सन 1964 दिसंबर महीने की प्रथम अमावस्या तिथि की रात जो चाँद उगा था, आज उसे पचास साल से ज्यादा हो रहे हैं। तैंतीस संस्करणों में प्रकाशित इस उपन्यास ने ओड़िया साहित्य में एक सर्वकालीन रिकॉर्ड स्थापित किया हैं। जबकि साठ, सत्तर, अस्सी दशक के प्रकाशन संबन्धित अनेक असुविधा थी, ओड़िशा की साक्षरता दर और पुस्तक प्रचार-प्रसार नेटवर्क इत्यादि पर भी विचार करना होगा।

उपन्यासकार ने उपन्यास का नामकरण अमावस्या और चाँद जैसे दो परस्पर विरोधी शब्दों से किया है, उसकी आत्मा और उसके पात्रों की जीवन-शैली के अनुरूप कभी कुत्सित, घृण्य, कदाकार दृश्य प्रस्तुत होते हैं तो कभी ज्योत्सना-विधौत-चांदनी रात की तरह शीतल, कोमल, मधुर, स्वप्नमय, अविश्वसनीय आकर्षक दृश्य।

काउल इस उपन्यास का केंद्रीय चरित्र है। वह फिर इसका नायक भी है। ऐसे पात्र की परिकल्पना करने की पृष्ठभूमि में उपन्यासकार गोविंद दास ने हरमन हेस के प्रसिद्ध उपन्यास 'सिद्धार्थ' के प्रभाव को स्वीकार किया हैं। फिर उनका कहना हैं कि उन्होंने कोलकाता के पंच-सितारा होटल 'ग्रेट ईस्टर्न' में 'अमावस्या का चाँद' उपन्यास की रचना की। वहाँ पर 'माटी का मनुष्य' का बरजू जैसा पात्र के निर्माण की कोई संभावना नहीं थी।

यह बात सत्य है। उपन्यास का सारा वर्णन कोलकाता का है। पार्क स्ट्रीट, रेस-कोर्स, गंगा का तट, हावड़ा स्टेशन, चौरंगी, रेड लाइट एरिया, बाई जी का कोठा, ट्राम लाइन, चर्च के दृश्यों में पचास साल पुराना कोलकाता महानगर साफ नजर आता है।

पचास साल पहले के ओडिया उपन्यास की भाषा, रचना-शैली और संरचना की दृष्टि से 'अमावस्या का चाँद' पूरी तरह से अलग है। केवल अलग ही नहीं, वरन पूरी तरह से अभिनव है। उपन्यास के प्रथम परिच्छेद में पाप-पुण्य की एक विस्तृत और सूक्ष्म व्याख्या है**, इस**लिए उपन्यासकर ने पाटलिपुत्र के राजमहल और पात्रों के लिए शिष्य श्वेतांक और विशाल देव के प्रसंग का सहारा लिया है। इस प्रसंग की मंदिर की मुखशाला की तरह आवश्यकता थी। 'अमावस्या का चांद' उपन्यास में जितने पात्रों को पाठकों का सामना करना पड़ा है, वे सब प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से काउल से संपृक्त है। फिर वही काउल पाप-पुण्य के दोराहे पर खड़ा होकर एकाकी निसंग मनुष्य प्रतीत होने लगता है। इस **समाज द्वारा तैयार की गई पाप-पुण्य** की सीमा-रेखा के भीतर काउल उलझ जाता है और उसके पक्ष-विपक्ष में अपना मंतव्य देने के अधिकार खो देता है।

वास्तव में उपन्यास का अंत ही इसके प्रारंभिक अध्याय की कहानी है। उपन्यास समाप्त होते-होते काउल अदृश्य हो जाता है। अंत में मरणासन्न मनीषा काउल का इंतजार करते-करते **अनुरागी मन से उसके फोटो का आलिंगन करती** है और कामना करती है कि आखिरकर एक बार काउल उसके निर्जन कमरे में लौट आए, जहां मनीषा की पवित्र आत्मा मृदु प्रेम के हिल्लोल शैली के धूप से सुरभित परिवेश में निर्निमेष नेत्रों से अनंत काल के लिए उसकी प्रतीक्षा में है।

यहां से पुस्तक प्रारंभ होती है, "काउल, तुम्हें न किसी प्रकार की पीड़ा है और न ही किसी प्रकार का पश्चाताप। भाग्य के खिलाफ न तुम्हारा कोई विरोध है और न ही आत्मसमर्पण। विजय की   न कोई लालसा है और नहीं पराजेय का भय। तुम एक निर्विकार, निर्विछिन्न

पुरुष हो। तुम्हारे जीवन में हजारों आंधी-तूफान आने के बाद भी तुम बीथोवन की चौथी सिंफोनी की तरह निश्चल, शांत हो। ....”

काउल के लापता होने की इस प्रारम्भिक और अंतिम परिस्थिति का मध्यवर्ती इलाका काउल की चारण भूमि हैं। इसके भीतर पाठक देखते हैं, काउल के विलासमय जीवनचर्या की संक्षिप्त रूपरेखा। और बीच में देखते हैं, काउल के पूर्वजों की राजशाही जीवनशैली, उनकी प्राचुर्य धन-संपदा और उनके मनमौजी विलासी जीवन से अवक्षय होते जीर्ण-स्वरूप को।

उपन्यास पढ़ते समय ऐसा लगता है, गोविंद दास काउल को एक चरित्र भाव से नहीं, वरन् भिन्न-भिन्न प्रकार के कसौटी पत्थरों से घिसकर एक मुग्ध चेतना के उज्जवल अनुभवों की संरचना करते जा रहे हैं। इसलिए जो पाठक काउल को सुरा-सुंदरी, जुआ, रेस-कोर्स, झूठ, छल-कपट, कालाबाजारी की अंधी गली के भीतर देखते हैं, वही काउल अचानक पाठकों के सामने असीम त्याग, स्नेह, श्रद्धा, नीरव प्रेम और निस्वार्थ तपस्या जैसे सद्गुणों के साथ प्रकट होते हैं।

काउल की धुंधली छबि उसके व्यक्तित्त्व के कारण अविश्वसनीय हो जाती है, पाठकों के लिए अचरज की बात है। अंतिम फैसला नहीं ले पाने की असहायता के कारण पाठक छटपटाने लगता है, उसका स्वरूप एक बड़े प्रश्न में बदल जाता है।

उपन्यास की कहानी वैश्या नीरा से शुरू होती है। उपभोग की समस्त सामग्रियों से परिपूर्ण इस नीरा के शरीर का नक्शा जो कई पुरुषों को आकर्षित करने का सामर्थ्य रखता है, वहाँ यह स्वाभाविक है कि काउल के लिए वह रात्रि की रजनीगंधा बन सकती है। नीरा के साथ रात बिताकर उसे अपना प्राप्य देकर लौटाने के बाद उसके सानिध्य को रात के बुरे सपने की तरह वह नहीं भूल पाता है। काउल की सूक्ष्म अन्वेषण दृष्टि से नीरा को मुक्ति नहीं मिल पाती है।

नीरा से काउल को उसके किशोरावस्था के स्वपनभंग की कहानी पता चलती है। सुना है अर्द्धनिर्मित शरीर के प्रेम के प्रथम कदंब खिलने के समय का विषादपूर्ण नैराश्य। काउल ने इस लावण्यमयी रूप की छटा में बिजली की चमक पैदा करने नीरा में भाड़े के घर में रहने वाले एक गरीब बंगाली परिवार की लड़की निर्मला का अनुसंधान किया।

निर्मला से नीरा। बहुत ही लंबी कहानी। निर्मला टाइपिस्ट बनती है, शिक्षिका बनती है और बीच में सेल्स गर्ल के रूप में काम करती है। मगर कितनी मिथ्या और छलावे वाली ये

नौकरियाँ थी! सभी को नीरा का आकर्षक यौवन चाहिए। मनमोहक शरीर। नीरा खुद इस शरीर का सामर्थ्य देखकर विस्मित हो जाती है। इस शरीर के बदले नीरा प्रतिष्ठा, धन और भौतिक शरीर के सारे सुख हासिल कर लेती है। मगर अपने मातापिता को सामाजिक सम्मान और स्वीकृति नहीं दे पाती है।

एक वैश्या के माता-पिता होने के कारण उनके दुख, यंत्रणा, नैराश्य और हीन-भावना की कोई सीमा नहीं होती है।

काउल ने नीरा के साथ पांच-सितारा होटल में रात भले ही बिताई हो, मगर वह समाज में नीरा को फिर से प्रतिष्ठा दिलाते हैं। काउल की आर्थिक सहायता से नीरा गरीब और वैश्याओं के बच्चों के लिए एक आदर्श विद्यालय खोलती है। बुढ़ापे में नीरा के माता-पिता को नूतन समाज में एक स्निग्ध सूर्योदय दिखाई देता है। और उन्हें आत्म-सम्मान के साथ जीवन जीने का अधिकार मिल जाता है।

काउल के विडंबित किशोर जीवन की कहानी इस उपन्यास का दूसरा अध्याय है। मुंबई की सड़कों और फुटपाथ पर अखबार बेचकर जीवन-यापन करने वाला काउल आधुनिक व्यवसाय के कौशल के गूढ-रहस्य को सीख लेता है। यहां पर सलीम के सहयोग से जीवन सीखते हुए काउल का परिचय एक वैश्यालय की माया से हो जाता है। नर्क का जीवन जी रही इस महिला की प्रत्यक्ष सहायता करने के लिए काउल स्कूल और कॉलेज की पढ़ाई पूरी करता है। यहीं पर वह एक्सपोर्ट-इंपोर्ट के व्यवसाय की जटिल गणित भी सीखता है। यहीं पर काउल शेयर मार्केट, स्टॉक एक्सचेंज के सपने बुनना शुरू करता है। असीमित धन उपार्जन का सरल रास्ता और संक्षिप्त कर्म-सूची के रूप में वह इसे दिखता है। रास्ते के फुटपाथ से काउल ऊपर उठकर एक शीर्षस्थ उद्योगपति बन जाता है।

उपन्यास के परवर्ती तीसरे अध्याय में पाठकों का साक्षात्कार रेस-कोर्स के जुए, नशा में मदमस्त और उद्धत काउल से होता है। रेस-कोर्स में बाजी लगाकर बारंबार पराजित होने वाला काउल स्थविर और स्थितप्रज्ञ बना रहता है। इस जुए के नशे में सामायिक सहयोगी सुंदरी जैनी के कटाक्ष और उत्तेजित मंतव्य भी काउल को प्रभावित नहीं कर पाते। भयंकर आर्थिक क्षति झेलने के बाद जब काउल को विजय प्राप्ति का सुनिश्चित अवसर मिलता है। उस समय रेसकोर्स की बाजी लगाकर जीतने के सुनिश्चित अवसर का प्रत्याख्यान कर देता है। रेस-कोर्स के मैदान के एक परित्यक्त कोने में बड़ी यंत्रणा से छटपटाते एक असहाय बूढ़े की आर्त पुकार सुनकर वह गणित के सारे हिसाब-किताब को भूल जाता है। जब घोडे की

बुकिंग काउल के पास आती है तो वह रोग-ग्रस्त बूढ़े की चिकित्सा के लिए चला जाता है। वह घोड़ा रेस कोर्स में विजयी हो जाता है। काउल निश्चिंत अर्थ प्राप्ति से वंचित होकर बहुत सारे पैसे हार कर भी सेवाभाव, जीवन-रक्षा और मनुष्यता का अतुलनीय अविश्वसनीय उदाहरण प्रस्तुत करता है।

अगले अध्याय में काउल पागल होकर सुंदरी रूपसी नृत्यांगना बाई जी के पास जाता है। बाई जी के साथ शारीरिक संबंध बनाने के लिए लालायित काउल एक कामासक्त दुर्बल पुरुष के रूप में सामने आता है, मगर बहुत कम समय के लिए। बाईजी एक विवाहिता विधवा और एक बच्ची की मां है-यह बात पता चलने पर काउल का व्यक्तित्व अचानक रूपांतरित हो जाता है। नारीत्व और मातृत्व दोनों के प्रति सम्मान और कर्तव्य की प्रशंसनीय पदक्षेप काउल के व्यक्तित्व की उज्जवल दिशा को पाठकों के समक्ष रखता है।

इसी तरह फ़्लैश खेल में जीतने-हारने के दौरान काउल निर्वाचित होकर शहर के नगरपालिका का चेयरमैन बन जाता है। सारे शहर वाले काउल के व्यक्तित्व का आकलन कर उसे बड़ी-बड़ी उच्च पदवियों पर आसीन करते हैं, जिसे काउल कपटपूर्ण और मिथ्या समझता है। उसके लिए यह सिंहासन कांटो से भरा होता है। अपनी कलंकित जीवनधारा के सामने वह अत्यंत ही मलिन और क्षुद्र महसूस करता है। तुरंत ही जनता के सामने वह अपने मुखौटे को खोल देता है। निर्वाचन की जीत, शासन का प्रलोभन और शक्ति का प्रबल आकर्षण उसे क्षणिक और तुच्छ प्रतीत होते हैं। पीछे रह जाते है उद्धत अंहकार, शासन के प्रति कर्तव्य, शक्ति का लोभ विजयोल्लास और जनता की जय-जयकार ध्वनि।

बहुत दृष्टिकोण से उपन्यास का अंतिम अध्याय असाधारण और अनन्य है। यहां काउल से मुलाकात करते समय मन संवेदना से आर्द्र हो जाता है। त्याग, तितिक्षा, सेवा, मनुष्यता, प्रेम विश्वास और अभिमान सभी भीगकर काउल के प्रेम की विफलता पाठकों को उसकी तरफ अहैतुक भाव से आकर्षित करते हैं। एक जीवन को निश्चित मृत्यु के द्वार से लौटाकर लाने का गौरव काउल को महिमामंडित करता है, वही प्रेम की चरम विफलता पाठकों के मन में दया मिश्रित भाव पैदा करती है।

कैंसर पीड़ित मनीषा की चिकित्सा के लिए काउल उसे चेन्नई से स्विट्ज़रलैंड के ड्यूरीक शहर ले जाता है। मृत्यु का शीतल स्पर्श अनुभव करने वाली मनीषा ऑपरेशन के बाद पुनर्जीवन प्राप्त करती है, केवल काउल की विपुल आर्थिक सहायता और संवेदना के कारण। चिकित्साधीन कैंसर पीड़ित मनीषा के प्रेम में पड़कर असहाय काउल के मन में प्रचुर प्रत्याशा

जाग उठती है। इधर नारी जीवन का सर्वस्व निशर्त काउल के पांवों तले समर्पण करने के लिए व्याकुल और व्यथित मनीषा के भीतर सलिता भभकने लगती है। मगर मनीषा भारतीय नारी है। लज्जा, संकोच, संभ्रमता और विनम्रता की प्रतिमूर्ति है वह। काउल के प्रति निशर्त प्रेम की सांद्रता प्रगाढ़ होने पर वह चुपचाप काउल के सामान्य इशारे का इंतजार करती है।

ईर्ष्या को छोड़ देने से प्रेम संभव नहीं है।

इसलिए मनीषा काउल के हृदय में उसके प्रति आकर्षण को परखने के लिए देसाई के साथ पूर्व संबंध और उसके साथ विवाह होने का एक कृत्रिम वातावरण पैदा करती है। मगर काउल नहीं समझ पाता है। जीवन का सर्वस्व त्याग कर नि:स्व काउल अंत में मनीषा के मिथ्या-प्रेम के खातिर अतुलनीय त्याग दिखाकर शहर से गायब हो जाता है। काउल के इस प्रकार के आचरण से मर्माहत होकर मनीषा अंत में मृत्यु की गोद में समा जाती है। मगर वह एक पत्र लिखकर करुण निवेदन करती है काउल को उसकी कोठरी में पर्दापण करने हेतु अनंत ऊष्म आमंत्रण देकर। यहीं पर उपन्यास 'अमावस्या का चांद' समाप्त होता है। इस उपन्यास का अंतिम बिन्दु है- हर रात आकाश में चंद्रमा रहता है। केवल अमावस्या को उसे नहीं देखा जा सकता है। मगर बैरिस्टर गोविंद दास केवल ओड़िया पाठकों के लिए यह दुर्लभ अवसर प्रदान किया है। आप भी उपन्यास को पढ़कर अमावस्या की घनी अंधेरी रात में चंद्र-दर्शन का स्वर्गिक आनंद और शाश्वत अनुभूति प्राप्त कर सकते हैं।

-डॉ॰ प्रसन्न कुमार बराल,
संपादक-गोधूलि लग्न
तालचेर

1.

काउल, तुम्हें न किसी प्रकार की पीड़ा है और न ही किसी प्रकार का पश्चाताप। भाग्य के खिलाफ न तुम्हारा कोई विरोध है और न ही आत्मसमर्पण। विजय की न कोई लालसा है और नहीं पराजेय का भय। तुम एक निर्विकार, निर्विछिन्न पुरुष हो। तुम्हारे जीवन में हजारों आंधी-तूफान आने के बाद भी तुम बीथोवन की चौथी सिंफोनी की तरह निश्चल, शांत हो।

तुम्हारा जीवन अनंत पापों की अंतहीन कहानी है। कदम-कदम पर तुमने धर्म और समाज के नीति-नियमों को तोड़ा है। तुमने बाइबल के सर्मन, कुरान की आयतों और गीता के श्लोकों की अवहेलना की है। तुम्हारी कहानी लिखने पर लोग तुम्हारी निंदा करेंगे, सभी तुम्हें **पक्षाघात** का रोगी कहकर तुम्हारी आलोचना करेंगे। वे कहेंगे कि कहानी का नायक पथभ्रष्ट, चरित्रहीन और लंपट है, वह हमारे समाज को कलंकित करेगा, जिससे हमारे समाज की बनी-बनाई परंपराएं बर्बाद हो जाएगी और भविष्य की विचारधारा कलुषित होगी।

फिर भी मैं तुम्हारी कहानी लिखने जा रहा हूं क्योंकि तुम्हारे चरित्र में कलंक लगने के बावजूद भी एक बलिष्ठ मर्यादा जिंदा है। तुमने अपने जीवन की घुप्प अंधेरी कोठरी में एक दीपक की कोमल आभा प्रज्ज्वलित की है। जो भी कोई तुम्हारे कलंक की तरफ देखेगा, वह उस उजाले को नजरंदाज नहीं कर पाएगा। लोग जानते हैं कि दूसरों को पतित कहना इतना सहज नहीं है। व्यक्ति की परिधि की समीक्षा भी करना अत्यंत ही जटिल है। चरित्रहीनता के भीतर महत्वपूर्ण बात हो सकती है। पाप के भीतर भी गौरव की बात हो सकती है।

तुम्हारे जीवन में न तो किसी प्रकार की विडम्बना है, न किसी प्रकार की प्रताड़ना और पाखंड। तुम मौत की तरह अटल सत्य हो, तुम अंधकार की तरह सदैव चिरंजीवी हो।

मगर लोग कहेंगे, 'हो सकता है यह सत्य हो। ' अथवा 'हो सकता है यह चिरंजीवी हो। '; मगर श्मशान सत्य है, इसका मतलब यह नहीं है इसका स्थान मंदिर ले सकता है। हमारे पवित्र, शिव-सुंदर समाज के प्रांगण में ऐसे **राक्षस**, पापी लोगों का स्थान कहां है? कुष्ठ रोगी की तरह गांव के अंतिम छोर पर उनका निवास स्थान होता है।

आदम यानी पहला पुरुष न तो पापी था और न ही पुण्यात्मा। जन्म से हर आदमी निष्पाप होता है। समाज की तत्कालीन परिस्थितियां उसे पापी या पुण्यात्मा बना देती है। कुछ लोग ऐसे भी होते हैं, जिन पर कई कारणों से तत्कालीन समाज उन पर पूरी तरह से हावी नहीं हो पाता है। वे स्वयं को समाज और धर्म से अलग मानते हैं। उन में से पैदा होते हैं ईसा, मोहम्मद, गांधी, सुकरात आदि। वे समाज को अपनी तरफ खींचने का प्रयास करते हैं, अंत में वे सफल भी हो जाते हैं। समाज उनकी ओर आकर्षित होता है, उनके मूल्य-बोध को ग्रहण

कर अपने भीतर परिवर्तन लाते हैं। वे बनते हैं महात्मा। यदि समाज उनके नियंत्रण में नहीं आता है या तुम उनके मूल्य-बोध को स्वीकार नहीं करते हो तो उनके रथ के पहिए के नीचे तुम कुचल दिए जाओगे। तुम कहलाओगे भ्रष्ट, पापी, विपथगामी। लक्ष्मण-रेखा की तरह समाज भी एक निषिद्ध रेखा खींचता है। जिसका उल्लंघन करना पाप है तो पालन करना पुण्य। पाप-पुण्य का विचार बस उस सीमा के प्रति अपना सम्मान दिखाना है। अंगूर खाओ, स्वास्थ्य के लिए अच्छे हैं;मगर इन अंगूरों के रस का क्वाथ गिलास में लेकर पियोगे तो तुम्हें मद्यपान करने वाला कहा जाएगा। एक नारी का उपभोग करोगे तो समाज तुम्हें उसका पति कहेगा, मगर ज्यादा नारियों का उपभोग करोगे तो समाज तुम्हें लंपट कहेगा। भविष्य में अपनी आर्थिक उन्नति के लिए जगन्नाथ जी के सामने धन बांटोगे तो समाज कहेगा धार्मिक, मगर रेस-कोर्स में पैसा कमाने के लिए लॉटरी खरीदोगे तो लोग कहेंगे जुआरी, गैंबलर।

एक दिन गुरु रत्नाकर ने अपने शिष्य श्वेतांक और विशाल देव से पूछा, “आपने दोनों को देखा है। अब बताओ, तुम्हारे विचार से कौन पापी है बीजगुप्त या कुमार गिरि?”

श्वेतांक ने कहा, “महाप्रभु! बीजगुप्त तो भगवान का अवतार है। संसार में वह शांति और मानवता की जीती-जागती प्रतिमूर्ति हैं। उनका हृदय विशाल है, उनमें मानवता कूट-कूटकर भरी है और उनका त्याग अतुलनीय है। मगर कुमारगिरि? वह तो स्वार्थी पशु की तरह अपना मतलब निकालने के लिए सारी दुनिया को धोखा दे सकते हैं। अपने तथाकथित स्वगिर्क उपभोग के लिए प्रकृति के नियमों की अवहेलना कर सकते हैं। उनका सारा मनुष्य जीवन बीत गया है अपनी नैसर्गिक कामनाओं को वश में करते-करते। समय और मौकापरस्ती का कैसा अपव्यवहार है यह! जिसका न तो कोई गौरव है और न ही कोई महत्व। वह पापी के सिवाय और क्या है? हमारे बीजगुप्त के सामने अति-तुच्छ है वह!

उस प्रश्न का उत्तर विशालदेव ने इस प्रकार दिया। उसने कहा, “महाप्रभु! योगी कुमारगिरि अदम्य और महान है। उन्होंने अपनी कामवासना, मायामोह पर विजय पाई है। जो किसी भी व्यक्ति को संकुचित करती है, पथ-भ्रष्ट करती है, उनका कुमारगिरि ने दमन किया है। उनकी विद्वता और आध्यात्मिक शक्तियों के बारे में तो कहना ही क्या! और रही बात बीजगुप्त की-वह तो काम-क्रीडा का कीड़ा है, उच्छृंखल भोग-विलास का पुतला है। उसका हृदय, उसकी मनुष्यता और उसके तथाकथित त्याग सभी इन पार्थिव सुखों के लिए नियोजित है। पाप का एक जीवंत उदाहरण है यह म्लेच्छ बीजगुप्त!

पाटलिपुत्र में गुरु रत्नाकर के दो शिष्य थे, श्वेतांक और विशालदेव। गुरुकुल में दोनों की शिक्षा पूरी होने के बाद उन्होंने पूछा, "गुरुदेव! सभी विषयों पर हमने ज्ञान हासिल किया है। मगर एक बात बाकी रह गई है, वह है-पाप क्या है?पुण्य क्या है? इन दोनों में अंतर क्या है?"

गुरु ने उत्तर दिया, "यह एक जटिल प्रश्न है। मैंने अनेक बार इसकी व्याख्या करने कोशिश की, मगर कभी भी सही उत्तर नहीं दे पाया। इसके लिए अपना व्यक्तिगत अनुभव होना चाहिए। मैं तुम दोनों को अपने पुराने शिष्यों के पास भेज रहा हूं। दोनों के चरित्र पूरी तरह विपरीत हैं। पहले उन पर नजर रखकर अपना तजुर्बा हासिल करो और फिर आकर मुझे बताओ, कौन पापी है?और कौन पुण्यात्मा?"

श्वेतांक पाटलिपुत्र के युवा महाराज बीजगुप्त के महल में गए और विशालदेव प्रतिष्ठित योगी कुमारगिरि के आश्रम में।

बीजगुप्त पाटलिपुत्र की स्वनाम-धन्य नर्तकी चित्रलेखा के संगीत-नृत्य में डूबे हुए थे। चित्रलेखा के वीणा की तारों की झंकार, घुंघरू की छमछमाहट से सारा महल भर गया था और उसका सम्पूर्ण हृदय भी। चित्रलेखा असीम बुद्धिमती सुदक्ष और अतुलनीय सुंदरी थी। उसके एक इशारे में पाटलिपुत्र का जन-धन उसके पैरों के तले लौटने लगता था। उसकी कला की प्रसिद्धि देश-देशांतर में फैल चुकी थी। वह भी बीजगुप्त की शिक्षा, संस्कृति और सौंदर्य पर मुग्ध थी। पहले बीजगुप्त चित्रलेखा का मानसिक और शारीरिक मिलन सात्विक स्तर पर हुआ। धीरे-धीरे यह मिलन सम्यक, संपूर्ण और गंभीर होता चला गया। दोनों की आत्माएं, दोनों के मन और दोनों के शरीर अविच्छेद्य हो गए।

बीजगुप्त की शादी के लिए अनेक प्रस्ताव राजघरानों से आए। मगर बीजगुप्त ने किसी को भी स्वीकार नहीं किया। किंतु पाटलिपुत्र के तत्कालीन महाराज की राजकुमारी यशोधरा के साथ विवाह के प्रस्ताव को टाल न सके क्योंकि यह प्रस्ताव स्वयं महाराज ने लाया था।

एक शाम को बीजगुप्त के महल में पाटलिपुत्र के योगीराज कुमारगिरि पधारे। उनकी आंखों की ज्योति, शरीर की आभा सभा-स्थल को आलोकित कर रही थी। यौवन ब्रह्मचर्य से उद्दीप्त था। सभी सभासदों और स्वयं महाराज ने दंडवत होकर उन्हें प्रणाम किया। सजी-धजी चित्रलेखा नृत्य के लिए तैयार थी। उसके बालों में लगी फूलों की माला वक्षस्थल तक झूल रही थी, जुड़ा खुला हुआ था, आंखों में काजल डाली हुई थी, अधरों की लालिमा दुनिया की सारी मर्दानगी को चुनौती दे रही थी। पांव में नूपुर की मृदुध्वनि आमंत्रित कर रही थी।

सभासदों के अभिवादन करने के बाद चित्रलेखा आगे आई और हाथ जोड़कर नमस्कार करते हुए कहने लगी, "योगीश्रेष्ठ कुमारगिरि को नर्तकी चित्रलेखा का प्रणाम! "

कुमारगिरि ने उत्तर दिया, "इस अंधकार को आलोक का आशीर्वाद! "

"**आलोक के संस्पर्श से अंधकार प्रकट हो**, परंतु अंधकार की छाया में आलोक कहीं विलुप्त न हो जाए। " चित्रलेखा ने कहा।

कुमारगिरि ने कहा, "गहन आत्मविश्वास का भ्रम भी सदैव सम्माननीय होता है। मगर यह आत्मविश्वास **उचित** होने से मानव अतिमानव बन सकता है। भगवान का आश्रय लो, नर्तकी! शुद्ध हो जाओगी, निष्पाप बन जाओगी। "

चित्रलेखा ने उत्तर दिया, "जिस पर दाग है, उसे धोना आवश्यक है। मगर जो पवित्र- अपवित्र की सीमा से परे है, उसके लिए पाप-पुण्य के विचार व्यर्थ है। उसके लिए भगवान की स्थिति भी निष्प्रयोजन है। अपने स्वार्थ-सिद्धि के लिए मनुष्य ने भगवान की सृष्टि की है। "

कुमारगिरि और चित्रलेखा की इस वार्तालाप को सभासद ध्यानपूर्वक सुन रहे थे।

कुमारगिरि बेचैनी अनुभव करने लगे, उनकी आंखे लाल हो गई, नाड़ियों की गति तेज हो गई, स्नायु फड़कने लगे। गंभीर स्वर में वह कहने लगे, "यदि सभासद चाहते हैं तो मैं अभी भगवान के अस्तित्व का प्रमाण दे सकता हूं। "

सभा में हलचल-सी मच गई। सभी निस्तब्ध होकर कुमारगिरि की ओर देखने लगे। चित्रलेखा के अहंकारी बडबोलेपन के लिए सहम से गए।

कुमारगिरि ने आंखें बंद कर ली। कक्ष में अंधेरा किया गया। योगी श्रेष्ठ ध्यानस्थ हो गए। कुछ समय नीरवता में व्यतीत हो गया। धीरे-धीरे चारों तरफ से आँधी-तूफान की गर्जना सुनाई देने लगी। ऐसा लगने लगा मानो एक भयंकर तूफान कमरे के भीतर प्रवेश कर रहा हो। फिर अचानक दिखाई देने लगी, बीजगुप्त के सिंहासन के ऊपर लपलपाती एक विशाल अग्नि-शिखा। कुछ समय तक यह अग्नि-शिखा कुमारगिरि की साधना की पराकाष्ठा और अस्तित्व प्रतिपादित करती रही। इसके बाद शिखा बुझ गई।

कमरे में फिर रोशनी कर दी गई। सभासदों ने कुमारगिरि के चरणों में गिरकर प्रणाम किया। भगवान के दर्शन कर वे कृतार्थ अनुभव करने लगे।

कुमारगिरि ने सभासदों से प्रश्न किया, “क्या आपको भगवान के अस्तित्व का प्रमाण मिला?”

समवेत स्वर में उपस्थित जनता ने स्वीकार किया। मगर चित्रलेखा और महामंत्री चाणक्य ने इसे स्वीकार नहीं किया। वे कहने लगे, “उन्होंने ऐसा कोई दृश्य नहीं देखा। ”

आखिरकार कुमारगिरि को इस बात को स्वीकार करना पड़ा कि इन दोनों का मानसिक शक्ति प्रखर और आत्मविश्वास दृढ़ है। जिसके फलस्वरूप उन्होंने उसकी इस मानसिक शक्ति की प्रक्रिया को अनदेखा किया।

सारे सभासद निरुत्साहित हो गए। मगर चित्रलेखा का उत्साह कम नहीं हुआ। कुमारगिरि के दंभ, सौरभ, रूप और ज्ञान से वह अभिभूत हो गई। उसके मन में आया कि वह कुमारगिरि के पास जाकर योग-साधना सीखेगी और ऐसे रूपवान, गुणवान और तरुण योगी कुमारगिरि को वश में करेगी। वह योग-साधना पर विजय पाएगी और यह प्रमाणित करेगी कि वह भी एकाग्रता के बल पर कुमारगिरि के तथाकथित भगवान को प्राप्त कर सकती है। इसके अलावा, बीजगुप्त को यशोधरा से शादी करने के लिए मुक्त कर देगी, ताकि वह अपने सांसारिक दायित्वों का निर्वहन कर सके। समाज और राज्य में बीजगुप्त को सम्मानित पद मिल सके।

बीजगुप्त का महल छोड़कर चित्रलेखा कुमारगिरि के आश्रम में योग साधना सीखने के लिए चली गई।

इसी बीच, यशोधरा श्वेतांक की ओर आकृष्ट हो जाती है, उसके ज्ञान-रूप के कारण। उसके आगे प्रेम निवेदन करती है, श्वेतांक भी उसे स्वीकार करते हैं। मगर महाराज बीच में रुकावट बन गए। वह कहने लगे, “सब-कुछ ठीक है, रूप है, रंग है, मगर श्वेतांक की आर्थिक स्थिति सही नहीं है, इसलिए यशोधरा का विवाह श्वेतांक के साथ असंभव है। ”

नशेड़ी, लंपट बीजगुप्त का मन अस्थिर हो गया। चित्रलेखा के बिना उन्हें सारा राज्य अंधकारमय लगने लगा। उन्होंने निश्चय किया कि अपना सारा राज्य श्वेतांक को देकर वह निर्वासन ले लेंगे। श्वेतांक देश का शासन संभालेगा, उसे प्रतिष्ठा मिलेगी और यशोधरा के साथ उसकी शादी हो सकेगी। वह यशोधरा के प्रति अपना कर्तव्य भी निभा पायेगा।

एक दिन सभासदों को बुलाकर बीजगुप्त ने अपना निर्णय सुनाया। अपना सम्पूर्ण साम्राज्य यशोधरा और श्वेतांक को समर्पित कर दिया। उधर चित्रलेखा के रूप ने कुमारगिरि को स्खलित कर दिया, उनकी एकाग्रता नष्ट हो गई और उनका योग- भ्रष्ट होने लगा।

कुमारगिरि ने एक दिन अचानक चित्रलेखा के सामने अपना मन्तव्य प्रकट किया और उसके साथ शारीरिक-संसर्ग से अपने को नहीं बचा पाए। चित्रलेखा ने अनिच्छापूर्वक उस रात अपने आपको कुमारगिरि की अतृप्त भूख के पांवों तले बिछा दिया।

उस दिन योगी ने चित्रलेखा का शारीरिक उपभोग किया, मगर वह चित्रलेखा की नजरों में हमेशा-हमेशा के लिए गिर गया। मन-ही-मन चित्रलेखा अपने आपसे घृणा करने लगी क्योंकि उसके कारण एक साधक को अपनी साधना से भ्रष्ट होना पड़ा। वह योगी के आत्म-नियंत्रण की कमी और अपनी गुप्त इच्छा प्रकट करने के लिए उनसे नफरत करने लगी। उसी रात चित्रलेखा ने कुमारगिरि का आश्रम छोड़ दिया और बीजगुप्त के पास चली गई। वह उन्हें प्रणाम कर कहने लगी, "बीजगुप्त! मैं तुम्हारे चरणों में लौट आई हूँ। "

"चित्रलेखा, तुम लौट आई हो सो तो ठीक है, मगर अब बहुत देर हो गई। अब मेरे पास राज्य नहीं है, धन-दौलत नहीं है, मान-सम्मान नहीं है। तुम्हारी सेवा-सुश्रुषा के के लिए भी मेरे पास कुछ नहीं है। " बीजगुप्त ने कहा।

"बीजगुप्त! मेरे पास धन की कोई कमी नहीं है। बस, एक ही अभाव है जो केवल आप उसे दूर कर सकते हो। मैं एक ऐसे मनुष्य को चाहती हूं। चाहे वह कुरूप हो, निर्धन हो, गौरवहीन हो- मगर वह बीजगुप्त होना चाहिए। "

चित्रलेखा ने अपनी सारी संपत्ति और दुनियावी रिश्तों का परित्याग कर दिया।

बीजगुप्त मुक्त हो गया तो चित्रलेखा भी मुक्त हो गई। दोनों उस दिन प्रभाती सूर्य की दिशा की ओर बढ़ते चले गए।

बीजगुप्त और कुमारगिरि के संदर्भ में गुरुदेव ने प्रश्न किया, "पाप क्या है?और पुण्य क्या है?"

विषय का उपसंहार करते हुए गुरुदेव ने कहा, "पाप और पुण्य केवल मानसिक प्रक्रिया का परिणाम है। व्यक्ति के सोचने का ढंग है। "

साधारण दृष्टिकोण से बीजगुप्त एक पापी है, मगर उसकी उन्नत मानसिकता योगी कुमारगिरि की साधना को पराजित कर देती है।

व्यक्ति की समीक्षा के लिए तत्कालीन मूल्यबोध की सीमा ही पर्याप्त नहीं है। युगों-युगों से व्यक्ति की समीक्षा उसकी मनुष्यता के जरिए की जाती है।

और काउल मद्यप, लंपट, भ्रष्ट, चरित्रहीन भले ही है;मगर उसकी महान मानवता के सामने ये सारे कलंक निष्प्रभ गौण हो जाते हैं।

****

प्रिय काउल,

तुम्हारी आज तक कोई खोज-खबर नहीं है।

तुम्हें बहुत खोजा। दिल्ली, मुंबई, मद्रास चारों तरफ खोज लिया। जितने ठिकाने याद आए सबजगह। हाँग-काँग, लंदन, वियना में तुम्हारे दोस्तों को भी पत्र लिखा, परंतु कहीं पर तुम्हारा पता नहीं चला। अखबारों में तुम्हारा फोटो छपवाया। तुम्हारे व्यापारी मित्र भी तुम्हारे बारे में कुछ नहीं बता पाए। तुम कहां पर हो ?यह जान ना अब संभव नहीं है। यह कहते हुए अत्यंत कष्ट हो रहा है कि तुम जिंदा हो भी या नहीं, यह भी पता नहीं है।

मेरे पास तुम्हारी एक अमानत है। मनीषा की अंतिम चिट्ठी जो उसने तुम्हारे लिए लिखी थी। अब इसका क्या करूं, कुछ समझ नहीं पा रहा हूं। यह कोई कोरी चिट्ठी नहीं है, यह जिगर का खून है। तुम्हारी मनीषा ने नारीत्व के गौरव की, सौरभ की और जिस पर किसी को गर्व होता है, उसके अर्घ्य से तुम्हारी जीवनबेदी के नीचे त्यागी गौरीशंकर की सृष्टि की है। पता नहीं, किस अशुभ घड़ी में तुमने उसे अपना बनाया था, उसका परिचय इतिहास के पन्नों में नहीं रहेगा। उसके लिए कोई ताजमहल नहीं बनाएगा। उसकी जरूरत भी नहीं है उसे। वह स्वयं महाताजमहल है। वह ताजमहल पत्थर का नहीं है, जिसे काल क्षय कर देगा। उसने आँसू, दीर्घश्वास और प्राणों की आहूति देकर उसकी सृष्टि की है। वह इसी कारण त्रिकाल-विजयी, सनातन, मृत्युंजयी और शाश्वत है।

काउल, कभी वक्त मिले तो मनीषा की कोठरी में जाना। वह स्थान किसी मंदिर या मस्जिद से ज्यादा पवित्र है, ज्यादा महान है। शायद तुम्हें पता चल जाएगा कि तुम्हारे दर्शन पाने के लिए कोई क्षुब्ध, अशांत आत्मा घूमती फिर रही है, तुम्हारे स्पर्श के लिए। तुम अवहेलना मत करना, काउल! यही है तुम्हारे प्रति मेरा महत्वपूर्ण दायित्व।

2.

झन् न् न् न्

सिरहाने के पास रखे छोटे टेबल से अचानक कोई सामान गिर गया। शायद कोई बोतल होगी, नहीं तो कांच का गिलास होगा। टेबल-लैंप का नायलॉन पर्दा कांप उठा। गोल्ड एंब्रॉयडरी वाला ड्रापिंग थोड़ा-सा हिल गया। दीवार पर ऑयल पेंटिंग, टेबल पर बाइबल, कोने में रेडियोग्राम सभी हिल उठे। सुबह की निस्तब्धता के शांत वक्ष-स्थल पर पल भर के लिए हल्की-सी हलचल पैदा हो गई। काउल की आंखे खुल गई।

रात विदा ले रही थी। हाथ जोड़कर अनुनय-विनय करते हुए कह रही थी, "जा रही हूं, बंधु! मगर भूलना नहीं, फिर आऊंगी शरीर और मन की अनुभूतियां लेकर। मेरे अंधेरे सीने में तुम्हारी शून्यता फिर से भर दूंगी। अपने अंतिम अणुओं से भर दूँगी तुम्हारा विक्षुब्ध हृदय। तुम्हारी आत्मा संतुष्ट होगी-तुम्हारे शरीर को सुकून मिलेगा। "

इस आवाज के स्रोत का पता करने के लिए मिस्टर काउल बिस्तर के गद्दे से नीचे की ओर झुक गए। उसके नंगे शरीर पर ओढा हुआ आवरण छाती से नीचे खिसक गया।

झनात् .... । यह आवाज किसी वस्तु के टकराने से पैदा हुई थी। उस आवाज को जीवन मिला और कुछ पल के लिए अपना अस्तित्व दर्शाते हुए समय की अनंत गोद में लीन हो गई। संगमरमर के फर्श पर बिखरी पड़े थे कांच के छोटे-छोटे टुकड़े-अतीत की सृष्टि, प्रस्थिति और विलय के प्रमाण के तौर पर। मिस्टर काउल सोचने लगा कि यह पल, यह कल्लोल समय के अतल गर्भ में समा गया है, जिसका पुनर्जन्म और संभव नहीं है। इस पल के तिरोधान का प्रत्यावर्तन भी संभव नहीं है।

शायद फर्श पर कुछ व्हिस्की गिर गई थी, चौकोर सफेद-काले संगमरमर के चौहदी का सहारे। बिस्तर पर लेटे-लेटे अंगुली से फर्श पर गिरे कांच के टुकड़ों और व्हिस्की को अन्यमनस्क होकर जमा कर रहे थे। चादर खिसककर उनके पास आ गई। मिस नीरा की नींद टूट गई। आंखें खोलकर कमरे के चारों तरफ प्रस्थिति का जायजा लेने लगी। यह प्रभात, यह परिसर, यह काउल। पिछली रात का संक्षिप्त इतिहास उसे याद आ गया। अपने शरीर की तरफ कुछ समय के लिए देखकर पास में पड़ी परफ्यूम से अपनी छाती पर स्प्रे किया। करवट बदलकर मिस्टर काउल की पीठ पर स्वयं को चिपका कर कोमल स्वर में कहने लगी, "डार्लिंग! "

मिस्टर काउल कांच के टुकड़ों को लेकर फर्श पर बहती हुई व्हिस्की को रोकने के लिए बांध बना रहे थे। कांच के टुकड़ों की तेज धार से उनकी उंगली से खून निकल कर व्हिस्की के साथ मिलकर लाल हो जा रहा था। बीच-बीच में काँच के इस बांध के नीचे से व्हिस्की की

धारा बहकर फर्श के दूसरी तरफ जा रही थी। बांध की सीमा को मिस्टर काउल बढ़ाते जा रहे थे। पर्दे के भीतर से छनकर प्रभाती आलोक कमरे में उजियारा करने लगा था।

मिस नीरा काउल को पीछे से कसकर आलिंगन करते हुए उसके चेहरे पर हाथ फेरते हुए उच्च स्वर में कहने लगी, “डार्लिंग ! ”

मिस्टर काउल ने शांत स्वर में उत्तर दिया, “यस! ”

“सुबह हो गई है। ”

“यस। ”

“तो जाने के लिए तैयार होना पड़ेगा। ”

“हूँ। ”

पास वाले सोफे पर बिछे पड़े थे उसकी नायलॉन की साड़ी, फुलानेल का ब्लाउज, सिल्क का साया आदि। मिस्टर काउल के ड्रेसिंग गाउन को नीचे से उठाकर मिस नीरा ने अपना शरीर ढक लिया और प्रसाधन के लिए बाथरूम में चली गई।

काउल बांध बनाने के इस प्रयास में आहत होते जा रहे थे। उनकी उंगली के विभिन्न जगहों से खून रिस रहा था। व्हिस्की के स्पर्श से क्षत उंगली में हल्की-हल्की जलन हो रही थी। हारकर उन्होंने इस काम को छोड़ दिया और अपने शरीर पर ओढ़ी हुई चादर से उंगली को जोर से दबा दिया। किसी बच्चे के हस्त अंकित चित्र की तरह खून के दाग सफेद चादर पर दिखाई दे रहे थे। अलग-अलग दिशा में दबाकर उंगली के खून से उस चित्र को वह पूरा कर रहे थे। वह चित्र ऐसे दिखाई दे रहा था मानो मॉडर्न आर्ट की कोई डिजाइन हो। अंत में उंगली का रक्त-स्राव बंद हो गया था।

टेबल लैंप के पास रखी किताब को उठाकर वह बिस्तर पर चित्त होकर लेट गए। मिस नीरा के तकिए को अपने तकिए पर रखकर उसे ऊंचा बना दिया। पीठ के बल पर सहारा लेकर वह मार्क ट्वेन की किताब “मृत्य-लोक की चिट्ठी” पढ़ने लगे। मृत्य-लोक का अभिशप्त ‘शैतान’ ने स्वर्ग के माइकल और गबराल के नाम पर मनुष्य की प्रकृति और धरती की अवस्था के बारे में वर्णन करते हुए एक चिट्ठी लिखी। इस चिट्ठी में भगवान, समाज, मनुष्य, धर्म आदि का उपहास किया गया है, उनकी कटु समालोचना की गई है। किताब के संपादक ने लिखा है, जीवन के अंतिम दिनों में मार्क ट्वेन का दर्शन पूर्ण निराशावादी था। समाज और संसार के

प्रति उन्हें नफरत हो गई थी। वह मनुष्य जाति को “ड़ेम्ड ह्यूमन रेस” कहा करते थे। उनके जीवन के अंतिम काल को उनकी शारीरिक व्याधि, घोर दरिद्रता, मानसिक जंजाल ने अंधकारमय बना दिया। सृष्टा, धर्म और मानव का उपहास करते हुए यह पुस्तक उन्होंने लिखी थी। उनकी लड़की कलारा क्लैम ने कई दिनों तक इस किताब को छुपा कर रखा था। फिलहाल ही अमेरिका से इसका प्रकाशन हुआ है। किसी अमेरिकन मित्र ने काउल को यह पुस्तक उपहार में दी थी।

मिस नीरा बाथरुम से लौट आई थी। ताजे खिले गुलाब की तरह वह लग रही थी। खुले बालों को ऊपर उठाते हुए गुच्छा बनाकर नेट के भीतर उसने सजा दिया। आंखों से काजल-रेखा बाहर थोड़ी-सी ऊपर की ओर निकल कर अर्धचंद्र की तरह खिंच गई थी। होठों पर गुलाबी लिपस्टिक, भरे-भरे गालों पर ‘रोज पाउडर’ की लालिमा, पतले ब्लाउज के भीतर ब्रेसियर के स्ट्रैप साफ-साफ बाहर दिखाई पड़ रहे थे। रात की तुलना में कुछ अधिक दीर्घ और चौड़ी बनी भौहें बड़ी-बड़ी आंखों का अवगुंठन बन रही थी। सारा शरीर इत्र से महक रहा था। काउल पढ़ रहे थे “शैतान की चिट्ठी”। जिसमें लिखा हुआ था-“यह धरती एक विचित्र, असाधारण और अचरज भरी जगह है। यहां के आदमी पागल है, अन्य पशु भी पागल है, सारी दुनिया पागल है, खुद प्रकृति भी पागल हैं। ”

“मनुष्य अगर बहुत बड़ा होता तो भी वह हमारे स्वर्ग के सबसे छोटे, निम्न, हेय देवदूत की तरह होगा और अगर साधारण होता है तो वह अति-जघन्य, भयंकर वर्णन से परे होगा। इसके बावजूद भी उसका आत्मविश्वास हास्यास्पद है। वह अपने आप को भगवान की सृष्टि का श्रेष्ठ जीव मानता है। आप विश्वास करो या न करो, वह अपनी इस बात पर विश्वास करता है। युगों-युगों से वह यही बात कहता आया है और सभी इस बात को मान भी लेते हैं। एक भी आदमी ऐसा नहीं है जो उसे सुनकर उस पर अविश्वास करें या उसकी हंसी उड़ाएं। ”

मिस नीरा पास में आकर काउल को हिलाकर कहने लगी, “डार्लिंग! अभी तक उठे नहीं हो?पढ़ाई बंद करो। देखो, मैं तो तैयार भी हो गई हूँ। बहुत देर हो चुकी है। घर वाले चिंता करते होंगे। ”

काउल कुछ समय के किताब से आँखें उठाकर मिस नीरा की ओर देखने लगे और कहने लगे, “मेरे कोर्ट की पॉकेट में पर्स है, उसमें से तीन सौ रुपए निकाल लो। ”

फिर मार्क ट्वेन की किताब पढ़ने में वह व्यस्त हो गए।

“रात-दिन आदमी भगवान को पुकारता है। प्रार्थना करता है अपनी सहायता के लिए, उन्नति के लिए, रक्षा के लिए। तरह-तरह की अवास्तविक और अतिरंजित खुशामद भरी बातें करता है। हर रोज वह प्रताड़ित होता है, पराजित होता है। कभी भी उसकी आकुल प्रार्थना काम नहीं आती। फिर भी वह उस तरह की प्रार्थना करता चला जाता है। जीने के लिए आप्राण जिजीविषा! फिर वह सोचता है, एक न एक दिन वह स्वर्ग अवश्य पहुंचेगा। मनुष्य समग्र सृष्टि का सबसे बड़ा निर्बोध जीव है।

प्रत्येक हीनता का भी एक सम्मान है। इस सम्मान की कल्पना प्रताड़ना हो सकती है या हीनता से उबरने के लिए। अगर इस सम्मान पर आंच आती है तो हीनता अचानक बाहर आ जाती है, ग्रंथि खुल जाती है, आदमी विचलित हो जाता है।

मिस नीरा शायद हाड-मांस की बनी वस्तु है। विभिन्न कमरों में विभिन्न वक्ष-स्थलों पर रात बिताकर जीवन का पाथेय जुटाती फिरती है। रूपवती है, अभी भी उसकी मांसपेशियों का सौंदर्य अत्यंत ही आकर्षक है। उसने देखा कि यह रास्ता सहज है। ऐसा नहीं कि घर-संसार बसाने की उसकी चाह नहीं थी। उसने तो चाहा था एक छोटा-सा घर-संसार बसाने के लिए, एक साधारण से किसी अपने व्यक्ति के साथ। **थोड़ा-सा सम्मान**। वह पढ़ी-लिखी थी। कितनी साधारण थी उसकी ये इच्छाएँ! मगर इतना भी नहीं हो पाया। खैर, आज इन बातों की चर्चा से कोई फायदा नहीं है। वह जिस रास्ते पर चल पड़ी है उसके अंतिम दिग्वलय तक जाना ही उसका जीवन है। लेकिन तुम्हारा क्या अधिकार है, उसे कहने के लिए कि वह ऐसी या वैसी है। जो दिखा रहे हो, शायद वह सत्य हो। मगर सच को प्रकट करने का अधिकार तुमको किसने दिया? काउल की अवहेलना और उदासीनता ने नीरा के जीवन की हीनता को स्पष्ट कर दिया।

नीरा मूर्तिवत वहाँ खड़ी रही। कुछ समय बीत गया। काउल ने अपनी किताब पर उसकी छाया देखि। मुंह उठाकर उसने देखा कि नीरा वैसे ही खड़ी थी।

वह कहने लगे, “ड्राइवर अभी तक नहीं आया होगा। टैक्सी बुला देता हूं। थोड़ा इंतजार करो।”

कुछ समय तक चुप रहने के बाद नीरा ने कहा, “तुम्हारा नाम मुझे मालूम नहीं है। तुम्हारा अतीत, वर्तमान के बारे में भी मैं कुछ नहीं जानती हूँ। फिर भी तुम्हारे पास जितने कारण है मुझसे घृणा करने के लिए, मेरे पास भी उतने ही कारण है तुम्हें हेय मानने के लिए। ”

नीरा कुछ उत्तेजित हो चुकी थी। काउल को ऐसा कुछ सुनने की आशा नहीं थी। अचरज से नीरा की ओर देखते हुए वह कहने लगा, "घृणा तो मैंने नहीं की? घृणा करने की कोई बात भी नहीं है। पिछली रात मुझे सब-कुछ तो मिला है। मैं कृतघ्न नहीं हूं। इसलिए तो यथासाध्य उपहार दे रहा हूं। कुछ और चाहिए?पर्स में होंगे। "

" थैंक यू! जरा-सी कोशिश करते तो विदाई के पल को सम्मानजनक बना सकते थे। कम से कम कृतज्ञता की दृष्टि से। "

"तुम्हारा नाम क्या है ?"

"कोई जरूरत नहीं है पूछने की। रात का पथिक। "

नीरा ने पूछा, "तुम्हारा?"

"काउल। रमेश काउल। सुनो, संवेदनशीलता दूसरे धंधों की तरह इस धंधे में भी बाधक है। "

"तुम्हारा नाम काउल न होकर ब्रूट होना चाहिए था। "

"बैठो। बिस्तर पर न सही चेयर खींच लो। ब्रेकफास्ट लेकर जाना। मंगाऊँ?"

"धन्यवाद। मेरे पास इतना समय नहीं है। इसके अलावा मेरा एक और इंगेजमेंट है। "

"अगर मैं तुम्हारी जगह होता तो मिस! मेरे जैसे कस्टमर को हाथ में रखने के लिए उचित आबोहवा की सृष्टि करता। "

"तुम अनुभवी हो। एक ही स्त्री के साथ दूसरी रात नहीं बिताओगे, यह मैं जानती हूँ। इसके अलावा मेरा भी कोई खास आग्रह नहीं है। बिना किसी कौतूहल के इस भार को ढोते-फिरना कठिन हो जाता है। "

"इस बात को मानोगी, मेरे जैसे अनुभवी आदमी का सर्टिफिकेट कीमती है। तुम्हारा शरीर उपभोग्य है। बैठ सकती हो, मेरे बाथरूम से आने तक इंतजार कर सकती हो। हम साथ-साथ जाएंगे, जहां तुम कहोगी वहाँ मैं खुद छोड़ आऊंगा। "

" हमारे दल के लोगों के बारे में आपको यथेष्ट ज्ञान होगा। **तुम्हें** मालूम होगा, हम लोग बीच-बीच में चोरी करती है, पर्स, वॉच, ट्रांजिस्टर। अगर मैं इन चीजों पर हाथ साफ कर चली जाऊँ ? तुम तो मेरा पता तक नहीं जानते और नाम भी नहीं। "

"इतना विश्वास करो। मैं पुलिस में खबर नहीं करूंगा। कम से कम अपने स्वार्थ के खातिर। इसके अलावा अगर कुछ नुकसान हुआ भी तो मेरा कुछ भी बिगड़ने वाला नहीं है। जो तुम कुछ चाहती हो, बिना पूछे ले जा सकती हो। कुछ भी इस घर की कोई भी कीमती चीज।

काउल ड्रेसिंग गाउन से अपने नग्न शरीर को ढककर बाथरुम में चले गए।

रात के मद्धिम प्रकाश में कमरा छोटा लग रहा था। मगर वही कमरा अब बड़ा विस्तृत दिखाई दे रहा था। नीरा रेडियोग्राम का स्विच ऑन कर पारसी गीत का रिकॉर्ड सुनने लगी। जो पिछली रात में रिकॉर्ड प्लेयर पर चढ़ाया गया था। पास राइटिंग टेबल पर कई तरह की किताबें बिखरी हुई पड़ी थी। उसने टेबल के ड्रावर को खींचकर देखा तो वहां कई नारियों के चित्र रखे हुए थे। जापानी, एंग्लो-इंडियन, देशी स्त्रियों के सभी अर्द्धनग्न फोटो। फोटो के पीछे उनके नाम लिखे हुए थे। उनमें से कुछ फोटो पर उनके अपने हस्ताक्षर किए हुए थे।

तभी किसी ने दरवाजा खटखटाया। नीरा ने दरवाजा खोला। सुसज्जित बेरा ने चांदी की ट्रे में एक अखबार, एक मैगजीन, एक टी पॉट और दो खाली प्याले रख कर चला गया। पॉट और कप पर चीनी ड्रैगन का चित्र बना हुआ था। ट्रे के एक कोने में गुलाब का फूल रखा हुआ था। बेरा के सिर पर सफेद टोपी थी। जिसके ऊपर लाल रिबन, कमर में लाल फीता बक्कल से बंधे हुए थे। सफेद बंद गले के कोट पर पीतल के बटन चमचमा रहे थे। बेरा ने सलाम करते हुए पूछा, "मेम साहब! ब्रेकफास्ट?"

नीरा ने कहा, "साहब के बाथरूम से आने तक प्रतीक्षा करो। "

सलाम करके वह कमरे से बाहर चला गया।

काला पैंट, काला कोट, कोट की जेब में सफेद रेशमी रुमाल, काले जूते, सफेद कमीज पर लंदन की टाई पहनकर काउल बाथरूम से सज-धज कर बाहर निकले। ट्रै में से गुलाब का फूल निकालकर कोट में टांग दिया।

नीरा की तरह मुंह घुमा कर पूछने लगे, "ब्रेकफास्ट?"

नीरा ने कहा, " इतनी जल्दी ब्रेकफ़ास्ट लेने की मेरी आदत नहीं है। आप लीजिए मैं इंतजार करती हूं। "

"बिना फीस के इंतजार करोगी?" हंसकर काउल ने कहा।

"इंतजार करने की कोई फीस नहीं लेती हूँ। यह तो मेरी जिंदगी का एक हिस्सा है। हमें तो हमेशा इंतजार करना ही पड़ता है। " नीरा ने उत्तर दिया।

"तो फिर चलो। "

दोनों नीचे उतर आए। ड्राइवर आ चुका था। गाड़ी में बैठ गए काउल और नीरा। तब तक रविवार का सूरज कोलकाता की सड़क पर उजाला फैला रहा था। पहले नीरा ने पूछा, "अब कहां जाएंगे?"

"गिरिजाघर। "

"आप क्या ईसाई हो?"

"शायद नहीं। मगर बचपन से मैं मिशनरी स्कूल में पढ़ा हूं, चर्च का म्यूजिक मुझे बहुत अच्छा लगता है। खासकर रविवार की सुबह का संगीत। शांत, गंभीर पियानो का म्यूजिक। सुनो, मुझे अपनी जगह दिखाने में कोई संकोच हो तो मुझे चर्च में छोड़ दो, फिर तुम जहां कहोगी गाड़ी तुम्हें छोड़ आएगी। "

नीरा ने नाराज होकर कहा, "बिना किसी कारण के कड़वी बात करने में आप माहिर है, यह मानना पड़ेगा। "

बात पूरी होते ही काउल ने उत्तर दिया, "यह भी मानना पड़ेगा कि मैं बहुत लॉजिकल हूं। किसी काम या बातचीत में इधर-उधर की बातों का सहारा नहीं लेता हूँ। "

"शायद आप जानते होंगे, किसी प्रतिभावान आदमी को अपनी मर्जी से चलाना किसी भी स्त्री के लिए संभव है। मगर किसी बेवकूफ को नियंत्रित करने में विलक्षण स्त्री भी सफल नहीं होती है। आप में प्रतिभावान आदमी के ऐसे ही सारे लक्षण है। बस, यही खैरियत की बात है। "

नीरा काउल की ओर देख रही थी। उसको नीरा की बुद्धिमानी पसंद आई।

रविवार की सुबह कोलकाता शहर किसी जागे हुए कोमल, निर्विकार शिशु की तरह लगने लगता है।

गाड़ी चर्च पहुंची। ड्राइवर ने नीरा की ओर का दरवाजा खोला। वह नीचे उतरी। दूसरी तरफ से काउल नीचे उतरा। नीरा ने काउल को कुछ कहने का मौका दिए बगैर अचानक पूछने लगी, “क्या मैं अंदर जा सकती हूं?तुम्हें परिचितों के पास अपमानित तो नहीं होना पड़ेगा?”

“ नहीं, जो मुझे जानता है, वह मुझे पूरे रूप से जानता है। किसी के पास कोई सफाई देने की जरूरत नहीं है। फिर मैंने कोई अन्याय तो नहीं किया! किसी के विरुद्ध कोई काम तो नहीं किया! मैंने तुम्हें भोगा है! तुम अपनी आजीविका के लिए करती हो। ”

“हां, मानती हूं बड़े लॉजिकल है आप। ”

“तुम्हारी पढ़ाई कहां तक हुई है?”

“आप जैसे लोगों की भाषा समझने के लायक तो मैं पढ़ चुकी हूं। ”

“ तो चलो अंदर चलें। ” यह काउल का अनुरोध था।

तब तक चर्च की सर्विस शुरू हो चुकी थी। दोनों पीछे वाली बेंच पर बैठ गए। फादर सरमन दे रहे थे। अंत में, सबने कहा, “आमीन”। काउल और नीरा के सिवाय सबने सिर झुका कर सम्मान प्रकट किया। चर्च की ओर से चंदा मांगा गया। काउल ने ₹50 दिए।

बड़े-बड़े खंबे, चारों ओर दीवारों पर बाइबिल में वर्णित दृश्यों के चित्र, ईसा मसीह का क्रॉस पर लटका हुआ शरीर, पादरी की भाषा, समवेत प्रार्थना सब-कुछ नीरा के मन पर कोमल प्रभाव गिरा रही थी।

किसी मंदिर, मस्जिद या चर्च में वह वर्षों के बाद पहली बार इच्छा से आई थी। वह सोचने लगी, “हम जो भी करते हैं, क्या उन सबके लिए इन पादरियों के जरिए यीशु से क्षमा मांगेंगे?”

वह कुछ भी समझ नहीं पाई। समय भी कम था। ऐसे में वह क्या फैसला करती?

दोनों चर्च से निकलकर अपनी गाड़ी में बैठे।

“ आप क्या रोज रविवार को चर्च आते हो?”

“नहीं, जिस दिन कोई और इंगेजमेंट नहीं होता है, उस दिन आता हूं, जैसे आज। ” नीरा ने ड्राइवर को अपने घर का पता बता दिया। काउल नीरा की ओर देखते हुए कहने लगा, “तुम्हारे इस साहस को यीशु की कृपा समझूं। ”

“लज्जा वैश्या का आभूषण नहीं है। मगर जरा-सी देर के लिए ही सही वह थोड़ी सी इज्जत की भूखी होती है, पवित्र नहीं होने पर भी गुप्त नारीत्व के समर्पण का प्रतिदान के तौर पर। दुनिया की सारी दौलत, सोना-चाँदी उसकी क्षतिपूर्ति नहीं कर सकती है। ”

उसने नीरा से पूछा, “इस सुबह के समय अगर गंगा के किनारे घूमने जाएंगे तो तुम्हें कोई आपत्ति है?”

नीरा ने उत्तर दिया, “घर पहुंचाने का अगर वादा करते हो तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है। ”

हँसते हुए काउल ने अपनी सहमति जताई।

गाड़ी गंगा नदी की ओर मुड़ गई।

“तुमने कभी प्रेम किया है नीरा?”

“प्रेम का शाब्दिक अर्थ तो मैं नहीं जानती। मगर हम लोग हमेशा प्रेम करते रहते हैं-नहीं तो, कम से कम प्रेम करने का दिखावा करते हैं। बस प्रेमी बदल जाता है, जगह बदल जाती है, समय बदल जाता है। मगर हमारा प्रेम नहीं बदलता। ” नीरा ने हंसते हुए कहा।

खिड़की के काँच से सड़क की ओर देख रहे थे काउल। कुछ समय सोचने के बाद आकाश और गंगा की शांत धारा की ओर देखने लगे।

“नीरा, इतिहास में बहुत कुछ चीजें ऐसी है जिस पर गर्व किया जा सकता है। कभी तुमने बुद्ध या ईसामसीह का नाम सुना है?”

“केवल नाम सुना है। ”नीरा ने उत्तर दिया।

“जानती हो, ईसा की मैडिलोना को?वह भी एक गणिका थी। ईसा ने उसे स्वीकार किया था। उनके नाम पर देवालय बने हैं। ”

“और फिर जानती हो आम्रपाली को? जिसके लिए एक दिन बुध ने मृत्यु को भी स्वीकार किया था। उन्होंने राजा का आमंत्रण ठुकराया और आम्रपाली के आतिथ्य को स्वीकार किया था। उन्होंने मांस खाया था। ”

नीरा ताकती रही काउल पर चेहरे की तरफ।

“अगर मैं ईसा या बुद्ध होता तो तुम्हें अभी मुक्ति दे देता। ”

" न तो तुम राम हो और न ही मैं अहिल्या। तुम न तो मुझे मुक्ति दे पाओगे और न ही मुझे मुक्ति की चाह है। काउल साहब! मैं अभिशप्त नहीं हूं, व्यवसाय करती हूं। "

मैट्रिक पास करते ही मुझे जिंदगी में संघर्ष करना पड़ा। मेरे सामने थी मेरी रोगी मां, वृद्ध बाप, दुनियादारी का बोझ। कोलकाता का निस्व:दरिद्र जीवन। समाज की चारदीवारी के भीतर इस बोझ को जिंदगी की सड़क पर लेकर चलने के लिए मुझे किसी का सहारा नहीं मिला। स्कूल का सर्टिफिकेट लेकर मैं लड़ने के लिए तैयार हो गई, दुख और अभाव रूपी दैत्य के साथ। टाइपिस्ट, सेल्स-गर्ल, टीचर बनी। टाइपिस्ट की कमाई बहुत मामूली थी। मगरराठौर साहब की तरफ से ढेरों उपहार मिलने लगे। साथ ही साथ, अनेक संकेत भी। एक दिन हाथ पकड़ कर वह कहने लगे, "इन नाजुक उंगलियों का स्पर्श पाकर टाइप मशीन भी धन्य हो गया। और मेरी हथेली को उन्होंने अपने गाल पर रख लिया। मेरे दूसरे हाथ से उनके दूसरा गाल पर थपकाने लगे।

वहां से मैंने विदा ली। छोटे शहर की एक स्कूल में शिक्षिका बनी। मैनेजिंग कमेटी के सभापति मुझसे चाहते थे कि मैं उनके मातृहीन बेटे को प्राइवेट ट्यूशन पढ़ाऊँ। एक दिन मैंने देखा कि बेटे की जगह खुद उसके पिता बैठे हुए थे। उन्होंने दरवाजा बंदकर सीधे मेरे शरीर पर आक्रमण कर दिया। मैंने प्रतिरोध किया। पितृदेव घायल हुए और मैं भी क्षत-विक्षत।

अंत में, मैं चली गई केमिस्ट की दुकान पर सेल्स गर्ल बनने के लिए। कस्टमर आते-जाते थे, मालिक के बिगड़े लड़के और उनके साथी भी आते थे। मुझे क्लब ले जाते थे, घुड़दौड़ देखने के लिए लेकर जाते थे, बड़ी-बड़ी होटलों में ले जाते थे। काउल साहब! तब तक मेरा सतीत्व बिल्कुल अक्षत था। उनके सारे उपहार लेती थी, मगर उनकी भूख वैसी ही रह जाती थी। बहुत लोग चाहते थे मेरा सम्पूर्ण शरीर। मैं इंकार करती गई। लोग क्रोधित होते चले गए। मालिक से मेरी शिकायत की गई कि मेरे रहने से उनकी दुकान की इज्जत पर आंच आ रही है। अंत में, मुझे वह जगह भी छोड़नी पड़ी।

तब मैंने समझ लिया कि मेरे पास बस एक ही चीज है, जिसके द्वारा मैं जिंदगी को सुखी बना सकती हूँ। सारी दुनिया मुझसे केवल एक ही चीज तो चाहती है। उसके बाद मेरा जीवन किसी गुलाब के सुगंध और सुंदरता से भर जाएगा। यह सब-कुछ मेरे शरीर के विनिमय के द्वारा होगा। "

"बहुत इंटरेस्टिंग! " काउल ने कहा।

नीरा ने कहना जारी रखा, "एक दिन पार्क स्ट्रीट में जर्मन एयर सर्विस के दफ्तर के आगे में खड़ी होकर देश-विदेश के रंग-बिरंगे चित्रदेख रही थी। वहां के लोग कितने सुंदर होते हैं! कितनी सुंदर पोशाकें वे पहनते हैं! मैं न्यू मार्केट जा रही थी। सच कह रही हूँ, काउल साहब! उस महीने हम भूखा मर रहे थे। मेरी मां अंतिम सांसें गिन रही थी। किसी का सहारा नहीं था। जितना संभव था, कर्ज लिया जा चुका था। किसी मित्र या परिचित को मुंह दिखाना मेरे लिए कठिन हो रहा था। मां के लिए डॉक्टर और दवाइयों की जरूरत थी। इस अकाल मृत्यु से माँ को बचाना होगा। "

तनिक सांस लेकर नीरा फिर से कहने लगी।

"शाम हो रही थी। एक सज्जन अकेले-अकेले ऑफिस से घर लौट रहे थे। कुछ समय तक मेरी तरफ देखने लगे। ऐसा लग रहा था, जैसे वह विदेश से लौट रहे हैं। शायद मुंबई के रहने वाले होंगे। धीरे-धीरे वह मेरे करीब आए और कहने लगे, "हेलो! "

मैंने मजाक में उत्तर दिया, "हेलो! "

उन्होंने कहा, "मैं कोलकाता में एकदम नया आदमी हूं। मुझे अपनी होटल तक पहुंचाने में मदद करोगी?"

मैंने कहा, "इसमें मेरा समय बर्बाद होगा, मुझे अगर मेहनताना देंगे तो चलूंगी। "

उन्होंने पूछा, "कितना लोगी?"

"आपकी क्षमता के अनुसार। "

यह बात उनके अहंकार को छू गई। वह कहने लगे, " पूरी रात मेरे पास रहोगी तो मैं ₹200 दूंगा। "

मेरी छाती में हूक-सी उठी। तब तक मैंने कभी ₹200 नहीं देखे थे। दारिद्रय और प्रतिष्ठा के बीच इतना पतला पर्दा होता है। अभावग्रस्त होने के कारण सावन के काले बादलों की तरह आकार ग्रहण कर रही थी मेरी उत्कट इच्छाएं। प्रतिशाम को जब मैं घर पहुंचती थी, मेरी मां व्याकुल दृष्टि से मेरी तरफ देखती थी उनकी दवादारू के लिए। मेरी आंखों के सामने नाचने लगा वह दर्द भरा दृश्य। मैं कुछ ज्यादा सोच ना सकी। मैंने हामी भर ली।

मैं उस भद्र आदमी के साथ चली गई। उसने रास्ते में दुकान से मुझे नई साड़ी, प्रसाधन सामग्री और परफ्यूम दिलाया। होटल पहुंचकर उसने कहा, “पहनो इसे। ” मुझे सजाने में उन्होंने मदद भी की। होटल में बड़े-बड़े लोग आए हुए थे। सिर से पैर तक मेरा रंग साफ दिख रहा था। उस नीले प्रकाश में जब मैंने अपना नया रूप देखा तो सच कह रही हूं, काउल साहब! मैं स्वयं आश्चर्यचकित हो गई थी। सिर की केश-सज्जा, आंखों का रंग, होठों पर लिपिस्टिक, उन्नत उरोज, नंगी कमर, उस साड़ी में मैं कुछ और ही लग रही थी। मेरे घर का नाम था, निर्मला।

उस व्यसक आदमी ने मुझे अंग्रेजी में पूछा, “तुम्हारा नाम क्या है?”

मैंने भी उनकी तरह होठ दबाकर अंग्रेजी में उत्तर दिया, “मेरा नाम मिस नीरा है। ”

उसी पल निर्मला की मौत हो गई और मिस नीरा का जन्म हुआ। मैं अपना प्रतिबिंब उस बड़े आईने में देखने लगी। रूप के अनुसार मेरा नाम युक्ति-संगत लग रहा है या नहीं?मन ही मन मैं संतुष्ट हो गई और वह महाशय भी।

वह मेरे पीछे खड़े थे। अचानक पीछे जाकर उन्होंने मुझे अपने एक हाथ से पकड़ लिया और दूसरे हाथ से मेरा चेहरा पीछे घुमाकर चुंबन दे दिया। पहले तो मैंने प्रतिवाद किया। मेरे भीतर की निर्मला जाग गई थी, वह विरोध करने लगी। मगर वह दूसरे ही पल में मिस नीरा में बदल गई। मैंने उस बाहुबंधन को स्वीकार किया। फिर भी मेरा सतीत्व अक्षत था। मन-ही-मन मुझे काफी यंत्रणा होने लगी। मैंने सोचा कि यह पाप है, स्त्री के लिए एक कलंक है।

उस रात दस बजे के बाद मैंने देखा कि कई लोग महिलाओं के साथ उस होटल में पहुंच गए थे। वह महाशय दिल्ली के मशहूर व्यापारी थे। उनके साथ डिनर करने के लिए गणमान्य व्यक्तिण वहाँ पहुंचे थे। ”

सिग्नल पोस्ट के पास मोटर बंद हो गई। मिस नीरा का बोलना बंद हो गया था। काउल उसके चेहरे की तरफ देखने लगे। नीरा का हाथ काउल के हाथ पर पड़ा हुआ था। नीरा गंभीर हो गई, वह कुछ भी नहीं बोल पा रही थी।

कहानी का सूत्र याद दिलाते हुए काउल ने कहा, “हां, तो तुम कह रही थी उस रात डिनर पर कई लोग वहां आए हुए थे। ”

" प्रत्येक गणिका की ऐसी ही कहानी होती होगी। आपने कई सुनी होंगी। शायद बोर हो रहे होंगे?" नीरा ने पूछा।

"नीरा! हर आदमी की जिंदगी एक कहानी होती है, मगर तुम्हारी जिंदगी कुछ ज्यादा ही रोमांचक है। फिर तुम्हारा वर्णन तो और भी सुंदर है। सुनाती जाओ। "

नीरा ने कहा, "अतीत के पन्ने पलटने में कई बार कष्ट होता है, फिर भी वह कष्ट बहुत मधुर हुआ करता है। "

काउल ने कहा, "ऊंट जैसे खेजड़ी के कांटे खाता है तो उसके होठ और जीभ से खून निकलता है, फिर भी उसे खाने में आनंद आता है। और ज्यादा खाने लगता है। तुम्हारी वेदना शायद कुछ इसी प्रकार की है। "

काउल ने नीरा की हथेली को कसकर पकड़ लिया। ड्राइवर के अचानक ब्रेक लगाने से नीरा काउल की तरफ झुक गई।

नीरा कहने लगी, "जब मैं गर्ल्स स्कूल में थी, हमारे सामने मिस्टर बोस रहा करते थे। उनका एक ही लड़का था। वह पब्लिक स्कूल में पढ़ता था। मेरी मां बीच-बीच में उनके घर जाती थी, शायद कुछ पैसे लाने के लिए। बाद में मुझे पता चला कि मेरी पढ़ाई का खर्च वह दिया करते थे। उनके घर का फर्श संगमरमर का बना हुआ था। घर के सामने नारी की एक नग्न-मूर्ति थी। कहते हैं, उन्होंने वह मूर्ति विदेश से मंगवाई थी। बीच-बीच में उनकी पत्नी मुझसे कहा करती थी, 'जब तुम्हारी पढ़ाई पूरी हो जाएगी तो मैं तुम्हें अपने घर की दुल्हन बनाकर लाऊँगी। ' शायद वह मजाक कर रही होगी या मेरा मन बहलाने के लिए यह बात कह रही होगी। मगर ऐसा भी हो सकता है, यह सोचकर मन-ही-मन मैं कई बार गर्व अनुभव करती थी। स्कूल में सहेलियों से कहती थी, 'हे भगवान! यह पढ़ाई कब खत्म हो और मैं दुल्हन बनकरउस संगमरमर के फर्श वाले घर में चली जाऊँ। '

मैं बहुत ही कम उम्र में विवाह योग्य हो गई। मेरे शरीर के उभार साफ-साफ दिखाई देने लगे। एक दिन शाम को मैं उनके घर से लौट रही थी, उनके बेटे सोमेंद्र ने मुझे उस नग्न मूर्ति के पास अपनी बाहों में जकड़ लिया। उस समय अंधेरा होने लगा था।

वह कहने लगा, "नीरु! मैं तुमसे प्रेम करता हूं। मैं तुमसे विवाह करूंगा। आज रात मेरे कमरे में आ जाना। मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करूंगा। "

उस रात मैं लाज-शर्म से अधमरी-सी हो गई। मन-ही-मन सोच रही थी, ये सारी बातें तो देवदास की बातें हैं। पारुल अपने देवदास के घर जाएगी;घर-संसार, समाज सब पीछे छोडकर। अंधेरी रात में प्रेम निवेदन करेगी। मेरी आंखों के आगे सारे दृश्य साफ-साफ दिखाई देने लगे।

आधी रात को मैं चुपके से अपने कमरे से बाहर निकली। मां सोई हुई थी। धीरे-धीरे मैंने दरवाजा खोला। मैंने देखा रास्ते में एक पुलिस वाला खड़ा था। भय से मैं दौड़कर अंदर चली आई। पुलिस वाले को शक हुआ कि शायद कोई चोर घुसा है? उसने दरवाजा खटखटाया। मां उठी। मां ने देखा कि मैं कहीं बाहर जाने के लिए सजी-धजी खड़ी हूं। रोते-रोते सारी बात मुझे मां को बतानी पड़ी।

अगले दिन मां ने उनकी पत्नी के सामने मेरे शादी का प्रस्ताव रखा। हंसते-हंसते वह लोटपोट हो गई। मैंने खुद जाकर सोमेन से पूछा तो वह भी हंसने लगा और कहने लगा, 'ऐसी बातें तो कॉलेज में लड़कियां रोज ही करती है। कई लड़कियां मेरे घर आया करती है। सबसे अगर मैं विवाह करने लगा तो किसी राजा-महाराजा की तरह घर पर एक विशाल हरम खोलना पड़ेगा।

वह मजाक और क्रूर हंसी की आवाज आज भी कभी-कभी मेरे कानों में गूंज उठती है। उसके बाद हमने उस घर और बस्ती को छोड़ दिया।

कहानी और रोचक हो गई। उस रात सोमेन भी डिनर पर आया था। उसके साथ में एक महिला थी। शायद उसकी पत्नी। मैंने तुरंत उस प्रौढ़ आदमी के पास जाकर कहा, 'अगर कोई मेरे बारे में पूछे तो आप कह देना मैं आपके साथ दिल्ली से आई हूँ। "

उन्होंने मेरी बात को बहुत अच्छे ढंग से संभाल लिया। मैं उनकी पर्सनल सेक्रेटरी बनी। उनके मित्रों को रिसीव करना ही मेरा काम था।

सोमेन ने पूछा, "लगता है, आपको मैंने कहीं देखा है?"

मैंने होठ भींच कर उत्तर दिया, "शायद पिछले जन्म में हो सकता है, मैं कोलकाता में जिंदगी में पहली बार आ रही हूँ। "

इस उत्तर का मैंने अंग्रेजी में पहले से ही अच्छी तरह से रिहर्सल कर रखा था। मैंने देखा कि वह लगातार मेरी तरफ देखता ही जा रहा था। उसकी बातों में कोई रुचि नहीं थी। डिनर के समय वह जान-बूझकर मेरे बगल में बैठा। बीच-बीच में अपने पैरों से मेरे पैरों को स्पर्श कर

देता था। मैं पास में बैठी महिला को यह बात बता देती थी। जिसके लिए वह बार-बार क्षमा मांगता था।

जब-जब मैं बाथरुम की तरफ जाती तो कोई न कोई बहाना बनाकर वह मेरे पीछे चला आता और जान-बूझकर मेरे शरीर से टकरा जाता। नहीं तो, इधर-उधर की बातें छेड़ देता।

रात को दो बजे तक वह डिनर पार्टी चलती रही। खाना-पीना हुआ। इस हाल में अंग्रेजी नाच हुआ। सभी पीकर नशे में धुत थे। स्त्रियां नाच में अपना पार्टनर बदल रही थी। मैं किसी के साथ नहीं थी। पहली बात तो मुझे नाचना नहीं आता था। दूसरी बात, मुझे उन सज्जन की इज्जत भी तो रखनी थी क्योंकि उन्होंने मुझे अपना सेक्रेटरी बनाया था। तीसरी बात, यह माहौल मेरे लिए एकदम नया था। मैं खड़ी-खड़ी देख रही थी, अगल-बगल ताक रही थी। हालांकि मन में शरारत पैदा हो गई थी। मैं सोच रही थी, निर्मला की मौत जरूरी है। मैं इन औरतों के बीच मिस नीरा को अनुभव कर रही थी।

कुछ समय बाद सोमेन मुझे कोई बहाना बनाकर दूसरे कमरे में ले गया। मुझे अपनी दोनों बाहों में जकड़ लिया। मैंने जोर से अपने आपको छुड़ा लिया। मेरी आंखों में तैरने लगा वही मजाक, वही व्यंगभरी हंसी। मुझे क्रोध आ गया। मैंने उसके गाल पर एक जोरदार तमाचा लगाया। सोमेन के चेहरे पर एक हिंस्र और नफरत भरी दृष्टि दिखाई देने लगी। कोई भी स्त्री ऐसे पुरुष की कामना नहीं करेगी। उस संगमरमर वाले घर की इच्छा मेरी जरुर थी, मगर ऐसे मर्द की कभी चाह नहीं रही। यह घटना मैंने उसकी पत्नी को बता दी। मैंने अपना प्रतिशोध लिया।

मेहमान लोग जा चुके थे, मगर मैं कहानी 'आलिस' की नायिका की तरह नई दुनिया में आ गई थी। इतनी ऊंची जगह! इतना भोग-विलास! ! इतनी सहजता से मुझे मिल रहा था?टाइपिस्ट की नौकरी, टीचरगिरी, दुकान का काम कितनी तकलीफदेह हुआ करते थे मेरे लिए। फिर भी जीवन जीना दुष्कर था। अब कुछ समय के लिए मैंने अपना रुप बदल लिया है। ऐश्वर्यपूर्ण निवास स्थान, सुंदरतम खाद्य पदार्थ, अमीर, गणमान्य लोगों का सानिध्य-सब कुछ मेरे पास था, थोड़ा-सा मूल्यबोध बदलने की एवज में।

उस दिन मेरा रास्ता बदल गया, मैंने अपना रूप बदला, मैंने अपना नाम बदला। कदम-कदम पर मैं अंधेरे खड्डे में गिरती चली गई। मैं वेश्या बन गई। सोमेन आया। मैंने अपने कमरे का फर्श संगमरमर का बनवाया, उसकी स्त्री के जेवरों से। मेडिकल दुकान के मालिक के यार-दोस्त मेरे आदेश की प्रतीक्षा करने लगे। बीच-बीच में नाचकर मैं उन्हें उच्छृंखल बना

लेती हूं। कोई मेरी ओर देखकर कहता, 'मेरे पास रात में तुम्हारा उपभोग करने के लिए पैसे नहीं है। ' मैं पतिता हो गई। मगर मुझे मिला ढेर सारा पैसा, संभोग, ऐश्वर्य। कुछ भी बुरा नहीं था। कोई बंधन नहीं था। बल्कि मुझे नारीत्व के उपभोग के सारे सुअवसर मिल रहे थे। ”

“सारे सुअवसर?” काउल ने पूछा।

कुछ क्षण के लिए रुककर नीरा ने कहा, “हां, अनेक अवसर। ”

उसके घर के पते पर गाड़ी पहुंच चुकी थी। काउल ने उसके घर के आगे सीमेंट की बनी नग्न-नारी की मूर्ति देखि। घर में फर्श सफ़ेद-काले संगमरमर से चमक रहा था।

नीरा ने कहा, “जिंदगी की इतनी गोपनीय बातें आपसे कर डाली। मुझसे घृणा करने का अवसर दे रही हूँ। मुझे उसकी चिंता नहीं। मगर घर के अंदर चलने का अनुरोध तो कर सकती हूँ?”

काउल अंदर चले गए। चलते हुए पूछा, “नीरा! तुम्हारे मां-बाप कहां है?”

नीरा ने उनका कमरा दिखाया। काउल ने बूढ़ी मां को प्रणाम किया। नीरा के रोगी पिता के पास कुछ समय के लिए बैठे। देखा, किस तरह गरीबी और फिर अमीरी उनके व्यक्तित्व को रुद्ध कर रहा था। अनुभव किया गरीबी का दुख, ऐश्वर्य और लज्जा के क्षत-विक्षत दाग।

बूढ़ी मां ने काउल से कहा, “बेटे! यह अभिशप्त जीवनहै। इससे तो मौत ही अच्छी है। मगर क्या करें, जिंदगी जीने का लोभ! हमें घर से बाहर निकले हुए वर्षों गुजर गए। किसी परिचित या मित्र से हमारा कोई संबंध नहीं है। हम इस वेश्या के मां-बाप जो ठहरे। ”

काउल सोच रहे थे, लेखक और चित्रकारों ने वेश्याओं का इतिहास लिखा हैं। मगर उनके मां बाप- अपमान की आग में पल-पल जलते हैं, जिनका दुख दरअसल और भी मार्मिक होता है। उनके दुख का कोई प्रतिदान नहीं है। कोई प्रत्युत्तर नहीं है।

कमरे में खड़े-खड़े काउल देख रहे हैं-शिकारी के तीर से बिंधे हुए दो मरणासन्न क्षुद्रपक्षी, असहाय। कोई समर्थन नहीं। सारी दुनिया में हीनतम। यंत्रणा से छटपटाती उनकी आत्माएँ।

कुछ ही देर में वह कमरे से बाहर निकले। बाहर पर्दे की आड़ में नीरा खड़ी थी। उसकी आंखें आंसुओं से नम थी। क्षमा मांगने की मुद्रा में मानो वह अनुनय-विनय कर रही हो।

काउल ने उसके दोनों हाथ पकड़कर कहा, “नीरा! आंसू भविष्य के पथ को धुंधला कर देते हैं। कदम निर्बल हो जाते हैं। प्रगति रुक जाती है। ”

आंसुओं की दो बूंदें काउल के हाथ पर गिर पड़ी। नीरा अपने आप पर संयम नहीं रख पाई। उसे काउल की गोद में शरण लेनी पड़ी। आंसुओं की धारा बहती जा रही थी। नीरा कह रही थी, “काउल साहब! इस नर्क से मैं मुक्ति चाहती हूं, निजात पाना चाहती हूं। सुख, भोग-विलास के बारे में मैंने जो कहा है, सब झूठ है, छलावा है। जिंदगी मुझे बहुत असह्य लग रही है। यह अपमान, यह घृणा, यह जीवन अब और सहा नहीं जाता। ”

कुछ समय के बाद काउल ने नीरा को अपने से अलग कर दिया। वह कहने लगे, “नीरा, कलंक को तो माफ किया जा सकता है, मगर असहायता का कोई परिपूरक नहीं है। अपने पैरों पर खड़ा होना सीखो। दुनिया से मुकाबला करो। ”

आँसू पोंछकर नीरा इस तरह स्थिर खड़ी हो गई मानो वह यूनान देश की एक पत्थर की मूर्ति हो।

काउल ने वहाँ से विदा ली।

****

दो साल बाद काउल फिर उस शहर में आए। हावाई जहाज से उतरकर होटल में रुकने के बाद सीधे सबसे पहले नीरा के घर गए। उस समय शाम हो रही थी। फूलों की तरह माला की तरह रोशनी सड़कों को सजा रही थी।

घर में पहुंचते ही नीरा से मुलाक़ात हुई। उन्होंने देखा कि उसमें सौंदर्य की वह मादकता नहीं थी। उसकी निगाहों में वह कशिश नहीं थी। शांत, शुभ्र, रुपहले आंगन में नीरा तुलसी के पौधे की तरह प्रसाधनविहीन दिखाई दे रही थी, वैधव्य के गौरव से उद्भासित। कुछ समय तक दोनों एक दूसरे को देखते रहे।

नीरा ने कहा, “काउल! तुम मनुष्य नहीं महात्मा हो। ”

“नीरा! तुम इसे लिख दो। मैं टेंपलेट बना कर बाटूंगा। पहला परिणाम तो पक्का यह होगा कि तुम पूरी पागल हो गई हो। यह बात साबित हो जाएगी। ”

“माताजी और पिताजी कहां है?” काउल ने पूछा।

“ काली मंदिर गए हैं। ”

नीरा ने कहा, “काउल! जानती हूं धन की आपके पास कोई कमी नहीं है, मगर क्यों गवाया इतना धन? इतना त्याग क्यों?**क्यों अपने परिवार को आपने** इससे वंचित किया?”

काउल ने कहा, “मैं अपने मां-बाप खो चुका हूं। मैंने सोचा कि इन दोनों की पीड़ा कुछ कम करूंगा। फिर यह जो धन है, वह भी तो कलंक से ही पैदा हुआ है। उस दिन तुम्हारे घर से आने के बाद ऑफिस में काला-बाजारी का काम किया। मेरे हिस्से से मुझे कहीं अधिक पैसा मिला। मैंने सोचा कि इस धन पर तुम्हारे मां-बाप और तुम्हारा अधिकार है। ”

वह शाम काउल को बहुत खराब लग रही थी। उनकी आंखों के सामने तैरने लगे दो रुग्ण, असहाय, वृद्ध शरीर। काउल ने उनमें अपने मां-बाप को याद करने का प्रयास किया। कोई स्मृति याद नहीं हो पाई। वह सोचने लगा, इसी तरह हताशा से उसके मां-बाप विलुप्त हो गए होंगे। काउल में माता-पिता के प्रति ममता जाग उठी। उस शाम अपनी कमाई का एक हिस्सा काउल ने यह लिखकर नीरा के माता-पिता के लिए भेजा।

“काउल का यह उसके माता-पिता के प्रति अर्घ्य, प्रणाम। इस धन से वे अपना आगामी जीवन बिता सकते है। ”

नीरा को दूसरा हिस्सा भेजा था, जिसमें लिखा था, “नीरा! अगर चाहो तो इस धन से तुम अपने पहले की जिंदगी में लौट सकती हो, जिसे तुम शुद्ध और पवित्र मानती हो। अन्यथा इसे अपने अतीत जीवन के वर्णन के लिए पुरस्कार-स्वरूप ग्रहण कर सकती हो। ”

नीरा ने पतित वेश्याओं के बच्चों को पढ़ाने के लिए स्कूल बनाई। अपने प्रयास और दूसरों के सहयोग से उसने इस संस्थान का निर्माण किया। धन आने से नीरा को अपना खोया सम्मान फिर से प्राप्त हो गया।

नीरा ने कहा, “आपके यहाँ क्या रीति-रिवाज है, मुझे मालूम नहीं। हमारे यहाँ ललाट पर तिलक लगाकर भाई के चरण-स्पर्श करते हैं, अगर उसे कोई आपत्ति नहीं हो। ” काउल की ललाट पर नीरा ने टीका लगाकर चरण स्पर्श किए। काउल ने नीरा को आशीर्वाद दिया और अपनी बाहों में भर लिया। एक छोटे बच्चे की तरह वह काउल का चेहरा देख रही थी। काउल ने नीरा का बदला हुआ नया रुप देखा, ममतामयी, कोमल, शांत, पवित्र नारीत्व के रूप में।

3.

रात...

प्रिंसेस डिनर के साथ कैबरे में मेक्सिकन नंगा डांस चल रहा था। हृदय को उन्मत्त करने वाले दृश्य। काउल ने कहा, “दास साहब! पाप की करामत जानते हो? अहंकारी कर्ण का उद्धत भार सहन नहीं करने के कारण शायद लक्ष्मी प्रतिदिन उन्हें एक भरी स्वर्ण भेंट कर रही थी। मगर मुझे अजस्र बैंक बैलेंस मिला है। शायद मेरे पाप का भार माँ लक्ष्मी सहन नहीं कर पाई। बीच-बीच में मुझे विदेशी मुद्रा भी प्रदान की। ”

“नर्तकियों के जरिए लक्ष्मी का उपहार तो ससम्मान आ रहा था। आपके लिए कस्टम क्या है?”

“ मेरे लिए नर्तकियां सदा उर्वशी और मेनका नहीं थी। कभी-कभी अलीबाबा की सायोनारा भी थी। एक हाथ में सुरा का प्याला और दूसरे हाथ में चाकू। कभी-कभी फूल-माला के बदले लोहे की हथकड़ी भी पहुंचती थी। मगर उस पाप के भरोसे जिंदगी के कितने साहारा-मरुस्थल पार किए, उसका कोई हिसाब नहीं। कोई छोटी-मोटी भेंट या वितरण, कई बार मामूली जुर्माना अदाकर रिहा हुआ हूँ। ”

थोड़ी-सांस लेकर फिर से कहने लगे, “लगता है पुण्य काफी झूलने वाला सुपारफिशियल है। जिस पर भरोसा नहीं किया जा सकता। मगर पाप की जड़ सदा भरोसेमंद, सुदृश और गहरी होती है। बच्चे को देखो, उसकी कितनी हिंसा, कितना लोभ, एक खिलौने के लिए, एक पोशाक के लिए होता है। बिना सोचे समझे जरा-सी चीज के लिए औरों से युद्ध कर बैठता है। मगर त्याग, सत्य, सेवा के लिए बुद्ध, ईसा, मोहम्मद, गांधी सिर पीट-पीटकर थक गए। पोथी पर पोथी खत्म हो गई। मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर से ऊंचे स्वर में आवाज लगाई गई। मगर परिणाम स्वरूप स्वार्थ को छोड़कर सेवा, त्याग, सत्य आदि का कोई मूल्य नहीं रह गया। पाप आदिम है, पाप मौलिक है। पुण्य शौकिया है, पुण्य क्षण-स्थायी है।

फिर जरा चुप रहकर काउल ने कहना शुरू किया, “मानव-इतिहास में व्याप्त इस प्रगल्भ दर्शन को हम और हमारे जैसे व्यापारी शायद अच्छी तरह से समझ सकते हैं। ”

" काउल! तुम आकाश में घटाघोप बादल, उच्छृंखल बिजली और कर्कश वज्रपात देखते हो। मगर छोटे-छोटे तारे जो शांति से इनका मुकाबला करते हैं, आखिरकार उनकी विजय होती हैं। चाहे रात्रि का अंतिम प्रहर हो, मगर विजय उन्हें मिलती है! दूर से देखने पर खाली नजर आते हैं, रूपहीन, संज्ञाहीन, असुराकार द्रुमों की तरह। मगर इधर जो सूक्ष्म-फूल किसी लता के **सारे** खिलता है, वह औरों को शांति और कोमल भाव देता है, उसके अस्तित्व का तुम्हारे पास कोई मूल्य नहीं है?"

" दास साहब! मुझे तो लगता है सत्य, शांति, कोमलता, तारा, फूल आदि को गूँथकर कविता तो बन सकती है, मगर जिंदगी नहीं चल सकती है। मार्बल फ्लोर, ड्राई चेरी, चाइनीज डिनर, रूपवती स्त्रियां, किताबों के ढेर के पीछे अंधेरा, गरीबी, बहुत अपव्यय है? मन मुरझा जाएगा, शरीर टूट जाएगा और सारे विचार ढह जाएंगे। "

" काउल! इन दोनों परिणामों के बीच एक गोल्डन मीन भी है। बीच का एक रास्ता है। "

" दास साहब! उसे एक एक्सीडेंट समझ ले। किसी दिशा में चलते समय रास्ते में पड़ने वाली एक छोटी-सी धर्मशाला की तरह। दोनों परिणामों के बीच एक का होना जरूरी है, चाहे जागृत अवस्था में हो या अवचेतन अवस्था में, रात में हम जहां विश्राम लेते हैं वह यात्रा का अंतिम स्थान नहीं होता है। "

" नदी के किनारे जो बालू दिखाई देती हैं, वह जन्म से ऐसी नहीं होती। शायद उद्गम के समय पर कभी रहे होंगे विराट शिलाखंड। तूफान, वर्षा, तुषार आए और उन्हें तोड़-मरोड़ कर नदी के वक्ष स्थल में बहा दिया। जहां उन्हें आश्रय मिला। कितने जंगल, पहाड़ पारकर टूटे-फूटे अंगों में क्षुद्र से क्षुद्रतर होते चले गए और अंत में बालू में परिणित हो गए। "

काउल की जिंदगी का इतिहास प्रकृति के इस भौगोलिक विवर्तन की तरह था। काउल के परिवार की आर्थिक स्थिति आइसबर्ग की तरह थी। जमीदारी की आय उनके लोक-दिखावे की आमदनी का एक मामूली हिस्सा था। हिसाब रखना नीचता का परिचय मानकर उनके पूर्वज सोने के संग्रह और धन का हिसाब नहीं रखते थे। लक्ष्मी पर उनका अटूट और असीम भरोसा था। युगों-युगों के लिए अपने भविष्य को सोने की ढाल में सुरक्षित समझकर हमारे मिस्टर काउल के दादा बीसवी सदी के हरिश्चंद्र बने थे। जब कोई कहता कि आपकी पोशाक कितनी सुंदर दिखाई देती है तो वे तुरंत इस तरह की पोशाकें मंगवाकर उस कलाप्रेमी गोष्ठी में बांट देते थे। जब कोई कहता आपका शहर से दूर रहना हमारे लिए बड़ा कष्टप्रद है

क्योंकि हजूर के रोजाना दर्शन उन्हें नहीं मिल पाते हैं तो इस हेतु तुरंत वहाँ मकान खड़ा हो जाता था, नहीं तो जुए के खेल में असुविधा हो जाती थी।

एक बार किसी विलायती कंपनी के बड़े रिप्रजेंटेटिव क्रोकरी बेचने के लिए आए थे। उन्होंने उनकी इज्जत रखने के लिए दो सौ शैफील्ड चाकू, अढ़ाई सौ ग्लासगों प्लेटें खरीदने का आर्डर दिया। उनके दरवाजे से कोई खाली हाथ नहीं जाता, दस कोस के भीतर उनका सुनाम था। काउल महाराष्ट्र के गौरव थे। उनके बारे में कई किवदंतियां आज भी गांव-गाँव में प्रचलित है।

दोस्तों ने कहा, काउलजी विश्व-भ्रमण पर जाएंगे। भारत, बर्मा, श्रीलंका आदि में दोस्तों के साथ वर्षों तक घूमते रहें। उन्होंने लौटकर देखा, उनकी अधिकांश जमींदारी नीलाम हो चुकी थी। परिवार के परिजनों की दया से उन्होंने मुकदमेबाजी शुरू की।

उसके बाद उनके बेटे को मिले अदालतों के असंख्य सर्टिफिकेट और जुए का नशा। घर की धन-दौलत, जमीन, जायदाद बेचकर उन्होंने आजीवन इन दोनों को जीवित रखा। हमारे काउल के पिता ने अतीत के गौरव और पूंजी के बल पर किसी तरह जिंदगी काटी। हमारे काउलजी के धरती पर अवतरित होने के समय तक काउल-परिवार का सारा गौरव ऐतिहासिक वस्तु बन कर रह गया था। जब काउल तीन बरस के थे, उनके पिता स्वर्ग सिधार गए थे और उनकी पाँच वर्ष की उम्र में मां भी छोड़कर चली गई थी। परिवारहीन, संपतिहीन काउल इस दुनिया में जीवन-संग्राम करने के लिए अकेले अपने पाँवों पर खड़े हो गए। उनके पास भविष्य के लिए न कोई पथ था, न कोई पाथेय। कहा जाता है कि उनके गांव में दूर के रिश्तेदारों ने काउल परिवार की बची हुई संपत्ति को पाने के लोभ में उनकी हत्या करने की कोशिश की थी। मगर रिश्ते में लगने वाले मामा ने उनको किसी तरह से बचाकर मुंबई भेज दिया। उन्होंने सोचा, हत्या का अभियोग लगे बिना ही उनका उद्देश्य पूरा हो जाएगा। मुंबई में वह खुद ही किसी ट्राम या बस के नीचे आकर मर जाएगा। इस तरह काउल मुंबई पहुंचे।

काउल परिवार के विशाल शिलाखंड की धूल समय के थपेड़ों के साथ हमारे काउल के जीवन में आई।

" दास साहब! हर जन्म के उत्स में युद्ध का इतिहास रहता है। हर आदमी एक एक महायुग का उपसंहार है। पुरुष के वीर्य से करोड़ों-करोड़ों सुई की नोक से भी सूक्ष्म स्पर्म निकलते हैं। वे नारी के निर्गत अंडों के पास जाते है। एक अंडे के लिए असंख्य स्पर्म युद्ध करते हैं। अनेक लड़ते-लड़ते विलुप्त हो जाते हैं। अंत में जीतता वही है, जो सर्वोपरि ताकतवर

होता है। जो सबसे तेज होता है। इन दोनों के मिलने से एक कोशिका बनती है। वही कोशिका मां के गर्भ में बढ़कर शिशु के रूप में जन्म लेती है। जन्म के बाद उसकी मां-बाप देखभाल करते है। इस तरह संघर्ष का अंत हो जाता है। "

कुछ समय विचार-शून्य मन से वह चुप-चाप दूर देखते रहे। फिर कहना जारी रखा, "मगर मेरे जन्म के बाद जीवन-संघर्ष खत्म नहीं हुआ। कई दिनों तक युद्ध चलता रहा। बहुत दुख पाया मैंने। शरीर लहूलुहान हो गया। आत्मा क्षत-विक्षत। पता नहीं, कैसे जिंदगी के सात-आठ वर्ष कट गए। जीवन्त पर्दे पर उनकी कोई छाप नहीं पड़ सकी। केवल एक अस्वस्तिकर-भाव भी आज भी ताजा है- कभी- कभी याद आ जाते हैं हमारे घुड़साल और राजमहल के खंडहर। अब वहां सियार और सांप डेरा डाले हुए हैं। आज तक कभी उधर जाने की इच्छा नहीं हुई। वह परिसर भयंकर लगता है। "

आठ-नौ साल की उम्र में काउल मुंबई पहुंचे थे। उन्हें ठीक से याद नहीं, वे कैसे पहुंचे वहाँ। शायद मामा की कृपा से अचानक एक दिन उन्होंने अपने आपको मुंबई की सड़क पर खड़े पाया। ट्राम, लोगों की भीड़-भाड़ का शोरगुल उनके कानों में पड़ रहा था। किसी दुकान पर नौकर बने। दुकानदार के लिए चाय, पान लाते।

जरूरत पड़ने पर उनके साथ बाजार में गेहूं, चावल, दाल, सिगरेट, अगरबत्ती, साबुन खरीदने जाते। धीरे-धीरे उनको मुंबई रास आने लगी। चारों तरफ बेशुमार भागदौड़। हर तरफ आदमी, उनकी तीव्र गति।

सुबह-सुबह दुकान सजा देते। दोपहर में बिक्री-खरीददारी। रात में दुकानदार के बेटे-बेटी पंडित के पास पढ़ने जाते। खाली स्लेट लेकर काउल भी वहाँ बैठ जाते। अंग्रेजी और हिंदी पढ़ाई जाती।

काम में कुछ भूल होने पर या कभी बाजार में नाश्ते कर लेने पर सही हिसाब नहीं दे पाने पर मालिक काउल को बीच-बीच में पीट देता। मारने के बाद में वह उसे नैतिकता, सत्यवादिता, कर्मठता की सीख देता। मार का दर्द भूल जाने के बाद फिर से उसी काम की पुनरावृत्ति होती।

बल्कि और ज्यादा चोरी करना शुरू कर उसने। काम में देरी भी। दुकानदार और बर्दाश्त नहीं कर पाया। खूब मारपीट करने के बाद आखिर उन्हें वहां से निकाल दिया। तब तक काउल की जेब में चोरी के कुछ रुपए बचे हुए थे।

चारों तरफ इधर-उधर भटकने लगे वह। एक दिन एक होटल के फुटपाथ पर सोये हुए थे। पता नहीं, कब रात बीत गई। किसी ने आकर उन्हें लात मारकर उठाया। “साले! यही सोने की जगह मिली है, इतने बड़े मुंबई शहर में?”

काउल की नींद टूट गई। उसने देखा कि कोई हृष्ट-पुष्ट, काला-कलूटा निष्ठुर आदमी सामने खड़ा था। एक ठेले में विभिन्न प्रकार के अखबार लेकर वहाँ पहुंचा। उस मोटे आदमी ने ऊंची आवाज में कहा, “अबे, हटो यहां से! ” काउल थोड़ा सरककर दूर बैठ गया। आज का दिन कैसे कटेगा, इसी चिंता में खोया हुआ था वह।

अखबार, पत्रिकाओं के ठेलेवाले को घेरकर कई लोग खड़े थे। उस फुटपाथ के आगे सारी ट्राम और बसें रुकती थी। काउल वहाँ बैठे-बैठे अखबारों की खरीद-बिक्री देखते रहे। ट्राम, बस आते ही लोग उन्हें पकड़ने के लिए भागते थे। फुटपाथ के **चरो** तरफ एक लंबी कतार लग जाती थी। बीच-बीच में भीड़ खाली हो जाती थी।

काउल ने उसके पास आकर आत्मविश्वास से कहा, “मुझे पाँच-दस अखबार दीजिए। फुटपाथ के दूसरी तरफ कतार में खड़े लोगों को बेचकर आऊँगा।

उस हृष्ट-पुष्ट आदमी ने काउल की तरफ सिर उठाकर गौर से देखा। उसके बाद उसने पांच अखबार काउल की तरफ बढ़ा दिए। और पूछा, “तुम्हारा नाम क्या है?” “रमेश। ” काउल ने कहा।

रमेश अखबार तुरंत बेचकर, फिर पांच अखबार लेकर गया। पैसा लाकर उस आदमी को दे जाता था। “ इन अखबारों से खास फायदा नहीं है। लोग खुद आएंगे। हो सके तो दो-तीन पत्रिका बेचकर आओ। फायदा होगा। ” उस आदमी ने कहा।

रमेश ने पूछा, “इनका नाम क्या है?”

“यह फिल्म-फेयर, यह ब्लिट्ज़ और यह करंट। ”

रमेश एक फिल्मफेयर लेकर चौराहे पर चला गया। एक कार में मेमसाहब बैठी हुई थी। ट्रैफिक लाइट लाल थी। कुछ समय इंतजार करना होगा।

रमेश ने कहा, “मेमसाहब! कल से कुछ भी नहीं खाया है। यह खरीदोगी तो मुझे कुछ खाने को मिल जाएगा। ”

मेमसाहब ने तुरंत फिल्मफेयर खरीद ली। रमेश एक और ब्लिट्ज़ लेकर दूसरी गाड़ी के पास गया और वही बात दोहराई, “साहब! इसे लेंगे तो मुझे खाना नसीब होगा। ”

वैसे ही तीसरी पत्रिका करंट बेच दी। रमेश के प्रयास से उस दिन अनेक पत्र- पत्रिकाएं बेची गई। वह ठेलेवाला आदमी रमेश की दक्षता पर बहुत खुश हुआ।

दिन के दस बज चुके थे। सड़क पर भीड़ धीरे-धीरे कम हो रही थी। साहब लोग दफ्तर में जा चुके थे। और अखबार अब कौन खरीदेगा? अब जो भी बिकेगा, फिर शाम को।

रमेश ने अपनी मर्जी से उस ठेलागाड़ी को ठेलने लगा। उस मोटे आदमी ने कुछ नहीं कहा। रास्ते में पूछा, “रमेश! तुम यहाँ क्या काम करते हो?”

“एक दुकान में काम करता था। चोरी की तो पीटकर मुझे निकाल दिया। ”

रमेश का स्पष्ट उत्तर उस मोटे आदमी को बहुत अच्छा लगा। फिर हंसकर उसने पूछा , “कितने रुपए?”

“ पाँच रुपए। ”

“बेवकूफ! ”

“ मां-बाप है?”- मोटे आदमी ने पूछा।

“नहीं। ”

“ मुंबई में कब से हो?”

“ एक साल से। ”

“बेईमानी करोगे?”

“ नहीं। ”

“चल, मेरे साथ। ”

ठेलागाड़ी को एक गंदी गली में लगा दिया। छोटा, अंधेरा और गंदा काला-काला घर। वहां यह मोटा आदमी रहता था- उसका नाम था सलीम।

रमेश ठेले से सारे अखबार लाकर कोठरी में रख दिए। सलीम ने कहा, “बेटा, अखबार करीने से रखो। नीचे बड़े-बड़े अखबार, ऊपर-ऊपर छोटी-छोटी पत्रिकाएं। ”

अखबारों को सजाने का काम पूरा हुआ।

सलीम ने कहा, “ये रोटी खाओ। उस मेज पर बैठ जाओ। ”

रमेश ने खाना खाकर पानी पी लिया।

इसी बीच, सलीम नहा-धोकर अपनी खाकी कमीज, हुगुला पैंट पहनकर एक टूटे आईने में भाग-भाग में अपना चेहरा देखने लगा। पूरा चेहरा एक साथ उसमें देखना मुश्किल था! पहले सिर, फिर चेहरा। सलीम ने बाकी रोटियां चीनी के साथ खाली। पानी पी लिया।

रमेश को देखकर उसने कहा, “चल मेरे साथ। ऑफिस में ये सारे अखबार लौटाने होंगे। छोटी-छोटी किताबें वहाँ रहने दो। ताला लगा दो। ”

दोनों बाहर निकल पड़े। एक गली से दूसरी गली, एक सड़क से दूसरी सड़क पार करते हुए वे अखबार के कार्यालय पहुंचे। बाकी अखबार जमा करवा दिए।

सलीम ने कहा, “मैं अभी यहीं रहूंगा। तीन बजे तक तू इधर-उधर घूम-फिरकर फिर उसी खोली में आ जाना। ये ले चवन्नी। ”

सलीम उस अखबार-कार्यालय का दरबान था।

अखबार-कार्यालय में कुछ समय इधर-उधर घूमते रहे काउल। दुकानदार के पास रहने से जितना भाषा-ज्ञान हुआ था, उससे दीवारों, किताबों में लिखे हिन्दी और अङ्ग्रेज़ी अक्षरों को पढ़ पा रहे थे।

वहाँ से बाहर आकर वह खूब घूमे। तीन बजे हाजिर हो गए उस खोली में। सलीम ने एक कप चाय पी। रमेश ने एक रोटी खाई। दोनों चल पड़े फिर से होटल के पास वाले फुटपाथ की तरफ। रमेश ने ठेलागाड़ी चलाना शुरु किया। होटल में आते-जाते लोगों को देखते हुए वह पत्रिकाएँ लेकर वहां पहुंच गया। कुछ लोग वहाँ से शराब खरीद रहे थे। इसी फुटपाथ पर पत्र-पत्रिकाएँ, सस्ती हिंदी प्रेम-कहानियां सजाकर वह रखवाली करने लगा।

काउल कहा करते थे कि उन्होंने अपने जीवन में व्यापार सलीम से सीखा है। एक दिन सलीम ने कहा, “रमेश! बस्ती में जितने दूसरे हाकर हैं, रोज तड़के उनके आने से पहले लोगों के घरों में अखबार लेकर पहुंच जाओ। फिर चलेंगे होटल के आगे। ”

रमेश राजी हो गया। भोर-भोर हिंदी, उर्दू, मराठी के अखबार लेकर वह आस-पास के लोगों के घर पहुंच जाता था। उनसे पैसा लाकर सलीम को देता था। फिर दोनों होटल के सामने चले जाते थे। अखबार बेचकर लौटकर खाना खाने के बाद खोली में ताला लगाते थे। सलीम अपनी नौकरी पर चला जाता। काउल सड़कों पर घूमता। दोनों दिन के तीन बजे मिलते। शाम तक फिर किताबें बेचते। लौटकर गत्ते बिछाकर सलीम सो जाता था और रमेश नीचे।

कभी-कभी सलीम रमेश को अठन्नी, रुपया देता था। एक दिन सलीम ने कहा, “ अबे! जरा अच्छी तरह हिंदी, अंग्रेजी पढ़ना सीख। रेलवे-स्टेशन पर अखबार के साथ किताबें भी बेचेंगे। खूब मुनाफा होगा। ”

फिर उसके बाद दोपहर में सड़क पर घूमने के बजाय रमेश स्कूल जाने लगा। क्रिश्चियन स्कूल में फीस नहीं लगेगी। केवल ईसा का नाम लेना पड़ेगा। सलीम ने स्कूल की मालकिन मदर को समझाया, “यह ईसाई लड़काहै, मां-बाप कोई नहीं है, अनाथ है। आप इसे ईसा के बारे में समझाइए। ” रमेश को भी सावधान कर दिया कि वह कभी सच बात न करें वर्ना वह बदनाम हो जाएगा।

काउल सुबह अखबार, मैगजीन, हिंदी-अंग्रेजी की किताबें बेचता था। दिन में स्कूल में पढ़ने जाता था।

उस गली के पास ही एक और बड़ी गली थी। दिन में सुनसान। रात में असीम भीड़-भाड़ और भड़कीली रोशनी। सुबह तक लोगों की जमघट। चारो तरफ नाच-गान का अड्डा। सस्ते इत्र छिड़ककर बालों में फूल लगाकर स्त्रियाँ दरवाजे पर खड़ी रहती थी। लोग अंदर जाते। चारों ओर शराब की बदबू।

“सलीम भाई! क्या माजरा है?” काउल ने पूछा।

“यह रंडियों की मंडी है। ”

कभी-कभी सलीम महीने के पहले हफ्ते में तंख्वाह पाने के बाद वहाँ जाता था। कभी-कभी रमेश उसके साथ जाता था। उसने देखा कि वहाँ खूब फूल बिकते थे। वह पुष्पालय से एक-दो

रुपए के फूलों की माला खरीदकर एक-दो वैश्याओं के घर के आगे खड़ा हो जाता था। विशेषकर जहां सलीम जाता था। सलीम की प्रतीक्षा के समय वह दूसरे ग्राहकों से फूलमालाओं की कीमत बढ़ा देता था।

जब सलीम वैश्या के पास होता था तब वह उसे एक फूल माला देकर आ जाता था। यह देखकर सलीम बहुत खुश होता था।

देखते-देखते चार-पाँच वर्ष बीत गए। पढ़ाई, अखबार बेचना, फूल बेचना चलता रहा। इसी बीच रमेश ने करीब 100 रुपए की कुछ पूंजी भी जमा कर ली थी। सलीम के घर और गत्ते बिछाने की जरूरत नहीं थी। दोनों के लिए दो कैनवास की चारपाई आ चुकी थी। रोटी के साथ कभी-कभी मीट भी मिल जाता था कमरे में छोटा-सा बिजली का बल्ब जलने लगा।

काउल ने कहा, "इस शरीर के खून में पाप है। इसके बदल जाने की तुम आशा कैसे कर सकते हो?"

समय के साथ-साथ माया और लता नामक वैश्याओं, दलालों, अपराधियों, रामधन और हरीसिंह जैसे दुकानदारों के साथ घनिष्ठ परिचय हो गया। बड़ी होटल के मालिक के साथ भी जान-पहचान हो गई। बस्ती के डाक्टरों, वकीलों को दुआ- सलाम करने से कभी-कभी वे रमेश के रोजगार के हाल-चाल पूछ लेते थे। स्कूल की मदर कहती, " रमेश, अगले साल पढ़ाई पूरी हो जाएगी। क्या तुम कॉलेज में पढ़ना चाहोगे?अगर चाहते हो तो मैं सुविधा करा दूंगी। ईसाई बच्चों के लिए फीस नहीं लगेगी। "

रमेश ने कहा, "सलीम भइया से पूछकर बताऊंगा। "

उस दिन रमेश को बुखार था। कई दिन बीत गए, मगर उसका बुखार नहीं उतरा। वह अकेले उस खोली में पड़ा रहता। सारी दुनिया उसे अंधेरी लगती थी। सलीम भी नहीं था। वह अपने गांव चला गया था। उस अंधेरी कोठरी में रमेश थोड़ा-बहुत पानी पीकर बुखार में पड़ा हुआ था। रमेश सोचने लगा, इतना बड़ा शहर, इतने लोग, मगर कोई भी मेरा अपना नहीं है! सभी के कितने संबंधी और आत्मीय होते हैं! मगर मां-बाप, भाई-बंधु कोई भी तो मेरा नहीं।

दिन में ग्राहक नहीं होने के कारण केवल माया रमेश के पास आई थी और उसने डाक्टर को बुलवाया। वह खुद जाकर फल और दवाई लाई। पास में बैठकर कहानी सुनाने लगी।

कहानी सुनाते-सुनाते उसकी आँखें छलछला आई। काउल कहने लगे, "ऐसी ममता आज तक मैंने नहीं देखी। बाद में माया किसी सरदार के साथ चली गई। आज तक उसी घर में रहती है। "

सलीम ने कहा, "यह मौका छोड़ना ठीक नहीं है। कॉलेज में नाम लिखवा लेने में कोई नुकसान तो नहीं हैं। "

काउल ने मदर को हाँ कह दिया। अगले साल कॉलेज में भर्ती हो गया।

फूलों का काम छोड़ दिया। अखबार बेचना छोड़ दिया। मदर ने उसे किसी चमड़े की दुकान में रात को हिसाब-किताब लिखने की नौकरी दिलवा दी। रमेश सलीम के साथ में रहता था। कॉलेज से लौटकर शाम को चमड़े की दुकान पर चला जाता था। वह उर्दू के शब्दों को अंग्रेजी में लिखता था, जो कमाता था वह सब सलीम को दे देता था। पढ़ाई की किताबें, खाने-पीने का खर्च, पेंट-कमीज के खर्च आदि के लिए सलीम हिसाब से पैसा देता था।

आज भी सलीम काउल के कारखाने में सुपरवाइजर का काम करता है। काउल उसे सलीम भाई के नाम से बुलाता है। वह अपने व्यापार के बारे में सलाह मशविरा एक ही आदमी के साथ करता है-वह है सलीम। सलीम जो चाहेगा, वही होगा। काउल ने कभी उसकी उपेक्षा नहीं की।

काउल चमड़े के व्यापार का सारा भेद जान गया। धीरे-धीरे चमड़े के व्यापारियों के साथ उसके संबंध बनने लगे। उसे चमड़े के बाजार की जानकारी हो गई। काउल ने सलाह-मशविरा किया कि चमड़े की वस्तुएँ विदेश में निर्यात किए बिना मुनाफा नहीं होगा। मालिक भी राजी हो गए। कोरिया, जापान और मालय देशों को सामान एक्सपोर्ट होने लगा। बिक्री बढती गई और मुनाफा भी। साथ-ही-साथ उसका भाग्य भी बदल गया।

कॉलेज की पढ़ाई खत्म होते-होते काउल इस व्यवसाय में पुराने हो चुके थे। वह साबुन, अखबार, फूलों के गजरे बेचने से लेकर चमड़े के व्यवसाय तक सब-कुछ जान चुके थे। कभी-कभी स्टॉक एक्सचेंज चले जाते हैं, हिसाब से शेयर-मार्केट में पैसा डालने के लिए। जिस कंपनी के शेयर भविष्य में जरूर चमकेंगे, आज खरीदकर कल बेच देते थे। वह क्लब जाने लगे। क्लब में उन्होंने सुना कि ऑक्सीज़न कंपनी के अमेरिकी व्यापारियों के साथ समझौते की बात कल अखबारों में छपेगी। काउल उसके शेयर खरीदने का फैसला किया, क्योंकि कुछ

दिन में वे शेयर बहुत ऊपर उठेंगे। तिगुना फायदा होगा। वह स्टॉक-एक्सचेंज के पक्के खिलाडी बन गए।

निर्यात बढ़ाने के लिए वह जापान चले गए। वहां व्यापारियों से कॉन्ट्रैक्ट किया, उनकी मदद से यहां टैनरी कारखाना बिठाने के लिए। वापस आकर अपनी कंपनी के मालिक से कहा, "इसे आप प्राइवेट लिमिटेड कंपनी बना दीजिए। इसका भविष्य उज्जवल है। "

और चमड़े की दुकान कंपनी में बदल गई। काउल बने उसके डायरेक्टर। भारत के हर राज्य के विभिन्न शहरों में कंपनी की शाखाएं खुलने लगी। मालिक का काउल पर पक्का विश्वास था। कंपनी के मालिक की इसी बीच मृत्यु हो गई। निसंतान मालिक की पत्नी ने कंपनी के अधिकांश शेयर काउल के नाम कर दिए। इस तरह काउल भारत की प्रसिद्ध चमड़ा कंपनी के मैनेजिंग डायरेक्टर बने। मालिक की विधवा-पत्नी और उनके अन्य आश्रितों की जी-जान से उनके अंतिम दिनों तक उन्होंने सेवा की।

बीच-बीच में वह स्मगलिंग करने लगे। सोना विदेशों से चोरी छुपे आता था। गैर-कानूनी ढंग से विदेशी मुद्रा जमा करने लगे। वह शराब पीने लगे। बदनाम औरतों के साथ मित्रता बढ़ाने लगे। रेस-कोर्स में जाने लगे।

" दास साहब! यह मेरा कलंक भरा इतिहास है। सड़क के कूड़े-कर्कट की तरह दुर्गंधमय। मगर जो कीड़ा परिस्थितिवश उस नर्क में पैदा होता है, उसके लिए और कोई विकल्प जीवन में संभव नहीं हो पाता है। मैं फिर सोचता हूं यह जिंदगी क्या खराब है?"

नृत्य धीमा पड़ रहा था। शराब के जाम खाली हो गए थे। रात ढल चुकी थी। सुबह होने वाली थी। किसी उत्तर की प्रत्याशा नहीं थी। उस समय काउल कुछ उपलब्धि पाने की अवस्था में नहीं थे।

4.

दिन के करीब एक बजे होंगे। जब काउल आए, तब तक रेस-कोर्स में पहली दौड़ के लिए घोड़े मैदान में आ चुके थे। हर रेस के शुरू में छह-सात घोड़े दौड़ेंगे, उन पर जॉकी बैठकर जुआ-खिलाड़ियों को खेलने के नियम बताने के लिए पहले छोटे मैदान में घोड़ों को घुमाते थे। चारों तरफ लकड़ी की बाद का घेरा। इस मैदान के बीच में एक पेड़ था। उसकी छाया के नीचे घोड़ों के मालिकों के बैठने के लिए डनलप की गद्दी पेड़ के चारों तरफ बिछाई हुई थी। घोड़ों पर नंबर लगे हुए थे। रेसिंग-बुक में प्रत्येक घोड़े और उसके जॉकी का नाम लिखा हुआ था। उसके मालिक का परिचय, उसका वजन और घोड़े का छोटा-मोटा इतिहास- कौन-सा घोड़ा कितनी बार जीता है, उसका संक्षिप्त वर्णन किया हुआ था।

मनुष्य के खून के साथ ही जुआ का जन्म हुआ है। व्यक्ति के मौलिक चरित्र के साथ-साथ जुआ मेल खाता है, ऐसा मनोवैज्ञानिकों का मानना है। अफ्रीका के आदिवासियों से लेकर न्यूयार्क के आधुनिक व्यक्ति पर्यंत सभी जुए के आदि होते हैं। तत्कालीन धर्म भी इस बात की छूट देता था। यहां तक कि बाइबिल में भी इसके विरुद्ध कोई निर्देश नहीं है। प्राचीन रोम में जुआ खेला जाता था, जिसके लिए उन्हें अपनी स्वाधीनता का भी परित्याग करना पड़ा था। कहा जाता था, हारने के बाद उन्हें दास बनना पड़ता था। चीन देश में जुए में हारने वालों के हाथ-पांव तक काट दिए जाते थे। सूडान और पश्चिम अफ्रीका के आदिवासी लोग अपनी पत्नी और पुत्र सबको दांव पर लगा देते थे। हमारे महाभारत की भी तो यही कहानी है। आगस्टस, नीरो और अन्य सम्राटों ने राजकोष के धनोपार्जन तथा राजमहल बनाने के लिए लॉटरी प्रथा की शुरुआत की थी। सन 1951 में इस विषय में एक आयोग बैठा था। जिसके हिसाब से एक साल में दस करोड रुपए का जुआ केवल इंग्लैंड में खेला गया। सन1950 के हिसाब से पता चलता है कि एक साल में अमेरिका में केवल मशीन के जरिए 80 करोड रुपए का जुआ खेला गया। कहा जाता है कि सदैव समाज के आदमी खाप नहीं खाता। इसलिए वह भविष्य के साथ संघर्ष करता है। भय, मनोवैज्ञानिक अनिश्चितता और अस्वस्तिकर परिस्थिति से मुक्ति पाने के लिए वह संघर्ष करता है। इस प्रकार जुआ का जन्म होता है। यह ही जुआ की भित्ति है।

इतिहास की उसी पुरानी परंपरा का खून काउल के शरीर में बह रहा है। इन मनोवैज्ञानिक-सूत्रों से काउल भी प्रभावित है।

दुनिया का कोई ऐसा शहर नहीं बचा है, जहां काउल ने जुआ नहीं खेला होगा। क्या लंदन, क्या पेरिस, बर्लिन, टोक्यो या हांगकांग! उनके मत से मौंटेकार्लो जुआ खेलने के लिए सबसे बढ़िया जगह है, जहां उसकी सात्विक भाव से पूजा की जाती है। दुनियाभर के बिगड़ैल राजा-महाराजाओं के दल, यूरोप की धनाढ्य विधवाएं, उच्छृंखल युवक-गोष्ठी इस महान संस्था के पृष्ठ-पोषक है। छोटे से शहर में विशाल गिरिजाघर की तरह एक विशाल महल नजर आता है, जहां पर कई तरह के जुए दिन-रात चलते रहते हैं। जिन लोगों को जिंदगी में कोई खास उत्साह नजर नहीं आता है, मौंटेकार्लो उस कमी को पूरा कर देता है। वहां पर सामाजिक समस्याओं से ऊपर उठकर मनुष्य को एक अपार्थिव जगत में पहुंचाने वाली हर प्रकार की व्यवस्थाएं हैं।

हमारे कोलकाता की घुड़दौड़ में मिस्टर केजरीवाल जैसे नवयुवक आते हैं। उनके पिता प्रत्येक भाई के लिए दो-दो लाख रुपए छोड़ गए हैं। एक भाई का आना-जाना है आडिनन्स डांस क्लब में, और दूसरे का रेस-कोर्स में। धन-मन लगाकर एक सांस में देखते हैं, 'रॉक पावर', 'क्वीन स्ट्रीट', 'मैजिक लेडी', 'विजया', 'धरती का चांद' वगैरह घोड़ों की दैनिक प्रगति। इनका बाप कौन है?मां आस्ट्रेलियन या आयरिश है? किस अस्तबल में पैदा हुए है? कौन किस मैदान में कैसे दौड़ा था? जाड़ों में सूरज की कोमल किरणें किसे अच्छी लगती हैं?भीगी जमीन पर किसके खुरों की टॉप ठीक रहती हैं? केजरीवाल इन सारी बातों की जानकारी रखते हैं। मद्रास में कौन कैसे दौड़ा था, दिल्ली में किसने किसको मात दी थी- वह भी कितने फासले से! सर्दियों में कोलकाता के मैदान में किस घोड़े ने मुंह मोड दिया था, सारा इतिहास केजरीवाल के पास मिल जाएगा। इतना ही नहीं, इन घोड़ों के पिता अभी आस्ट्रेलिया में क्या करते हैं, उनकी मां कैसी है, उनके शरीर में कौन-कौनसी बीमारी हुई है, सब-कुछ पता रखते हैं। केजरीवाल शनिवार की शाम से लेकर अगले शुक्रवार की शाम तक सारा हिसाब-किताब रखते थे। तर्क-वितर्क करते, इस घोड़े का 15 पाउंड वजन जरूर बढ़ा दिया गया है, मगर हर रेस के बाद घोड़े की दक्षता और 20 पाउंड बढ़ती है क्योंकि वह आयरलैंड का घोडा है। कोई देसी नहीं है! और फिर अंत में वह कहते हैं इतने वजन के बावजूद वह अलबत्ता जीतेगा ही जीतेगा। अंक-गणित और इतिहास का मिला-जुला समापन होता।
इसके अलावा वहां आते हैं मिस्टर जॉन जैसे एंग्लो इंडियन। जबसे यह रेस-कोर्स बना था, उस दिन से वे उसके साथ जुड़े हुए हैं। हालांकि, तब गोरे साहब हुआ करते थे। उस समय वह साहब लोगों के साथ रेस-कोर्स जाते थे और वे उनके लिए कोई न कोई काम निकाल लेते थे। कभी गेट पर तो कभी रेस्टोरेंट में। साहब लोग बीच-बीच में कोई पुरस्कार देते थे, हालांकि मिस्टर जॉन उपयुक्त टिप्स दिया करते थे। खिलाड़ियों के पास वह कई खबर पहुंचा देते थे। जैसे कि कौनसे जाकी ने किस घोड़े पर किसके जरिए कितना रुपया लगाया है। अगर जाकी ने लगाया तो वह घोडा जरूर **जी** सकता है क्योंकि वह घोड़ों को दूसरों से ज्यादा अच्छी तरह पहचानता है। मिस्टर जॉन ने जब से होश संभाला है तब से लेकर आज तक कोई खेल

नहीं छोड़ा है। उनके लिए वही उनकी धरती है, वही उनका घर है और वही खेल-परिसर उनकी समूची दुनिया है। खेल वाले दिन में वह सुबह-सुबह जगह देखने जाते हैं, जहां घोड़ों की ट्रायल होती थी। ये सारी चीजें अख़बारों में प्रकाशित होती थी। सुबह अमुक घोड़े ने इतने समय में इतने व्यवधानों के बावजूद भी यह रेस जीती है। इन सबसे सही निर्णय कभी नहीं हो सकता है, फिर भी कुछ न कुछ तो संकेत अवश्य मिल जाते हैं। अपरान्ह को उनके चांस पर अंदाज तो लगाया जा सकता है। मिस्टर जॉन अपनी खस्ताहालत के कारण खुद तो नहीं खेल पाते हैं, मगर यह आबोहवा, मैदान, घोड़े उनकी जिंदगी के लिए बहुत कुछ खास हिस्सा हो गए थे।

मिस्टर और मिसेज घोष का एवं मिस्टर और मिसेज सिंह का रास्ता कुछ अलग-अलग है। वे पेंसिल-कागज लेकर हमेशा रेस-कोर्स में घूमते रहते हैं। घोड़ों के मालिक प्रतिष्ठित ब्रोकर 'बुकमेकर' या फिर केजरीवाल जैसे लोगों से भेंट कर उनके विचारों के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं। जिस घोड़े के पक्ष में सबसे ज्यादा मत मिलते हैं, अखबार की भविष्यवाणी से मिलान करना उनका काम है। दोनों बैठकर लोकतान्त्रिक तरीके से हिसाब करते हैं कि किस घोड़े का चांस कितना परसेंट जीतने में है। उस घोड़े पर सारा पैसा नहीं लगाते हैं। एक पर विन तो दूसरे पर प्लेस लगाते हैं। जीतने पर पैसा जरूर कम मिलता है मगर हारने पर नुकसान भी तो उतना नहीं होता। यह परिपक्व नारीत्व की दुनियादारी का नतीजा है।
सभ्य-लोगों की गैलरी में मिस माथुर और मिस जैनी जैसी युवतियों की संख्या भी कम नहीं होती है। उनके प्रत्येक अंग सद्य यौवन से भरे हुए थे। उनके परिधान यौवन को अपने में आवृत्त नहीं कर पा रहा था। वे खासकर प्रोढ धनी लोगों के बीच में अपना परिचय देने के लिए कोशिश करती थी। निहायत कोई युवा हुआ तो उनके रूप से आकर्षित हो जाता। वृद्ध हुए तो इन तरुणियों के प्रति कोई स्वार्थ नहीं रखेगा। यौवन पार किए हुए मध्यवर्ती पुरुष आमतौर ऐसी स्त्रियों की ओर आकृष्ट होते हैं। वेअपना यौवन जाहिर करने के लिए अपना सारा पैसा लगा देते हैं, सहायता करते हैं। बदले में नारी से उनकी मामूली सी मांग होती है। वे लोग मिस जैनी या मिस माथुर के लिए टिकट खरीद देंगे, ड्रिंक्स ला देंगे, अतिथि-सत्कार करेंगे और अंत में उनके घर तक लिफ्ट दे देंगे। फिर्पो या मोगांबो में डिनर भी खिला सकते हैं। ठीक शिकार की तलाश में ये लोग घूमते रहते हैं।
इन सब दलों से कुछ-कुछ लेकर मिस्टर काउल का गठन हुआ है। इनसे थोड़े अलग हैं। केजरीवाल का भी कुछ-कुछ अनुकरण करता हैं। जॉन की तरह इस वायुमंडल का नशा अभी उनकी धमनियों में कुछ मात्रा में है। घोष और सिंह की हिसाबी-किताबी बुद्धि से वह पूरी तरह मुक्त नहीं है। प्रोढ़ न होने पर भी कभी-कभी जैनी और माथुर जैसी युवतियों के दल या बड़बाजार की बाईयों को आश्रय देते हैं। कभी-कभी खेलने की इच्छा न होने पर भी वहां घूम-घूमकर सरकारी दफ्तरों के नामी अधिकारियों या वकीलों को गैलरी में साथ देते हैं, प्राइवेट बार में।

मगर काउल की एक खासियत है कि वह औरों से कम ही मिलते हैं। उनमें विलक्षण इंट्यूशन या अंत:शक्ति हैं। वे अखबार देखते हैं, जाकी से समझौता करते है, हिसाब रखते हैं, इतिहास समझते हैं, मगर इन सबको उनके अंतर की आवाज टाल देती थी। जब वह बाड़े के अंदर घोड़े को खुद देखते तो बीच-बीच में उनका मन कह देता, "देख, घोड़ा जो चला जा रहा है, उसकी आंखें देख, उसके खुरों को देख। कंधे की गोलाई का अंदाज लगा। उसके विजय के नशे पर गौर कर। इसके माथे पर तो जीत का सेहरा बंधा हुआ है। यही तुम्हारी चॉइस है। इसके पीछे जाओ। पाँच हजार, सात हजार, दस हजार। " काउल उस वक्त बेचैन हो जाते हैं। सीने में एक पागलपन सवार हो जाता है। आंखें लाल हो जाती है। शरीर में सिहरन फैल जाती है। बुकिंग करने वाले से कहते सात नंबर घोड़े पर मेरे पाँच हजार। घंटी बजती है। घोड़े सब चले जाते है रेस ट्रेक पर। दूरबीन से उठती हुई सफ़ेद टेप देखते हैं। सब घोड़े दौड़ना शुरू कर देते हैं। खुद मानो घोड़े की काया में प्रवेश कर गए हो। एक के बाद एक दौड़ते चले जा रहे हैं। आखरी राउंड नजदीक आ गया। जैसे काउल सभी को पीछे छोड़कर नशे में आगे बढ़ गए हैं। चारों ओर शोरगुल मचता है। तालियाँ बजने लगती हैं। उसी बीच उनका घोडा जीत गया। काउल की कमीज पसीने से भीग गया था मानो वह खुद दो हजार मीटर दौड़ कर आए हैं। उस दिन उन्होंने 25, 000 जीते।
मगर कई बार उनका भी मन धोखा दे जाता है। जितना भी घोड़े को देखने से मन में कोई स्पंदन नहीं आ पाता। पता नहीं चलता कि क्या परिणाम होगा? वह लापरवाही से बुकिंग काउंटर पर पहुंचते हैं। जो मन में आता उस पर नंबर लगा देते हैं। कई बार हार भी जाते है, मगर कई बार जीत भी जाते हैं। उनके साथ अचानक यह सब होता रहता है।

मजाक-मजाक में यह कहा जाता हैं कि घुड़दौड़ और क्रिकेट के सिवाय अब कॉमनवेल्थ देशों के पास मिलने के लिए कोई भी विषय नहीं है। मगर सबसे पहले ईसा पूर्व 624 में ग्रीस देश में घुड़दौड़ शुरू हुई थी और रोम में पराकाष्ठा पर पहुंची। वर्तमान में जैसे आयरिश घोड़े की कदर होती हैं, उस समय अरबी घोड़ों की होती हैं।
सन 1174 ईस्वी में हेनेरी द्वितीय के जमाने में यह खेल विलायत पहुंच गया। मगर इसमें बड़े-बड़े राजा ही केवल भाग ले सकते थे। रिचर्ड्स के जमाने से प्राइज के साथ खेल की शुरुआत हुई। इंग्लैंड में सोलहवीं शताब्दी में घुड़दौड़ दर्शन और व्यवसाय के रूप में प्रतिष्ठित हुई। इसके लिए विभिन्न देशों से घोड़े आए। आज भी उनके वंशजों को रॉयल मेयर कहा जाता है। तब जॉकी बड़ी इज्जत का पद हुआ करता था। हैंडीकैप की बात आई। घोड़े की ठीक नस्लें पैदा करने की बात उस समय तय की गई। तबसे यह प्रथा सारी दुनिया में लागू हो गई। बुनियाद देखकर मां-बाप तय कर लिए जाते हैं और उसके अनुसार बच्चा पैदा कराया जाता है। वे पुख्ता दौड़ वाले घोड़े बनते हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देश और वर्ण के बाद सिर्फ इसी जाति में आज तक विवाह मिलन संभव हो पाया है।

जो लोग घुड़दौड़ देखने जाते हैं, उसमें उनके लिए दुनिया की और कोई चीज उतनी महत्व नहीं रखती। अगर कोई कहता है कि तुम्हारा लड़का भयंकर बीमार है, जल्दी घर आओ, उत्तर मिलता है-ठीक है, उसे खत्म होने दो, फिर आऊँगा। कोई कहता कि तुम्हारी बीवी का एक्सीडेंट हो गया है, अस्पताल में है तो उत्तर मिलता-ठीक है, उसका पता दे दो, रेस समाप्त होने के बाद पहुंच रहा हूं। दुनिया की कोई भी बात उन्हें वहां से खींचकर नहीं ले जा सकती थी। यह तो एक ऐसा नशा था, जो खेल खत्म होने के बाद ही उतरता था। अगर कोई डेडहीट हो रही है यानी एक ही समय में गार पर दोनों घोड़ों के टॉप पड़े हैं तो कौन जीतेगा, कौन हारेगा, इस बात का फैसला फोटो के प्रमाण से होगा। ट्रैक की आखिरी रेखा पर क्रमशः फोटो लिए जाते थे, उसे पार करने पर ही खेल की बाजी पूरी होती थी। उस समय उत्कंठा और उत्तेजना से बढ़कर और कोई चीज नहीं होती थी। अगर एक घोडा दूसरे घोड़े के सामने से जाकर पार करता है तो यह जीत जीत नहीं होगी। इसे नियम के विरुद्ध माना जाएगा। साथ ही साथ खिलाड़ियों या जॉकी की तरफ से आपत्ति आएगी। आपत्ति करने पर मैदान में खंबे पर तिकोना लाल बॉक्स लगाया जाएगा। इसके स्टूवर्ड की बैठक होगी, दस-पंद्रह मिनट में फैसला हो जाएगा। आपत्ति युक्तिसंगत है या नहीं, इसके अनुसार फैसले की घोषणा की जाएगी। फिर वैसे ही एक सफेद बॉक्स तिकोना ऊपर उठेगा। इन खिलाड़ियों के लिए जीवन में इससे बड़ा क्षण और कोई नहीं होता।

कई दिनों के बाद काउल शहर में लौटे। -कोर्स पहुंचते-पहुंचते उन्हें मिस जेनी मिल गई। उसने काउल की खूब जमकर प्रशंसा की, उनके रूप और खेल के करामत की। वह कहने लगी, "आपके बिना लंबे अरसे से एकाकी हूँ। आज मौका मिला है। आज पराजय का बदला लूँगी। "आज काउल उसे जरूर जिताएंगे। काउल उस दिन खूब उत्साह में थे। लेबनान से लौटे थे। जैनी के अनुरोध को सुनकर उसे जिताने का वायदा किया। इसके अलावा, आज जेनी जितनी सुंदर दिख रही है, कौन स्वामी विवेकानंद है, जो उसकी अवहेलना कर पाएगा। ?काउल अपनी सारी बुद्धि खेलने में लगा दी। अपने लिए एक हजार और जेनी के पाँच सौ। पहला दौर समाप्त हुआ। काउल ने जिस घोड़े पर दांव लागया था, वह बेचारा पीछे रह गया। काउल हारे, जेनी भी।

काउल ने कहा, "डियर, यह तो शुरुआत है! पहली विजय, यात्रा का शुभ-लक्षण नहीं होती। अभी तो बहुत खेल खेलने बाकी है। "

चुप खड़े हो गए दोनों उसी पेड़ के नीचे। फिर कोकाकोला पिया। दोबारा रेस के लिए घोड़े आकर खड़े हुए। काउल ने कहा, " जेनी! इस बार तीन नंबर। देखना तुम्हारे रूप की करामत। घोड़ा एक बार तुम्हें देख ले। तुम उससे कह दो तुम उसके पीछे हो। इतने राजा-महाराजाओं की श्रद्धा के पात्र हो, यह तुम्हारी उपेक्षा नहीं करेगा। अबकी बार पुरानी हार को मिटाकर नया विजय-ध्वज फहराएँगे। इस पर मेरे दो हजार और तुम्हारे पाँच सौ। जीतने पर पाओगी सोलह हजार। "

तनिक हंसते हुए कहने लगे, "इस हफ्ते चलेंगे साइगन-हनीमून की तरह मौज-मस्ती करेंगे। " घंटी बजी। घोड़े दौड़े। तीन नंबर का घोडा दूसरे नंबर आया। फिर से हारे काउल और जेनी।

काउल ने समझाया, "जेनी डियर! हिंदू-शास्त्रों में मान्यता है कि वीर तीसरी बार में जीतता है। विजयलक्ष्मी वीर के धैर्य और साहस की परीक्षा लेती है। इस बार अपनी बारी है। हिंदू शास्त्रों में एक का नाम लिखा है। इस बार हम दोनों का नाम लिपिबद्ध हो जाएगा। "
अबकी बार 'लेडीलव' घोड़े पर उसने पाँच हजार रुपए लगाए। मगर विजय की दिल्ली बहुत दूर थी। इस बार भी काउल हार गया। इस पराजय से जेनी बहुत दुखी हुई। उसका उत्साह ठंडा पड़ गया। काउल ने फिर समझाया, "डार्लिंग! इतनी जल्दी क्या हम हार मान लेंगे? मौके अभी बहुत पड़े है। धीरज रखो प्रिय। वीरभोग्य वसुंधरा। "
चौथे खेल के लिए काउल और जेनी तैयार हुए। किन्तु पराजय का सिलसिला समाप्त नहीं हुआ। पांचवें-छठवें में भी वही हाल। पराजय की चोट गहरी होती जा रही थी। जेनी के होठों की लिपस्टिक सुख गई थी, उसके चेहरे का रंग फीका पड़ गया था। तब तक काउल बीस हजार रुपए हार चुके थे। दोस्तों से पंद्रह हजार उधार लिए। उसे चुकताकर फिर जितना होगा। मौके भी कम होते जा रहे थे। काउल अपने अंदर थोड़ी सी बेचैनी अनुभव कर रहे थे। जाड़ों में दिनों में उन्हें गर्मी लग रही थी।
आंध्रप्रदेश में जब कानून के बल पर उनकी जमींदारी खत्म हुई। बुद्धमूर्ति को हर्जाने में एक लाख रुपए मिले थे। आंध्र में उसके दोस्तों ने कहा, "इन पैसों को बढ़ाना होगा, वरना इन पैसों से पहले वाली प्रतिष्ठा और मान-सम्मान नहीं रख पाएंगे। आपका तो कोई उत्तराधिकारी नहीं है, जो इस दुनिया को चलाएगा? यह सब दो-चार साल में खत्म हो जाएगा। फिर अंधेरा ही अंधेरा। आपको खुद अपना भविष्य बनाना होगा। इस उम्र में तो व्यवसाय होगा नहीं! जल्दी कमाई का एकमात्र तरीका है हॉर्सरेस, घुड़दौड़। "
मिस्टर मूर्ति को भाग्य और जन्मपत्री में पूरा भरोसा था। साथ में भारत के विख्यात ज्योतिष शकराचार्य थे। उनको लेकर इस घुड़दौड़ में आए हैं। कई दिनों से वह इसी दिन के इंतजार में थे। ग्रहों का कैसा अद्भुत मिलन था उस दिन! जीत निश्चित थी। शंकराचार्य की ज्योतिष विद्या अमेरिका में भी प्रसिद्ध थी। उनकी मदद के लिए इस नई जगह में एक पक्के पुराने दलाल, स्टॉक एक्सचेंज के खिलाड़ी मिस्टर चटर्जी आए थे। दोनों विचार-विमर्श करते थे, किस घोड़े पर कितना पैसा लगाना है। मिस्टर चटर्जी का भी अपना कमीशन बंधा हुआ था। फिर पता चला कि ज्योतिषी का भी कुछ हिस्सा बंधा था। हालांकि, यह अधर्मी और खल लोगों का दुष्प्रचार है।

छह खेलों में जब मूर्ति महाशय हारते गए, ज्योतिषी ने समझाया कि समय थोड़ा खराब हो गया था। अब चार बजे का समय शुभ है। जो होना होगा, इसी घड़ी में हो जाएगा। सारे जीवन में यही श्रेष्ठ मुहूर्त है। ऐसा समय उनके जीवन अतीत में कभी नहीं आयाऔर भविष्य में भी कभी नहीं आएगा। इस वक्त का अगर उचित प्रयोग नहीं किया गया तो समय हाथ

से निकल जाएगा। फिर शुरू होगा खराब समय। बुद्धमूर्ति के दोनों हाथ पकड़कर वे उसे लाना-लेजाना कर रहे थे। बुद्ध मूर्ति ने कहा, "शरीर कुछ भारी-भारी लग रहा है। मैं यही प्रतीक्षा करता हूं। तुम लोग जाओ। इस समय हमें अपने सारे काम पूरे करने होंगे। इसमें किसी भी प्रकार की देर मत करो। बाकी जो दांव लगाना है, लगा दो। "

बुद्ध अपनी आगामी विजय का हिसाबी आकलन कर रहे थे। तब तक उनकी पूंजी लगभग आधी हो गई थी। मिस्टर चटर्जी और शंकराचार्य बाकी पैसे लेकर निकल पड़े। वृद्ध उस मैदान से थोड़ा दूर एक पेड़ की छाया में बैठते बैठते अनजाने में नीचे गिर पड़े। सातवीं रेस के लिए घोड़े मैदान में पहुंच गए थे।

मिस्टर काउल ने जैनी के कंधों पर हाथ रखकर घोड़ों की ओर देख रहे थे। पांच नंबर वाला घोड़ा उधर से गुजरा। काउल को पहली बार अपने भीतर उसी अंतरनिर्देश, आत्म-दर्शन की अनुभूति हो रही थी। घोड़े की आंखों में झाँकने लगे। उसके खुरों की तरफ देखने लगे। अपने अंदर फिर वही सिहरन महसूस हो रही थी। विजय की खुमारी उनकी आँखों को लाल कर रही थी। एक दोस्त ने आकर उनके कान में कहा, "काउल! जेनी अशुभ है। उसे साथ में रखोगे तो हार होगी। उसे छोड़ दो, फिर देखना अंतिम रेस में किस्मत कैसे चमकती है! "

जो उन्माद, प्रेरणा, अंतर-शक्ति उनके निर्दिष्ट फैसले के लिए तैयार थी, काउल उसी में डूबे हुए थे। क्रमशः उनका यह विचार पक्का होता जा रहा था कि "रॉक-पावर" की आंखों में जीत का नशा है। यही नशा उनकी आँखों में खिल उठा। इस बार दोनों की विजय निश्चित हैं। पाँच नंबर के घोड़े "रॉक-पावर" पर दांव लगाने का निश्चय किया। इस बार लगाएंगे समूचे पंद्रह हजार। उनकी विजय अनिवार्य है। यह उनका अंतर-निर्देश है। इंट्यूशन सही होगा। आज तक कभी भी इंट्यूशन खाली नहीं गया है, आज भी नहीं जाएगा। वह बुकिंग ऑफिस की तरफ बढ़ गए, पीछे से किसी की आवाज सुनाई दी। किसी मनुष्य की कराह। पीछे मुड़कर उन्होंने देखा कि कोई बूढ़ा पेड़ के नीचे गिरा हुआ कराह रहा है।

उधर मैदान में खिलाड़ी आखरी रेस के लिए बाजी लगाने व्यस्त थे। जो विजयी हुआ था वह अपना सब-कुछ दांव लगाने के लिए तैयार बैठा हुआ था। जो हार गया था, वह समूचा जीतना चाहता था। एकग्रचित्त भाव से सभी घोड़ों की तरफ देख रहे थे।

काउल ने कहा, "जैनी! मुड़कर देखो उस वृद्ध को। शायद बीमार हो गया है। फिसलकर नीचे गिर गया है। दुख पा रहा है। "

जैनी की आंखों में नफरत के भाव नजर आ रहे थे। उपेक्षा के स्वर में उसने कहा, "काउल! नजर घोड़े पर रखो, वह बूढ़ा अंतिम रेस में नहीं दौड़ेगा। "

काउल ने कुछ समय के लिए जेनी की तरफ देखा। फिर उसके कंधे से हाथ हटाकर कहने लगे, "मैं थोड़ा देखकर आता हूं। "

जेनी ने काउल का हाथ कसकर पकड़ा और कहा, "काउल! अपना इंट्यूशन काम में लगाओ। आज मेरा सारा दिन बर्बाद हो गया है। थोड़ी मदद करो। तुम्हें वहां जाने की कोई जरूरत नहीं है। "

काउल ने जेनी के हाथ से अपना हाथ छुड़ा लिया। कहने लगे, " कुछ समय के लिए मुझे माफ कर दो। "

उन्होंने एक बार घोड़े की तरफ देखा, दूसरी बार उस बूढ़े की तरफ। आखिरकर बूढ़े के पास चले गए। जो मित्र काउल को जेनी के बारे में उपदेश दे रहे थे, वे अब जेनी के जूड़े पर हाथ रखकर कहने लगे, " जेनी जल्दी चलो! आखरी बाजी मेरे साथ और आज की पहली शाम तुम्हारे साथ। दोनों में जीत तुम्हारी है। "

काउल ने सुना, पीछे से जेनी उसे कह रही थी, "कायर-कॉवर्ड"। वह बंधु और जेनी साथ-साथ काउंटर की तरफ चले गए।

काउल ने देखा कि बूढ़े के मुंह से लार सहित झाग निकल रहे थे। काउल ने दोनों हाथों से बूढ़े को उठाया। अकेले क्लब के ऑफिस के आगे ले जाकर उसे बैठाया। पानी लाकर आंखों पर छींटे मारे। कुछ समय बाद बड़ी मुश्किल से उसने अपनी आंखें खोली और कष्ट से पूछा, "कौन शंकराचार्य या चटर्जी?"

घबराहट हुई। बेचेनी हुई। काउल ने क्लब ऑफिस से फोन पर डॉक्टर को बुलाया। फिर बूढ़े की तबीयत देखने के लिए कमरे में लौट आए। बूढ़े की आंखें तरस गई थी। शरीर निर्जीव। काउल ने बूढ़े को स्पर्श किया। बूढ़ा मर गया था। रेसकोर्स में जनता चिल्ला रही थी। "कम ऑन, कम ऑन"

बाहर आकर उन्होने देखा तो वही पांच नंबर वाला घोडा जीत गया था। विजयी हुआ था वही "रॉक पावर"। किन्तु उन्हें समय नहीं मिला, उस पर दांव खेलने का। वह अभिभूत हो गए थे, भूल गए थे अपने खेल की बात, भूल गए थे अपने विजय का नशा। चाहते तो आज हार की क्षतिपूर्ति कर सकते थे इस अंतिम दौड़ में। जीत का सम्मान, ढेर सारा धन प्राप्त कर सकते थे इस शाम को रंगीन। मगर उनके लिए बूढ़े की धँसी हुई आँखें, विवर्ण रूप, निस्तेज चेहरा, लाचार जिंदगी ज्यादा महत्त्वपूर्ण थी।

धीरे-धीरे रेसकोर्स कंपाउंड से वह बाहर निकल आएं। जैनी और उसके दोनों साथियों से गेट पर मुलाक़ात हुई। जेनी ने काउल से कहा, " डार्लिंग, चिंता मत करो, कोशिश करने पर किस्मत बदल जाती है। जीत के लिए खेलना सीखो काउल, सेवा नहीं। गुड बाय। "

जेनी के चेहरे पर व्यंग के भाव थे।

येरूशलम में जिस दिन ईसा को क्रूस पर चढ़ाकर उच्छृंखल पागल जनता लौट रही थी, उनके प्रति ईसा की यही प्रार्थना थी-भगवान, उन्हें क्षमा कर दो! ये लोग नहीं जानते हैं, आज क्या कर रहे हैं!

मन-ही-मन काउल सोचने लगे, "जेनी! सारी मानवता की तरफ से भगवान के आगे मैं तुम्हारे खातिर क्षमा मांग लेता हूं, तुम्हारी धूर्तता के लिए, तुम्हारी उपेक्षा के लिए। "

थोड़ा हंसकर काउल ने कहा, "गुडबाय। "

5.

नवंबर की शाम। ठंडी-ठंडी हवा नायलॉन के परदों से होती हुई कमरे में सीधी प्रवेश कर रही थी। कमरे की एक दीवार पर दुशासन द्वारा द्रौपदी के वस्त्र-हरण का चित्र टंगा हुआ था। चित्र में द्रोपदी लगभग नग्न थी। चित्र में उसका प्रतिवाद मामूली लग रहा था। काउल ने सोचा कि शायद द्रौपदी को अपने पंच पतियों या कर्ण के आगे अपना रूप-सौंदर्य दिखाने का अच्छा मौका मिला है। दुर्योधन पूरे उत्साह के साथ दिखाई दे रहा था। नीले प्लास्टिक पेंट **ट** पर सोडियम लाइट का प्रकाश कमरे में उन्माद पैदा कर रहा था। एक कोने में छोटी-सी तिपाई पर कांच के गिलास में फूलों का गुलदस्ता रखा हुआ था। दूसरी तरफ किसी सुंदर बलिष्ठ युवक की गोदी में सोई हुई नारी का चित्र बना हुआ था। दरवाजे के पास, दीवार पर एक कोणार्क जैसी केली-क्रीडा में रत नर-नारी की मूर्ति रखी हुई थी। पास में एक बड़े पर्दे की ओट में सरोज, तबला और हारमोनियम रखा हुआ था। कमरे के बीच में सफ़ेद चादर से ढका एक मोटा गद्दा बिछा हुआ था। जिसके चारों ओर मखमली खोल वाले गोल तकिए सजे हुए थे। दीवार के सहारे लिपटी हुई हरी लताएं कुंजवन का माहौल बना रही थी। काउल प्रतीक्षा कर रहे थे। तभी फूल वाले ने आकर मल्ली-फूलों का गजरा काउल के गले में डाल दिया। काउल को सलाम किया। काउल ने दस रुपए के नोट में एक रुपए का नगद सिक्का बांध कर फूल वाले की पेड़ी की तरफ फेंक दिया।

कुछ समय के बाद पर्दे के पीछे से घुंघरुओं की हल्की-हल्की छमछम की आवाज उस कमरे में गूंजने लगी। फिर बाईजी का आर्विभाव होता है। उसके शरीर पर नीली साड़ी, होठों पर गुलाबी रंग और माथे पर दीपशिखा का एक त्रिकोणी टीका। काउल ने अपनी जेब से गुलाब की कली बाहर निकाली और बाईजी के पास जाकर कहा, "हजूर की मेहरबानी हो तो दोनों कलियाँ एक साथ हो जाए। " काउल ने बाईजी के सिर पर हाथ रखकर नीचे कर दिया। बाईजी ने सलाम कर अपनी सहमति जताई। काउल ने वह फूल बाईजी की बेणी में खोंस दिया। पास आने के कारण बाईजी की 'इवनिंग इन पेरिस' वाली महक उनके मन में भर गई।

" बाईजी! आसमान की तरह रूप असीम होता है, आपको देखे बिना एतबार नहीं होगा। आज स्वर्ग में उर्वशी भी ईर्ष्या से जल रही होगी। "

पिछले महीने भर से काउल हर शाम उनके मुजरे में हाजिर हो रहे थे।

“स्वर्गलोक की उर्वशी को पाना जितना आसान है, मृत्यलोक के इन काउल साहब को पाना उतना ही कठिन है। चिड़िया से भी ज्यादा चंचल और भँवरे से ज्यादा अस्थाई। ”

“तुम मुझे भूल जाओ तो यह हक है तुम्हारा।
मेरी बात कुछ और है मैंने तो मोहब्बत की है।
मेरे दिल की, मेरे जज्बात की कीमत क्या।
उलझे-उलझे उन ख्यालातों की कीमत क्या।
मैंने क्यों प्यार किया, तुमने न क्यों प्यार किया।
इन परेशान सवालत की कीमत क्या।
तुम यों यह भी न बताइए, यह हक है तुमको
मेरी बात कुछ और है मैंने तो मोहब्बत की है। ”

काउल ने गले से गजरा निकालकर की बाईजी के कदमों में रखकर कहने लगे, “बाईजी! तेरे कदमों के घुंघरू चाहे न बजे, मगर यह काउल आज से तेरे चारु कदमों के आलिंगन का गुलाम रहेगा। ”
“तुमको दुनिया के गम और दर्द से फुर्सत न सही
सबसे उलफत सही मुझसे ही मुहब्बत न सही
मै तुम्हारी हूँ, यह मेरे लिए क्या कम है
तुम मेरे होके रहो, यह मेरी किस्मत न सही
और भी दिल को जलाओ तो यह हक है तुमको। ”

बाईजी ने कहा, “वाह! वाह! गजब है आपकी शायरी। ”

“काउलजी, खिदमत का मौका दें? कुछ पेश करूं? व्हिस्की, रम, वाइन?”

हर रोज बाईजी इस तरह की भाषा में खिदमत करती है।

काउल ने कहा, “चिंता मत करो बाईजी, मैं आज अकेले नहीं हूँ। फारस देश के हृदयस्थली से चुराकर लाया हूँ शैंपन। जिस बगीचे में यह पैदा हुई है, वहीं से लाया हूँ। ”

ड्राइवर ने शैंपन और साथ में शैंपन पीने के प्याले लाकर दे दिए। काउल की गाड़ी में पीने के लिए अलग-अलग किस्म की शराब का इंतजाम हमेशा रहता हैं।
शैंपन के दो प्याले भरकर काउल ने एक बाईजी के लिए उठाया। बाईजी ने हाथ जोड़कर मना कर दिया।

काउल ने कहा, “तुम तो खुद शराब का नशा हो। शराब तुम्हारे आगे फीकी है। तुम तो खुद ही फूलों की सुगंध हो। फूलों की तुम्हें क्या जरुरत है?तुम तो खुद संगीत के सुर हो, संगीत तुम्हारे लिए अहैतुक है। ”
मुजरा शुरू हो गया। सरोज, तबला बज उठे। बाईजी ख्याल, गजल, ठुमरी और भजन गाने लगी। ममता के निवेदन के साथ, उर्वशी के अमर प्रेम गीतों पर राधा के अभिसार में वह नाचने लगी।
नृत्य-संगीत के बीच बाईजी ईशारे करती। घूंघट के भीतर अपनी घूमती आँखों से वह निमंत्रण देती। नाचती आँखों और रंगीन होठों का यह आमंत्रण काउल के रोम-रोम को आहलाद्वित कर रहा था। काउल ने बाई जी को छूने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाया। बाईजी ने उनकी इच्छा का आदर करते हुए सलाम किया। नूपुर बज उठे। सारा माहौल झंकृत हो गया। काउल के स्नायु उत्तेजित हो गए। सारा शरीर उच्छृंखल हो गया। उठकर पुष्पमाला को बाईजी के गले में डाल दिया। नूपुर की झंकार तेज होती गई। सुरों की लहरों में कशिश बढ़ती गई। काउल बेकाबू हो गए।
रात शैशव **पार्कर** जवान हो चुकी थी। घंटे पर घंटे बीत गए, काउल को पता ही नहीं चला। धीरे-धीरे काउल सुरा, सुंदरी और संगीत की मादकता से मतवाले होते चले गए। पता नहीं क्यों, काउल आज इतने उन्मत्त हो गए! पिछले कई दिनों से काउल बराबर बाईजी के पास आ रहे थे, मगर आज तो नशे में एकदम पागल हो जा रहे थे।

“बाईजी, उत्तेजित करने की जिसमें क्षमता है, वही उसे शांत करने की ताकत भी रखता है। निर्वापित कर दो इस आलोकमाला को। जिससे तुम्हारे रूप में यह प्रेम का ताज चमक उठे। अपने आलिंगन-पाश में मेरी धडकनों को शांत कर दो। उसका उचित इनाम भी मिलेगा। ”
काउल दोनों हाथ फैलाकर आलिंगन की इच्छा जताते हुए कहने लगे, “अब एक लम्हे की देर बर्दाश्त नहीं होती। ”

बाईजी चुपचाप बैठी थी। अपनी हस्त-रेखाएँ देख रही थी। बीच-बीच में उधर देख लेती थी। कुछ समय बाद वह कहने लगी, “काउलजी! स्नायु की शांति के लिए आराम की जरूरत है, उत्तेजना की नहीं। फिर अब तो सवेरा होने जा रहा है। ”
काउल ने कहा, “हां, रात इस मिलन के आखिरी पलों तक अलबत्ता इंतजार करेगी। यह मेरी ज़िम्मेदारी है, बस, तुम अपना कर्तव्य पूरा करो। ”
काउल बाईजी के कदमों में उसके हाथ थामकर जमीन पर लौटने लगे।

“ कर्तव्य? अपना कर्तव्य तो कब से निभा रही हूं, काउल साहब। आपको साथ दे रही हूँ। नाच-गान कर रही हूँ। किसी में कोई कमी रह गई है तो कहो?”

“बाईजी! मजाक मत करो। काउल ने कभी प्रतिदान देने में कमी नहीं रखी है। तुम्हारी जबान से जो निकलेगा, आज की रात के सेवा के तौर पर वही सौगात दूंगा। ”
काउल कहते जा रहे थे, “बाईजी, वक्त बर्बाद हो रहा है। दुखी हो जाएगी यह रात, कष्ट पाएगा यह प्रेम, तकलीफ होगी दोनों दिलों को। ”

“ काउल, तुम्हारे साथ मिले बहुत दिन नहीं हुए। मगर इन कुछ दिनों में आपका ऐसा ईशारा तो आज पहली बार देख रही हूं। ” थोड़ा मुस्कुराकर बाई जी ने कहा, “क्या पारस से लौटने का यह नतीजा तो नहीं है?”
काउल इधर-उधर की बातें सुनने के लिए तैयार नहीं थे। वह नारी शरीर के जरिए पाशविक शक्ति की प्रखर विजय चाहते थे। इस समय जिंदगी की बाकी सारी बातें उनके लिए हेय, मूल्यहीन और अहैतुक थी।

अपने दोनों हाथों से बाईजी के शरीर को उन्होंने पकड़कर कहने लगे, “निष्प्रभ करो इस आलोक को। मेरे वक्ष की अग्नि शांत हो जाए। ” उनके होठ कांपने लगे। सारे शरीर में उन्माद छा गया।

खूब प्रयास करने के बाद धीरे से बाईजी ने सावधानी से खुद को काउल से अलग कर दिया। “काउलजी, जरा होश में आओ। ” बाईजी की आवाज में दृढ़ता थी।

काउल ने कहा, “मुझे कुछ पल अपना पौरुषत्व सिद्ध करने में मदद करो, बाईजी और फिर सुनूंगा जिंदगी भर, जो कहोगी। ”
कुछ समय जमीन पर मूर्तिवत बैठी रही बाईजी। तानपुरा हटा दिया, घुंघरू खोल दिए, घूँघट से मुंह बाहर निकाल दिया। संयत भाव से काउल की तरफ देखने लगी। काउल के बिल्कुल करीब जाकर उनके हाथों को अपने हाथों में ले लिया। कहने लगी, “काउल, पता नहीं क्यों, पिछले कुछ दिनों में तुम्हें अपना समझने लगी थी। आज तुम मुझसे क्या चाहते हो?”
“तुम्हारे गुलाबी होठ, तुम्हारा गरम बदन। ”
“मन के बिना ये सब बेकार है, काउल। ”
“ बाईजी, मन शरीर के पीछे दौड़ता है। शरीर में सिर्फ एक भूख होती है और मन शरीर में होता है। ”
“ठीक है, काउल! जरा अंदर चलो। ” धीमे-से उसने कहा। बाईजी हाथ पकड़कर काउल को एक अंधेरे सुनसान कमरे में ले गई। चांद के चमक जैसी सफेद कोठरी। दीवार पर तांडव करते हुए शिव का चित्र बना हुआ था। कोने में दुर्गा की छोटी मूर्ति के नीचे अगरबत्ती जल रही थी। यहाँ न कोई
ऐसी मादकता थी, न कोई ऐसे ईशारे। देवी-प्रतिमा की तरह इस परिसर में पवित्र वातावरण था। एक छोटी-सी खटिया मच्छरदानी से ढकी हुई थी।

बाईजी काउल को वहाँ लेकर गई। मच्छरदानी ऊपर उठाई। काउल ने देखा, वहाँ एक नन्हा शांत कोमल शिशु निश्चिंतता से सो रहा था।

काउल का नशा काफ़ूर हो गया। पूछने लगा, "बाईजी, यह तुम्हारा है?" बिना कुछ उत्तर दिए वह काउल की तरफ विनय भरी निगाहों से देखती रही।

"काउल, यह मेरे मातृत्व का गौरव है। नारी का गर्व है, जो आज मेरे लिए लज्जा की विषय - वस्तु बन रहा है। अपनी प्रतिष्ठा के आगे अवरोधक है। "

"बाईजी, यह तो नारीत्व की अवश्यंभावी परिणीति है! उसमें दुखी होने की कोई बात नहीं है। "

"हम सभी लोग परिस्थितियों को दोष देते हैं, उसकी दुहाई देकर यथार्थ में हम कितने कुकर्म कर डालते हैं। मैं भी एक दिन वही बात कर रही थी, जिस दिन मैं बाल-विधवा बनी। बनारस में अन्य लोगों के साथ शामिल हो गई। वहां समाज था, वहां जाती-प्रथा थी। सब-कुछ छोड़कर मैं बाईजी बन गई। नृत्य-संगीत में भाग लेने लगी। "

तभी बच्चा उठ गया। बाईजी ने उसे गोद में लिया।
काउल ने पूछा, "और यह बच्चा?"
" इसकी एक लंबी कहानी है! तुम्हारे पास समय नहीं है और सुनने की जरूरत भी नहीं है। फिर अपनी प्रेम-कहानी किसी परपुरुष को सुनाना अच्छा नहीं लगता। "
"बाईजी, जो शांति तुमसे चाहता था, वह थी मेरे शरीर के स्नायु-मण्डल की। उसे शांत करने के लिए कोई कमी नहीं है इस महानगरी में। मगर शायद तुम्हारी जिंदगी में प्रेम-कहानी का अभाव है और ऐसे भी मैं प्यार-व्यार में कोई विश्वास नहीं करता। शायद तुम्हारे जीवन से कुछ सीख मिल जाए। "
बाईजी ने काउल को बैठने का संकेत किया।
बाईजी की आंखें अतीत की यादों से भर चुकी थी। अपने प्रेम की गौरव-गाथा वह कहने लगी, "करीब चार-पाँच वर्ष पहले की बात है। मैं ग्रामोफोन के रिकॉर्ड पर नाच-गाने का अभ्यास कर रही थी। पाँवों में घुंघरू बंधे हुए थे। आज भी याद है, वह गीत एक भजन था। अंदर माता-पिता भाई सब सो गए थे। रात काफी हो गई थी। तभी किसी सुंदर सलोने चेहरे वाले युवक ने अचानक मेरे कमरे में प्रवेश किया। उसकी उम्र भी कोई खास नहीं थी। वह कहने लगा, "बाई जी, सलाम! कुछ नाच-गाना हो सकेगा? हालांकि कुछ देर हो गई है ...... फिर भी.......... "

मुझे लगा जैसे वह खूब घबराया हुआ था। नृत्य-संगीत के लिए नहीं आया था, न मेरे लिए आया था। शायद वह कहीं से भाग कर आया था। रिकॉर्ड चालू ही था।

कहने लगा, “बाईजी!   शराब होगी?”
“शायद थोड़ी-बहुत हो। बाहर से तो इस वक्त मंगवाई नहीं जा सकती?”

घर पर थोड़ी-सी व्हिस्की थी, मैंने लाकर उसके सामने रख दी।
वह फिर पूछने लगा, “बाईजी रात खत्म होने का नाच-गान देखने-सुनने का कितना देना पड़ेगा?”
मैंने कह दिया, “हजार। ”
हाथ से घड़ी, अंगुली से अंगूठी, गले से सोने की चेन निकालकर मेरे हाथ में रखते हुए कहने लगा, “इनकी कीमत डेढ़ हजार से कम नहीं होगी। सवेरे बाजार में बेच कर पैसे ला दूंगा। ऐतबार करो। फ़िलहाल ये सब रख लो। मगर मुजरा हो जाए, बस। ” विनतीपूर्ण आवाज थी उसकी। वह व्हिस्की पीए जा रहा था, मगर पूरी तरह से नौसिखिया लग रहा था।
मैंने कहा, “देखिए, मैं गिरवी नहीं रखती हूँ। आज नहीं तो कल दे देंगे। हर शाम आपके लिए मुजरा करूंगी। ”
अतिशय अनुनय-विनय के साथ वह कहने लगा, “अभी नहीं करोगी?”
“नहीं, माफ कीजिए। ”
दरवाजा खोलकर वह जाने ही वाला था कि अचानक पुलिस अंदर आ गई। पूछने लगी, “ यह आदमी कौन है?”
मैंने कहा, “नाम तो पता नहीं, मगर काफी देर से मुजरा सुन रहे हैं। ”
पता नहीं क्यों मेरे मुंह से यह अचानक निकल पड़ा। मेरे नारीत्व को स्पर्श किए बिना भी मेरे अंदर उसकी असहायता और अपरिपक्वता मातृत्व के भाव जागृत कर रहे थे। शायद मां की ममता वाली प्रवृति के कारण मेरे मुंह से वैसा उत्तर निकला।

मैं एक और रिकॉर्ड लगाया। पुलिसवाले पर्दे की ओट में खड़े थे। मैंने नाचना शुरू किया। जी भर मैं नाची। वे सोचने लगे थे, शायद इसे कोई अभिशाप मिला है जो मेरे घुंघरू की झंकार के बंद होते ही मिट जाएगा। मैं जीवन में सदैव नाची थी अन्य के साथ संभोग-संसर्ग के लिए। मगर किसी के जीवन-मुक्ति के लिए पहली बार नाच रही थी।
उस आदमी की आँखों में आँसू थे। एक रिकॉर्ड पूरा होने पर दूसरा फिर से लगाकर मैं नाचने लगी।

कुछ समय के बाद पुलिस चली गई। पर्दा हटा कर मैंने देखा, वहां कोई नहीं था गेट बंद कर मैं उसके सामने आ खड़ी हुई। मेरे पांव पकड़कर बहुत देर तक वह चुपचाप बैठा रहा।

मैंने पूछा, “कौन हो तुम?”

उसने अपनी सारी बात बता दी। वह किसी संभ्रांत घर का शिक्षित युवक था। उसके मां-बाप नहीं थे। संपत्ति के लोभ में उनके परिवार वालों ने उसे किसी हत्याकांड में फँसाने की चाल चली थी। वह घबराकर घर से भाग निकला था।

मेरे घर में उसे आश्रय मिला। वह मेरे पास ठहर गया। क्या करूं, कुछ सोच नहीं कर पा रही थी। वह भी नुकीले तीर से शिकार हुई मरणासन्न हिरणी की तरह छटपटा रहा था। उसे देखकर मुझे दया आ रही थी। वह उसी गद्दे पर सो गया। देखते-देखते रात बीत गई।

सुबह हडबडाकर वह उठ गया। उसने पूछा, “मैं कहां हूं?”
कुछ समय तक वह मेरी तरफ देखता रहा और कहने लगा, “व्यर्थ आपको कष्ट दिया। यह घड़ी, चेन, अंगूठी रख लीजिए आपकी रात की भेंट-स्वरूप। ”

यह कहकर एक ही सांस में वह कमरे से बाहर निकल गया।

अगले दिन पुलिस ने उसे पकड़ लिया। जेल से उसने मुझे पत्र लिखा, “बाईजी! मैं आपका नाम तो नहीं जानता। मेरा अपना इस दुनिया में कोई नहीं है। अगर संभव हो तो मेरी जमानत करवाने में सहयोग करें। जिंदगी भर आपका अहसान मानूंगा। ”

उसे जमानत पर छुड़वा लाई। वह यहीं पर रहा। मैं उससे प्यार करने लगी। मन ही मन मैंने उससे शादी कर ली।

कितनी रात मैंने उसे अपनी गोद में लिटाकर उसकी हिम्मत बंधाई। मैंने कहा, “ दोनों मिलकर इसका मुकाबला करेंगे। आज से आप दुनिया में अकेले नहीं हो। मेरी सारी संपत्ति तुम्हारी है। ”

एक दिन उसने पूछा, “मेरे लिए सब-कुछ कर सकोगी?”
मैंने हामी भर दी।
वह कहने लगा, “यह धंधा छोड़ दो। ”उस दिन मैंने गीत गाना और नाचना बंद कर दिया।
इधर मुकदमा चलता रहा। बहुत धन चाहिए था। मैंने घर और गहने बेच दिए। बैंक की जमा पूंजी ख़त्म होती गई। मगर काउल, उस गर्व की अनुभूति तुम्हें किस भाषा में समझाऊं! जिसे तुम दिलो-जान से चाहते हो उसके लिए भिखारी बनने में भी गौरव अनुभव होता है।

इस तरह कुछ दिन बीत गए। मेरा सारा पैसा खत्म हो गया। मगर हृदय अमीर हो चला।

इस शिशु ने जन्म लिया। उस समय हम दोनों को अभावों ने चारों ओर से घेर लिया था। मैं उसे आँचल में **ढककर** रखती थी। समाज के आक्रमण, पड़ोसियों के व्यंग मैं अपने ऊपर ले

लेती थी। उन्हें पता नहीं चलने देती थी। अपने पास छुपाकर रखती थी। शहर से दूर एक बस्ती में जाकर रहने लगी।

यह अवस्था भी ज्यादा दिन नहीं चल पाई। नारी के जीवन का साधारण सुख सौभाग्य भी मेरे भाग्य को बर्दाश्त नहीं हुआ। एक दिन अचानक मुझ पर बिजली गिरी। इस वज्रपात से मेरी छोटी दुनिया टूटकर बिखर गई। फौजदारी मुकदमे का फैसला हुआ। शायद जज ने उन असुरों की बात को मान लिया। उन्हें दोषी करार दिया गया। इस हत्या में उनका अपराध साबित कर दिया। मैं उस दिन कचहरी में फैसला सुनने गई थी। मैं पीछे बैठी हुई थी। कटघरे में वह खड़े थे। उन्हें आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई। मैं उसी क्षण खड़ी-खड़ी धड़ाम से गिर पड़ी।

पीड़ा से मैं छटपटा उठी। उनसे आंखें मिलाने की कोशिश की। उनके पास जाकर मैंने कहा, " दुखी मत होओ। अगर भगवान चाहेंगे तो फिर से इस केस पर विचार होगा"
उसने रोते-रोते हुए कहा, "यह सब झूठ है। "
पुलिस मुझे पकड़कर बाहर ले गई।
वह सिर नीचे कर रोते रहे। लज्जावश किसी की ओर नहीं देख रहे थे। पास में दूसरे पक्ष के लोग कह रहे थे, "वेश्या के घर में पड़ा रहता है, शराबी है, मौका पाकर दूसरों कि हत्या भी कर डालता है। अब बुद्धि ठिकाने आई। "
पुलिस उसे वैन में बिठाकर ले गई। वह मुझे देखते जा रहे थे। मेरे आंखों में जमे आंसुओं के कारण ठीक से दिखाई भी नहीं दे रहा था।
मेरा भगवान और उनके न्याय पर बहुत विश्वास था। उस दिन रात में सोचने लगी, "ध्रुव और प्रल्हाद इतने बड़े भक्त होने पर भी क्या उन्हें कम कष्ट सहने पड़े?सत्य की प्रतिष्ठा जरूर होगी। मैं वकील के पास गई। उन्होंने कहा, "अपील करने पर जरुर रिहा होंगे"
मेरे मन में आशा जागी। मैं अगले दिन जेल में उन्हें मिलने गई। पुलिस ने मुझे रोक कर काफी समय तक पूछताछ की, " तुम उसकी क्या लगती हो?" मैंने कहा, "उनकी पत्नी हूँ। "
यह सुनकर सभी ठहाका मार कर हंस पड़े।
आखिर वे मुझे जेलखाने में उनकी कोठारी के आगे ले गए। मैंने देखा, वह चारपाई पर लेटे हुए थे। चादर खींचकर उनके शरीर को स्पर्श किया तो वह निस्पंद थे। सीने की धड़कन रुक गई। सोचने लगी, यह धरती फट जाए, जैसे कभी सीता के लिए दो फाड़ हो गई थी। मैं और खड़ी नहीं रह सकी। लड़खड़ा कर नीचे गिर पड़ी।

उस दिन कचहरी से लौटते समय गाड़ी में जहर खाकर आत्म-हत्या कर ली थी। जहर छुपाकर साथ में ले गए थे।

मैं जेलखाने से बाहर आ गई। वह सामान्य जहर मुझे मिलना कठिन नहीं था, मगर लौटना पड़ा मुझे इस बच्चे की ममता के कारण। एक साल बाद फिर शुरू हो गया मुजरा। इस बच्चे के भविष्य को बचाने के लिए फिर से इस नर्क में आ गई।

बच्चे को गोद में लेकर बाईजी बिछौने के पास खड़ी थी। काउल ने बच्चे को अपनी गोद में लिया। सुंदर, सुकुमार बच्चा देखकर कहने लगे, "बाईजी......."

बात बीच में काटकर बाईजी ने कहा, "माफ करना काउल! यह नाम मुझे पसंद नहीं। मुझे आप नमिता कह सकते हो। कम से कम आप तो इस नाम से बुलाएं। "

काउल ने हंसकर कहा, "नमिता! इस माहौल में बच्चे की जिंदगी की खराब हो जाएगी। कोई आदर्श नहीं रहेगा। आगे जाकर वह **तुम्हारा सम्मान नहीं करेगा**। इसके जीवन का प्रभात ही टूट जाएगा। इसकी जिंदगी औरों के उपहास में मुरझा जाएगी, जिसे चाहा था उसके लिए इतना त्याग किया। इसके लिए भी तो कुछ करना होगा?"

नमिता ने कहा, "मैं नहीं जानती, आप कभी पिता भी बने हैं या नहीं। मगर मां का कोई भी त्याग अपने शिशु के लिए यथेष्ट नहीं है। "

काउल ने कहा, "विवाहित नहीं हूं। होने की भी आशा भी नहीं है। मगर मेरे अंदर पिता बनने की इच्छा है। इस बच्चे का दायित्व मुझे दो। मैं उसके पढ़ाई-लिखाई और रहने की व्यवस्था कर दूंगा। "
नमिता रोने लगी।
****

काउल ने बच्चों की पढ़ाई-लिखाई के लिए ट्रस्ट खोला। संग्रहीत रुपयों पर मिलने वाले ब्याज से अनेक असहाय बच्चों की परवरिश होने लगी। उन्हें हॉस्टल में रखा जाता था।

नमिता की बेटी इसी ट्रस्ट के जरिए हॉस्टल में रहकर एक कान्वेंट में पढ़ने लगी। बीच-बीच काउल जब शहर में आते थे, बच्चों को देखने के लिए स्कूल जरुर जाते थे। कभी-कभी नमिता भी उन्हें वहां मिल जाती थी।

नमिता हंसते हुए काउल से कहती, "तुम मेरे भग्न-देवता हो। "
काउल नमिता से कहते, "तुम मेरी नष्ट उर्वशी हो। "
आजकल जब काउल नमिता के घर जाते हैं, नमिता साजो-सामान उतार देती है, मुजरा नहीं करती है। काउल वहाँ शराबी नहीं छूते हैं। कहते हैं, "मैं दुनिया में सबकुछ सहन कर सकता हूं, मगर मातृत्व की उपेक्षा कभी नहीं कर सकता। "

6

फ्लैश का खेल जम रहा था। उस शाम क्लब में मिस्टर मुखर्जी खूब आक्रामक मूड में आए थे। क्लब में उनके साथ थे मिस्टर अली एंड मिस्टर भाटिया। खेल में काउल हार रहे थे। मुखर्जी के मन में कई दिनों से काउल पर क्रोध आ रहा था। काउल की उपेक्षा हमेशा मुखर्जी की मान-मर्यादा पर चोट पहुंचा रही थी। फिर एक मामूली व्यापारी के अहंकार को बर्दाश्त करना उनकी शक्ति का अपमान था। उसके ऊपर मिस नीना के मुंह से उनकी तारीफ वह सहन नहीं कर पाते थे। आज बदला लेने का मौका मिल ही गया।

"मिस्टर काउल! **जितना समझते हो, जीतना उतना आसान नहीं है**। यहां मिस्टर राव नहीं है, जिसे तुम ठग सकते हो। आज पराजय में सब-कुछ लुटा बैठोगे। बेहतर होगा, अपनी भलाई के लिए पीछे हट जाओ। " मुखर्जी ने दम्भ भरे स्वर में कहा।

काउल का मन ताश के पत्ते में था। इसलिए वह ठीक से समझ नहीं पाए कि किसने क्या कहा। काउल ने जवाब दिया, "काउल लुटा देगा सब-कुछ, मगर हारेगा नहीं। हां, हार-जीत का मतलब हर आदमी के लिए अलग-अलग होता है। "

मुखर्जी ऐसे अवज्ञा भरे उत्तर को सुनने के लिए तैयार नहीं थे। उनकी धमनियों में पुलिस-वंश का खून बह रहा था। कठोर स्वर में जवाब दिया, "राजनीति किए बिना भी चालबाजी में उस्ताद
लगते हो। "

काउल ने कहा, "**औरों की तरह चालबाजी की जा सकती है। और जो लोग राजनीति नहीं कर सकते, चाहूं तो मैं वह भी कर सकता हूं। "**

मुखर्जी साहब ने कहा, "इच्छा अगर घोड़ा होती तो कितने ही भिखमंगे उस पर चढ़कर घूमते फिरते। अगर इतना घमंड है तो दिखाओ अपनी मर्दानगी। "

मिस्टर काउल ने स्टेप दुगुना आकर दिए। टेबल पर पैसे फेंककर व्यंग्य से मिस्टर मुखर्जी की ओर देखकर कहने लगे, " मिस्टर मुखर्जी! काम में व्यस्त होने के कारण मैं अखबार नहीं पढ़ पाता हूँ। अगर कभी राजनीति का मौका मिलता है तो खबर करना, मैं अपनी मर्दानगी दिखा दूंगा। "

मिस्टर भाटिया ने कहा, "निरक्षरों को साक्षर करने का काम मुखर्जी का नहीं है। उनका दायित्व शांति-कानून व्यवस्था की रक्षा करना है। चाहो तो, अगले महीने नगर निगम का चुनाव होने वाला है। एक नेता बन जाइए न, अपनी मर्दानगी का प्रमाण मिल जाएगा। "

खुशामदी स्वर में मिस्टर अली ने कहा, "डिपोजिट रखने में कोई दिक्कत हो तो हमें कहना। हमारे घर में तीस लोग हैं। दोस्त की इज्जत के खातिर सहायता करने में हम लोग संकोच नहीं करेंगे। "

ताश के पत्ते उठे। काउल फिर हार गए।

अगली बार ताश के पत्ते बांटते समय मुखर्जी ने कहा, "खबर तो मिल गई, चुप क्यों हो?"

काउल ने निर्विकार भाव से मुखर्जी की तरफ देखते हुए कहा, " अगर मैं नगर निगम का चेयरमैन बन गया तो आपको कोई दिक्कत तो नहीं होगी?**चेयरमैन के पास बहुत से अधिकार-कानून पुलिस पर अंकुश रखने के लिए है। "**

क्रोध से लाल हो गए मुखर्जी। क्या जवाब देंगे, सोच नहीं पा रहे थे। लोग ऊंची आवाज में हंसने लगे। भाटिया और अली ने भी उनका साथ दिया।

काउल ने कहा, "तो फिर यह खेल का आख़िरी राउंड है। अगर मैं हारा तो दस हजार दूंगा और चेयरमैन चुनकर आ गया तो मुखर्जी आप दस हाजर देंगे। "भाटिया ने बीच में बात काटकर चिल्ला उठे, "उनको देने की कोई जरुरत नहीं है। उनकी तरफ से मैं दूंगा दस हजार। "

भाटिया का पूरे राज्य में शराब का कारोबार चलता है। अली ने कहा, "चेयरमैन पद के लिए पंद्रह हजार होने चाहिए, काउल साहब! दस हजार तो मेम्बर के लिए है। "मिस्टर अली लोहे के व्यापारी है।

काउल ने कहा, "अली साहब, आपकी हिम्मत की दाद देता हूँ। मगर एक शर्त है, मेरी जीत की अगली रात आप यहां रिसेप्शन पार्टी की व्यवस्था करेंगे। मिस नीरा को पहले से ही खबर देनी होगी ताकि वह समय निकालकर शाम को आ जाएँ। "

मुखर्जी, भाटिया और अली सभी काउल की ओर देखने लगे। सब के चेहरों में काउल के प्रति घृणा के भाव थे। **क्रोध से भरी यह जनमंडली उस दिन शाम को अपने-अपने घर चली गई** । काउल अपनी कोठरी पर लौट आए।

अगले चुनाव में चेयरमैन होना है तो गाड़ी में जाते समय लड़ाई की योजना तय कर ली। समय बचा था एक महीना। घर पहुंचकर अपने क्षेत्र के सभी अफसरों के मुंशियों को

फोनोग्राम किया। अन्य शहरों के अधिकारियों और प्रबन्धकों को टेलीफोन किया। अपने एजेंट और कुछ मित्रों को बुलवाया। नीना और उनकी सहेलियों को खबर दी गई।

दो दिन बाद उनके ड्राइंग रूम में एक छोटी-मोटी बैठक का आयोजन किया गया। उनके वार्ड के वोटरों का सर्वे किया गया। वोटरों को धर्म, गोष्ठी, आर्थिक हाल के आधार पर विभिन्न भागों में बांटा गया। पोस्टर और टेंपलेट आदि तय किए गए। काउल ने नॉमिनेशन फाइल किया। उनके नाम का शहर के सबसे बड़े वकील ने प्रस्ताव दिया, जिसका समर्थन शहर के नामी डॉक्टर ने किया। हर सौ आदमियों के पीछे एक कार्यकर्ता रखा गया। देश भर के उनके कर्मचारी, एजेंट मित्र वगैरह सब एक हुए। लिखा गया कि इस वार्ड में सात सड़कें, पांच अपर प्राइमरी स्कूल खोले जाएंगे। धार्मिक बुजुर्गों के लिए मंदिर की मरम्मत की जाएगी। युवकों के मिलने-जुलने के लिए क्लब खोले जाएंगे। हर रास्ते पर बिजली दी जाएगी। हर चौराहे के पास नल लगेगा। हर घर में पाइप जाएगा। सब तय कर दिया गया। केवल एक चीज तय नहीं हुई। वह था खर्च।
काउल ने कहा, आवश्यकता पड़ने पर पैसे की कोई सीमा नहीं रखी जाएगी। जरूरत ही उसकी सीमा तय करेगी। कोई भी कार्यकर्ता निसंकोच अपने कार्य की जरूरत के मुताबिक पैसा ले सकेगा।

चुनाव में काउल का मुकाबला शुक्लकेश सौम्यकांत पंडित जी से था। भारतीय इतिहास ने उनके शरीर पर असंख्य क्षत-विक्षत चिन्ह छोड़े हैं। ललाट की गहरी रेखाएँ इस बात का प्रमाण है। बचपन में उन्होंने वानर सेना तैयार की थी, सत्याग्रह किया था। जब और लोग मां- बाप की गोद में खेला करते थे, पंडितजी ने उस समय से सत्याग्रह मंडली में भाग लिया था। 'वंदे मातरम' का नारा देकर 'नमक सत्याग्रह' के जमाने में जेल में गए थे। उन दिनों उनकी नवविवाहिता पत्नी ने महामारी में दम तोड़ दिया। उन्होंने अनगिनत लाठियां की मार खाई थी। उनकी पीठ पर आज भी उसके दाग मौजूद थे। बीच-बीच में बच्चो को गांधीजी के चरित्र का उदाहरण देते हुए प्रमाण-स्वरूप अपने दाग भी दिखाकर उन्हें याद करा देते थे भारत की स्वाधीनता आंदोलन का गौरवमयी इतिहास। सन 1942 के आंदोलन के दिनों में उनका बेटा बीमार था। जेल में उन्हें पता चला कि वह इस इहलोक त्याग चुका है। दुनिया में वह परिवारहीन, निर्धन और एकाकी है।

पहनने के नाम पर केवल एक छोटी धोती और एक चादर। उनके लिए जीवन में औरों की सेवा के अलावा कोई उद्देश्य नहीं था। जब कभी नदी का बांध टूटने की आशंका होती तो सारी रात पंडितजी वहीं बैठकर निगरानी करेंगे। अगर कहीं **से** महामारी का प्रकोप होगा तो पंडितजी अपने जीवन की कुर्बानी कर देंगे। किसी पर विपदा आने पर सारी रात उसकी शय्या के पास बैठे रहेंगे। उन्होंने जीवन में जो कुछ सीखा, उससे उनके लिए घर-संसार बसाकर चैन

से रहना मुश्किल न था। कोई भी बात कहता तो जवाब देते हैं, वही जो आश्रम में गांधी जी को दिया था। आज गांधीजी इस दुनिया से चले गए तो क्या है प्रतिज्ञा तोड़ दे। उनकी आत्मा को दुख नहीं होगा।

काउल ने कई बार अपने प्रतिद्वंद्वी पंडित जी को देखा।
काउल चुनाव सभाओं में कहते, “यह सत्याग्रह का जमाना नहीं है। अब योजना का जमाना है। अब पीठ पर चाबुक के दाग जनप्रतिनिधि की योग्यता नहीं रह गई। दक्षता ही इस युग की कसौटी है। किसी आदमी के लिए आंसू बहाकर एंबुलेंस में साथ जाना जनप्रतिनिधि का कर्तव्य नहीं है। प्रतिनिधि को तो सारे समाज को देखना होगा, समुचित समाज की बीमारी देखनी है। सबके सुख-दुख का ख्याल रखना होगा। व्यक्तिगत उपकार की बजाय सामूहिक उन्नति की चिंता करनी होगी। ”
बीच-बीच में काउल पंडितजी को गाड़ी में बिठा कर सभाओं में ले जाते थे। दोनों प्रतिद्वंद्वी आमने-सामने होते। काउल भाषण के बहाने चुनौती देते हुए कहते, “बताइए, पंडितजी, आप प्रतिनिधि चुने गए तो क्या कर पाएंगे?मैं बना तो रास्ता ठीक करवा दूंगा, स्कूल..... । उसकी कीमत होगी लगभग तीस हजार रुपए। इस धन राशि का चेक मैं अभी दे रहा हूं। **अगर कौंसिल नहीं करेगी तो मैं समूहिक उन्नति पर ध्यान दूंगा**। अस्पताल जाना नहीं पड़ेगा। बच्चे मूर्ख नहीं रहेंगे। कोई बेरोजगार नहीं रहेगा। किसी क नौकरी नहीं मिली तो मैं अपने अनुष्ठानों में उन्हें नौकरी देने की व्यवस्था करूंगा। ”
काउल के लिए असंख्य कार्यकर्ताओं की कतार लग गई। ज़ोर-शोर से प्रचार होने लगा। काउल ने कहा, “इस नगर निगम के जरिए जो संभव हो सकेगा, मैं वह सब-कुछ करने को तैयार हूं। आप मुझे वोट देंगे तो मैं हर समस्या का समाधान कर दूंगा। ”
सभा में उपस्थित लोगों के सामने काउल ने पूछा, “पंडितजी बताइए, वर्तमान समय में आप क्या कर सकेंगे?”पंडितजी चुप रहे, सभा की जनता भी चुप रही।

वोट पड़े। काउल की चुनाव में जबरदस्त जीत हुई। काउल की कोठी पर लोगों का तांता बंधा । चारों तरफ से बधाई के संदेशों का दौर शुरू हो गया।
चुनाव के बाद विभिन्न दल के नेताओं और विशिष्ट कार्यकर्ताओं को उन्होंने अपने घर पर आमंत्रित किया। एक साथ नहीं, हर को एक-एककर आमंत्रित किया। प्रतिनिधियों ने काउल की नई जिंदगी का समर्थन किया। किसी ने कहा, “वर्तमान में देश को आपके जैसे उत्साही युवक का इंतजार है। राष्ट्रीय जीवन आपकी सहायता और सहयोग से ही पुष्ट होगा। ”
काउल ने सभी सदस्यों के आगे आश्वासन दिया। किसी के बेटे की कॉलेज में पढाने में मदद की। किसी के भाई को अपने व्यवसाय में लगाया। किसी की बेटी के विवाह के लिए काउल ने यथासंभव सहयोग किया। काउल ने कहा कि कोई भी राजनीतिक दल क्यों न हो, आज की स्थिति में नगर निगम में दलगत राजनीति उचित नहीं है। नगर निगम का चेयरमैन

निर्दलीय आदमी होना उचित है। काउल की बातों से उन नेताओं की भविष्य के प्रति आशा जगाई।

आखिर चेयरमैन के चुनाव का दिन आ गया। चारों ओर से काउंसिल में गणतंत्र को बचाने के लिए दलीय राजनीति से ऊपर उठकर काम करने की मांग हुई। निर्दलीय व्यक्ति को चेयरमैन के पद पर बैठाया जाए। काउल निर्दलीय है अतः उन्हे चेयरमैन बनाया जाए। दल के सदस्यों ने कहा, काउल हमारे निर्देशों के अनुसार चलेंगे, क्योंकि उनके पीछे कोई खास दल नहीं है! जनता के प्रतिनिधियों की मांग को काउल ने सिर झुकाकर स्वीकार किया और चेयरमैन के पद पर अधिष्ठित हो गए। काउल की योग्यता पर विचार कर विरोधियों ने अपना नाम वापस ले लिया। हालांकि काउल के बैंक बैलेंस में केवल पाँच हजार का फर्क पड़ा।

उस क्लब की शाम को गुजरे हुए महीने से ज्यादा हो चुका था, काउल एक बार भी क्लब नहीं आ सके थे। उन्होंने वहां देखा तो क्लब में मुखर्जी नहीं थे। उनकी तबीयत खराब थी। जरूरी काम से मिस्टर अली भी शहर छोड़कर बाहर चले गए थे। मिस्टर भाटिया शाम को अपनी बीमार मां की सेवा में व्यस्त थे। केवल नीना अपने कुछ मित्रों के साथ वहाँ मौजूद थी।

"नीना! अगर मैं सम्राट होता तो आज तुम इस शहर की साम्राज्ञी होती। तुम्हारी मदद की एवज मैं और क्या दे सकता था, कहो?"

मिस नीना अपने होठों पर जीभ फेरने लगी। कहने लगी, "चेयरमैन बनने में तो कोई रुकावट नहीं हुई?"
"नीना, आज मेरे साथ चलो। विजयी शाम एक साथ बिताएंगे। कल से बड़ा दायित्व मिलेगा। **शहर में बहुत बड़ी अभिनंदन सभा का आयोजन होगा**। मगर तुम्हें तो रहना होगा। कितने लोग, कितना स्वागत, कितने पुष्पहार .... तुम्हारे बिना कौन ग्रहण करेगा? नीना, मैं बहुत स्वार्थी हूं। यहां तक कि कुछ भी तुम्हारे लिए छोड़ने को तैयार नहीं हूँ। "

फिर दोनों गाड़ी में निकल पड़े। रात बिताकर अपने-अपने घर लौटे।

तीसरे दिन की शाम। काउल के स्वागत में भव्य पांडाल सजाया गया। पांडाल के सारे खंभे लाल-पीले कपड़ों में लिपटे हुए सुहावने दिख रहे थे। बीच-बीच में रंग-बिरंगे कपड़ों से मंच सजाया गया। पांडाल के बीच एक आकर्षक स्तम्भ पर नीली रोशनी की माला चारों तरफ लगी हुई थी। हर खंभे पर दो-तीन नियोन लाइट लगी हुई थी।

व्यापारी कहने लगे, काउल के कारण आज हमें समाज में प्रतिष्ठा मिली है। हमें छोटा समझने वाले अब ठिकाने पर आएंगे। गरीबों ने कहा, लखपति आज राजा बना। हमारे शहर

में और दुख-दर्द नहीं रहेगा। राजनीतिक नेता कहने लगे, इस आदमी के पीछे कोई समर्थन नहीं है। हमारे हाथ उठाने का इंतजार करते रहेगा। अब शुरू होगा, "कठपुतली का नाच"। जो हम चाहेंगे, इसके जरिए किया जाएगा। उधर बुद्धिजीवी कहने लगे, आज यह जो नई घटना घटी, इससे लगता है कि हमारे समाज में परिवर्तन आया है। यह विवर्तनवाद का अपरिवर्तनीय नियम है। आजतक जितने नेताओं के शासन किया, वे सब जमींदार वर्ग के थे। आधुनिक समाज को पूंजीवादी दल ने नियंत्रित कर लिया है। नेतृत्व में परिवर्तन आ रहा है। इसके बाद, समाज पर साम्यवादी लोगों का शासन होगा। विवर्तनवाद की जीत अवश्यंभावी है।

तालियों की गड़गड़ाहट, उत्साह, नारों के बीच काउल पंडाल पर पधारें। सारे जनसमूह को हाथ जोड़कर नमस्कार करते रहे। इतनी विराट जनता, इतनी आत्मीयता को देखकर काउल भाव-विह्वल हो गए। फिर वह अपने आसन पर जाकर विराजमान हो गए।

पंडितजी नगर वासियों की तरफ से भाषण देने के लिए खड़े हुए। अपने साधारण परिधान में। अपने ऐतिहासिक क्षत-विक्षत काया से माइक्रोफोन के सामने खड़े होकर काउल की योग्यता का गुणगान करने लगे।

कहने लगे, " अब व्यक्तिगत सेवा के दिन लद गए है। आज सामूहिक हित की चिंता चल रही है। आज त्याग का युग नहीं है - योजना का युग आ गया है। मनुष्य चाहता है कि बीमारी न रहे, बेरोजगारी दूर हो, नदी के तीर पर रात को ऊनींदे रहकर काम करने की कोई जरूरत न पड़े।

पंडितजी अपने आप के विरुद्ध बयान देते रहे। काउल के चुनाव प्रचार और उनके राजनीतिक जीवन के प्रारंभिक विजय का ओजस्वी भाषा में स्वागत किया।

जनता ने उनकी जय-जयकार की। पंडितजी ने काउल के चरित्र और सज्जनता पर प्रकाश डाला। किस तरह बचपन से ऐश्वर्य के साथ जीवन-यापन करते हुए राजनीति को धूल के समान हेय नहीं समझा, बल्कि साधारण आदमी की तरह रास्ते में घूम-घूमकर लोगों की भलाई के काम में लगे। पंडितजी ने काउल के गौरवमय शैशव और आधुनिक विचारधारा पर प्रकाश डाला।

काउल ने उनका सारा भाषण सुना। नीना की ओर झुककर कहा, "नीना, मुझे कैसा लगता है जानती हो! यह मेरा मजाक उड़ाया जा रहा है। यह मेरा अपमान है। यह सब भ्रम है। "

पंडितजी समझाते जा रहे थे, "इतनी कम उम्र में आपने अपने धर्म, कर्तव्यपरायणता और माता-पिता के आशीर्वाद से अपने व्यवसाय का इतना बड़ा साम्राज्य खड़ा किया है। भागीरथ की तरह सुख समृद्धि की मंदाकनी हमारे छोटे-से शहर में लाएँगे। "

काउल नीना को समझा रहे थे, “नीना! मैं धार्मिक, साधु और चरित्रवान! इन बातों का विरोध जरूरी है। यह सब झूठ है। ”

पंडितजी कहते गए, “आज मैंने अपने हाथों से एक छोटा-सा फूलों की माला गूँथी है। भले ही यह सुंदर न हो, मगर सत्य है। मैं हार्दिक शुभकामनाओं सहित यह माला भेंट करता हूँ। यह नवजीवन उनके लिए मंगलमय हो, यशस्वी हो। यह मेरे जीवन के आखिरी दिनों का उनके लिए आशीर्वाद है। ”

भाषण पूराकर पंडितजी ने माला काउल के गले में पहना दी। तालियों की गड़गड़ाहट से सभा-स्थल गूंज उठा।

उसी धारा-प्रवाह में एक के बाद एक वक्ता, नेता भाषण देते गए। काउल अपने गौरवशाली अतीत, दृढ़-चरित्र, साधुता, सद्भाव और धर्मपरायणता इत्यादि का गुणगान उनके मुख से सुनते जा रहे थे।

“नीना, यह झूठ है। यह छल है। इसका खंडन आवश्यक है। नहीं तो समाज नष्ट हो जाएगा , आदमी टूट जाएगा, आदमी का विश्वास खत्म हो जाएगा। पूजनीय आदमियों का सम्मान होना चाहिए। इनकी नजरों में जो निंदनीय कार्य है, उनका मुखौटा हटाना उचित है। नहीं तो यह धोखा-छल होगा। ”

नीना ने कहा, “काउल, ये सारी बातें सही है, मगर इसका प्रतिवाद कौन करेगा?”

आखिरी वक्ता ने अपने लंबे भाषण में कहा, “हमारे इस छोटे शहर में सुंदर मंदिर बनेगा। वहाँ धर्म-चर्चा होगी। मेरा प्रस्ताव है, उसका नाम “काउल-मंदिर” दिया जाए। ”सभी ने ताली बजाकर इस प्रस्ताव का समर्थन किया।

काउल अपनी संवर्धना का उत्तर देने के लिए खड़े हो गए। लोग धीर-स्थिर मुद्रा में बैठे हुए थे मानो एक सुई गिरने की आवाज भी सुनाई पड़ जाएगी। कुछ समय के लिए वह शांत खड़े रहे।
उन्होंने जनता का आग्रह, सम्मान, विश्वास देखा। मन-ही-मन उन्होंने जनता को प्रणाम किया।

वह कहने लगे, “शहर के भाइयों और बहनों! मैं भाषण देना नहीं जानता। पहली बार इतनी विराट जनता के सामने खड़ा हूं। यह पहला होगा या नहीं, मैं नहीं कह सकूंगा। मगर यह मेरा आखिरी भाषण है, इसमें कोई संदेह नहीं है। आज की सभा में मुझे कुछ नहीं कहना है। बस

कुछ सफाई देनी है। क्षमा मांगनी है। आप लोगों ने भी एक बहुत बड़ी भूल की है। भविष्य में फिर कभी ऐसा हुआ तो देश के दुख की सीमा नहीं रहेगी। मेरी चुनावी सफलता हमारे समाज के नीति-नियम और आचार-विचार के प्रति घोर अपमान है। पंडितजी ने जो कुछ मेरे बारे में कहा, वह बिलकुल झूठ है। मैंने जो अपना झूठा प्रचार किया, शायद आपने उस पर विश्वास कर लिया कि मैं एक साधु और महान व्यक्ति हूँ। मेरा जीवन तो पाप की एक लंबी दास्तान है। मैं शराबी हूं। मैं वैश्यागामी हूँ। मैं पक्का जुआरी हूं। मैं कालाबाजारी हूँ। मैं असाधु हूँ। मैं एकदम बुरा हूं। किसी भी धर्म में मेरा विश्वास नहीं है। मेरा किसी नीति-नियम से संबंध नहीं है। आप जो देख रहे थे, ये सब मेरे चुनाव का प्रचार था। मुझे कभी भी आशा नहीं थी कि लोग इन सब बातों पर विश्वास कर लेंगे और सत्य मान बैठेंगे। ”

“पंडितजी देवतुल्य है। मगर जो कुछ उन्होंने कहा, वह सही नहीं है। पहले आदमी को परखिये , गोष्ठी को नहीं। योजना किसी त्याग से ऊंची नहीं होती है। महत्त्व दक्षता से बढ़कर नहीं होती है। यह सब केवल प्रचार की बात है। धन-दौलत का नतीजा है। यह सब मेरे और मेरे जैसे लोगों की कृतकार्य का परिणाम है। ”

“मैं आप सबसे इस छल-कपट के लिए क्षमा चाहता हूं। **मैं लज्जित हूं कि मैंने ऐसे कृतकार्य किए**। आपने जिस काउल के जिस चरित्र को सम्मान दिया है, वह काउल मैं नहीं हूँ। जब मेरा मुखौटा खुलेगा, आप मेरा असली रुप जान पाएंगे। असलियत देखकर आप सहन नहीं कर पाएंगे। आप अपने आपको माफ नहीं कर पाएंगे। सोचेंगे कितना बड़ा ठग है। आप का मन दुख-ग्लानि से भर जाएगा। जो मान-सम्मान आप मुझे आज देने आए हैं, यह सम्मान पाने की योग्यता मुझ में नहीं है। इस लायक केवल एक ही आदमी है, वह है-पंडितजी। मेरी अगर कोई खासियत है तो वह मेरे पैसे की है। ये सारी चीजें मैं पंडितजी की सेवा में अर्पित कर रहा हूं। आप लोग मुझे विदा कीजिए। चेयरमैन के पद तथा काउंसिल की सदस्यता से मेरा इस्तीफा ग्रहण करें। ”

काउल ने अपने गले से माला निकालकर पंडितजी के गले में बड़े आदर के साथ पहना दी। उन्हें प्रणाम कर कहने लगे, “पंडितजी, मैं जिस दिन इसके लायक बनूंगा, उस दिन मैं इस माला को पहनने का अधिकारी हूंगा। ”
जनता की ओर हाथ उठाकर उन्होंने प्रणाम किया।
नीना की ओर मुड़कर कहा, “ चलो, नीना! ”
सब लोग स्तंभित, नीरव, निश्चल भाव से काउल की तरफ देखने लगे। सामने बैठे थे मिस्टर अली, मिस्टर भाटिया और बाकी दोस्त। पार्श्व में अटेंशन-मुद्रा में खड़े थे हैं मिस्टर मुखर्जी।

पंडाल से उतर गए करबद्ध काउल। धीरे-धीरे सभा-स्थल की ओर जाने लगे। जनता खड़ी हो गई। काउल सभा-स्थल से बाहर निकलकर धीरे-धीरे अपनी गाड़ी की ओर आगे बढ़े। एक दिन पितृ-सत्य और मातृ-आदेश पर राजसिंहासन परित्याग कर मर्यादा पुरुषोत्तम आर्य श्रीरामचन्द्र वनवास के लिए चल पड़े थे। आज हमारे काउल अपने विवेक-निर्देश पर व्यक्ति-सम्मान को बचाए रखने के लिए अपनी पद-प्रतिष्ठा छोड़कर चले गए।

गाड़ी रवाना हुई। नीना ने काउल को बाहों में भरकर कहने लगे, "ग्रेट! काउल, यू आर रियली ग्रेट! "

7

बिखरे केश, मधुर अधर, नम्र नेत्र और सुप्त नारी। श्वेत वस्त्र से ढका हुआ समूचा देह। निस्तब्ध रात्रि को ठंडी हवा इस निश्चल देह के वस्त्र को थोड़ा हिलाकर मृदु सिहरन पैदा कर रही थी। वातायन को भेदकर आ रही चांदनी उस नारी देह में प्राणों का संचार कर रही थी। इस झंकारमयी चांदनी रात में काउल अपलक चुपचाप उसे निहार रहे थे। अपेक्षित दैहिक उभार ही तो नारी का दूसरा नाम है। इसमें नूतनता क्या होगी?एशियन, यूरोशियन सभी को नजदीक से देखा है, उनका उपभोग किया है, क्या फर्क है?कुछ तो है, शारीरिक सुडौलता के अनुसार विविधता अवश्यंभावी है।

स्टेशन पर स्टेशन पार होते जा रहे थे, रेलगाड़ी की गति बढ़ती जा रही थी। मनुष्य में एक तरह की विशेष चीज होती है, जिसका नाम होता है-"लिबिडो"। यह शरीर में हलचल पैदा करती है। जब इसकी गति तेज होती है तो मनुष्य बहुत चंचल हो जाता है। यह चंचलता जब अधिक देर तक रहती है तो मनुष्य का साधारण मन-बुद्धि उसके आगे आत्मसमर्पण

कर देती हैं। इसके वशीभूत होकर वह त्याग देता है अपना राज्य, अपना सुख यहाँ तक कि अपना जीवन भी। मनोवैज्ञानिक इसे प्रेम कहते हैं।

विभिन्न परिस्थितियों की सीमा के भीतर शारीरिक मिलन के गंभीर प्रयास का नाम प्रेम है। मन भी तो शरीर का अंश है! मन तो केवल शारीरक जरूरतों को बल देता है, उन्हें साहचर्य प्रदान करता है। मगर इसकी उत्पत्ति-विलय शरीर में ही है। जो अन्य प्राणियों के लिए सामयिक मामूली-सी जीवन प्रक्रिया है, मनुष्य उस पर एक आवरण चढ़ा देता है। उसे एक नाम दे देता है 'प्रेम'। यह तत्ववेत्ताओं का मत है।

इस तर्क का मन-ही-मन काउल विश्लेषण कर रहे थे। अन्य असंख्य नारियों की तरह यह भी एक साधारण नारी है। खासियत बस इतनी है-रेल की खिड़की से उसके चेहरे पर अंधेरे-उजाले के आंख-मिचोली का खेल उसके चेहरे पर चंचलता ला रहा है। बस, सिर्फ यही फर्क है। नाइट क्लब में ग्लास ब्रेकर स्टेज पर नर्तकी के देह पर बीच-बीच में रोशनी बीच-बीच में अंधेरे की तरह। अंधेरा-उजाले का क्रमागत खेल और तेज संगीत दर्शकों के रोम-रोम में सिहरन पैदा कर देता है। इसी तरह आज भी रेल का संगीत नारी के मुख सौंदर्य पर धूप-छांव का नृत्य कर रहा हैं।

जनसमूह विश्वसनीय, शांतिपूर्ण होता है। उसका मुकाबला करने में कोई संदेह या तकलीफ नहीं होती है। अपने परिधान, दृष्टिकोण, कर्म में तुम पूरी तरह स्वतंत्र हो, निश्चिंत हो। मगर किसी व्यक्ति विशेष के समक्ष उपस्थित हो तो स्वयं को मर्यादित रखो। संयमित विचार रखने होंगे। यह हमेशा पैमाना होता है कि जो आदमी हमारे सामने बैठा है, उसकी प्रतिक्रिया पर ध्यान मत दो। उसके साथ तालमेल बैठाना पड़ेगा, चाहे कुछ समय के लिए ही।

काउल इसलिए जनसमुदाय को पसंद करता है। जब तक काउल प्लेटफार्म पर थे, प्रसन्न थे।
असंख्य लोगों के बीच अथवा जब तक उस कंपार्टमेंट में अन्य लोग उपस्थित थे। धीरे-धीरे वहां से पैसेंजर उतरते गए।
आधी रात को आख़री पैसेंजर भी उस डिब्बे से उतरकर चला गया। काउल और वह नारी डिब्बे में अकेले रह गए। काउल विचलित अनुभव कर रहे थे। शायद वह नारी भी ऐसा ही महसूस कर रही थी। वह बिस्तर से उठकर बैठ गई। काउल ने पूछा, "अकेले मेरे साथ रहने में कोई आपत्ति हो तो दूसरे कम्पार्टमेंट में पहुंचाने में आपकी मदद कर सकता हूँ। "

उस नारी ने कहा, "हां, थोड़ा संकोच जरूर है, मगर कोई संदेह नहीं। मगर मैं अस्वस्थ हूँ। इसलिए कोई साथ रहे तो हर्ज क्या है?फिर दूसरे कंपार्टमेंट में जाने पर अपरिचित मिलेंगे ही, जबकि आप तो कुछ परिचित हो चुके हैं। "

काउल ने कहा, “अगर जरूरत हो तो मेरी मदद लेने में आप किसी भी प्रकार का संकोच न करें। मेरी नींद वैसे गहरी है। मगर थोड़ी सी **आवाज से मेरी नींद टूट जाएगी**। मगर इसके लिए सबसे अच्छी दवाई रोशनी है। अगर उठाना हो तो इस स्विच को दबा देना। उजाला होते ही मेरी नींद टूटने में कोई संदेह नहीं है। ”

नारी ने कहा, “भगवान करे, ऐसी स्थिति न आए। मगर आपकी बात याद रखूंगी। ”

कुछ समय बाद वह नारी सो गई। चेहरे पर बीमारी के हाव-भाव साफ नजर आ रहे थे।

मगर सारी रात काउल अपलक प्रतीक्षा करते रहे। जरूरत पड़ने पर शायद वह नारी उनकी सहायता मांगे।

काउल सोच रहे थे कि इस नारी में ऐसी क्या खासियत है, जो इतने कम समय में उसके प्रति आसक्ति उत्पन्न हो गई। कुछ समझ नहीं पाए।

ऐसे ही रात बीत गई। सुबह ट्रेन मद्रास पहुंच गई। कंपार्टमेंट के बाथरुम से बाहर आकर काउल ने देखा कि वह नारी कंपार्टमेंट छोड़कर जा चुकी है। प्लेटफार्म पर उसे इधर-उधर खोजा। कुछ पता नहीं चला। काउल अपने घर आ गया। ड्राइवर गाड़ी लेकर स्टेशन आया था।

उस दिन सुबह जल्दी उठ कर दिनचर्या से निवृत्त होकर तैयार होते समय उसे पता चला कि टाइपिन खो गई है। स्विजरलैंड के ड्यूरीक से लाया था उसे। उस टाइपिन में छोटा सफ़ेद हीरा लगा हुआ था। वह पिन कमीज के बटन से मैच कर रही थी। अब शायद बटन बदलने होंगे। काउल कितना अंधविश्वासी था! व्यापारिक समस्याओं के संदर्भ में अन्य लोगों से बातचीत करते समय यदि किसी प्रकार की अशुभ परिस्थिति उपजती तो यह हीरा उस परिस्थिति को उनके अनुरूप बनाने में सहायक सिद्ध होता था, यह काउल की मान्यता थी। आज काउल के लिए खास दिन था। हांगकांग के व्यापारी-दल के साथ सवेरे बातचीत के दौरान निर्यात की जाने वाली वस्तुओं के दाम तय होने थे। व्यापार की दुनिया में इससे बड़ा कोई शुभ लग्न नहीं होता है।

सुबह होते-होते...

काउल बाजार की ओर चल पड़े। पहले श्रीखंडी संग्रह करना होगा। उसी तरह सोना, हीरा। वैसे ही टाइपिन। इतनी जल्दी दुकानें खुली भी नहीं है। खोजते-खोजते एक बनिए की दुकान पर पहुंचते समय लगभग एक घंटे की देर हो चुकी थी। काउंटर पर पहुंचकर काउल ने पूछा, “कोई इंपोर्टेंट चीज़ होगी? स्विस मेक? टाइपिन?”

सेल्समेन ने काउल को विभिन्न प्रकार के टाइपिन दिखाए। पास ही दूसरे काउंटर पर एक महिला खड़ी थी, उसके हाथ में सोने का हार था। दुकानदार कह रहा था, इसका वजन है..... सफ़ेद साड़ी में आवृत्त। सूखे बालों की एक लट आगे आकर झूल रही थी। **गर्दन और छाती की हड्डियों पर ब्लाउज चिपका हुआ था**। कानों में दो मामूली सोने के फूल। उन पर लगे हुए थे टाइपिन के जैसे सफेद डायमंड। शरीर में कोई जान नहीं। उत्साह नहीं। झील की तरह शांत, निराडंबर और अनासक्त।
शायद उनसे कहीं मुलाक़ात हुई होगी। हुई होगी, कोई नई बात नहीं है।
"इसका दाम होगा............ । आप चेक लेगी या नगद?"
"पूरे नगद। "

काउल देख रहे थे इस नारी की तरफ-विगत रात के ट्रेन में सहयात्री की तरह लग रही थी। चेहरा वैसे ही, होठ वैसे ही, रात के मद्धिम प्रकाश में ठीक से नहीं देख पा रहे थे उसे। मन में कौतूहल पैदा हुआ। इतनी सुबह यह नारी अकेली आकर गहने बेच रही है, एक अपरिचित शहर में।
"सर, और कोई टाइपिन नहीं है। अगर चाहो तो इसे ले जा सकते हैं। पर सफेद डायमंड नहीं मिल पाएगा। " सेल्समेन ने काउल को बताया।

दुकान से काउल बाहर निकले। नारी भी बाहर निकली। काउल ने पूछा, "पहचानती हो? गत रात ट्रेन में आपका सहयात्री। "

अत्यंत धीमे स्वर में उसने कहा, "नमस्ते। "
काउल ने नमस्ते का उत्तर दिया।

" कहां जा रही हो?" काउल ने पूछा।
"बस, थोड़ी ही दूर। एक परिचित मेहमान के यहां जा रही हूं। "
काउल ने गाड़ी की तरफ हाथ दिखाकर कहा, "चलो, गाड़ी में छोड़ दूँ?'
"माफ करें, मैं टैक्सी कर लूंगी। "

काउल टैक्सी खोजने के लिए फुटपाथ से सड़क की ओर गए। कुछ समय के लिए इधर-उधर खोजने लगे। मगर कोई टैक्सी नहीं मिली। पीछे मुड़ कर देखा तो वह नारी उनकी गाड़ी के सहारे आँखें बंद कर निस्तेज पड़ी हुई थी। वह तुरंत गाड़ी के पास लौटे। उसे जगाने की कोशिश की। मगर कोई उत्तर नहीं मिला। उसे हिलाया भी, कोई फायदा नहीं हुआ। ऐसा लग रहा था कि वह बेहोश हो गई हो। गाड़ी का दरवाजा खोलकर उसे पीछे की सीट पर सुला दिया। थर्मस से पानी निकालकर उसके मुंह पर छिड़कने लगे। अपनी गोद में सर रखकर चेहरा पानी से पोंछ दिया। बिखरे बालों को कान और ललाट से उठाकर गर्दन के पीछे कर

दिया। थोड़े समय बाद उस नारी ने आंखें खोली और फिर बंद कर दी। काउल धीरे-धीरे उसके माथे को सहलाते रहे। वह नारी पीड़ा से कराह रही थी। काउल के पैंट, शर्ट, रुमाल भीग चुके थे। उनके शर्ट के स्लीव और बटन पर आँसू की बूंदे गिरकर जम चुकी थी।

" थोड़ा पानी। "

काउल ने छोटे गिलास से पानी पिलाया। वह उनके मुंह को अपनी गोद में रखे हुए थे। ताकि उसे कोई असुविधा न होने पाए।
उस नारी को थोड़ा आराम मिला।

काउल ने पूछा, "तुम्हें अपने घर छोड़ दूँ ?"

उसने उठकर बैठने की भरसक कोशिश की। मगर सब बेकार। काउल ने उठने से नहीं रोका। शायद एक अपरिचित नारी एक अनजान आदमी के सानिध्य में असंकोच अनुभव कर रही हो।

"यह राजरास्ता है। फिर गाड़ी में दिक्कत होती होगी। चलो छोड़ आऊं मैं तुम्हें अपने ठिकाने पर। "
नारी ने कहा, "मेरे बैग में डायरी है। उसमें अस्पताल की पर्ची होगी। उसी पते पर लेकर चलिए, अनुकंपा होगी। "आंखें मूंदे पड़ी रही वह नारी।
काउल ने हैंडबैग खोलकर डायरी बाहर निकाली। डायरी के पन्नों के भीतर खुले लिफाफे में एक चिट्ठी पड़ी हुई थी। लिफाफे पर पता लिखा हुआ था- मनीषा चौधरी। लिफाफा खोलकर काउल ने पत्र पढ़ा। मेडिकल ऑफिसर के नाम पत्र लिखा हुआ था, उस दिन नर्सिंग होम में एडमिशन कराने के लिए। कुछ दिन रुकना होगा। फीस, घर का किराया आदि लिखा हुआ था। सारा भुगतान पहले से करना होगा। पता था कैंसर हॉस्पिटल नर्सिंग होम, चेन्नई।
काउल का सिर चकराने लगा।
ड्राइवर को अस्पताल चलने के लिए निर्देश दिए। मनीषा का सिर अभी भी उनकी गोद में था। गाड़ी की गति के साथ मनीषा का सिर हिल रहा था, हाथ से काउल उसे रोकते जा रहे थे। ड्राइवर से कहने लगे, "जरा आहिस्ता चलो। "
लिफाफे में एक और चिट्ठी थी।
किसी मित्र के नाम मनीषा का लिखा हुआ खत था।
"बंधु, मैंने बहुत वर्ष तक अंतहीन संघर्ष किया। **शायद जीवन पर थोड़ा-बहुत अनुसंधान कर पाऊँ**। यह मेरी आखिरी यात्रा है। तुम्हारा उपकार मैं जीवन भर नहीं भूल पाऊँगी। शायद और कितने दिन जीने की चेष्टा करूंगी। अगर संभव हुआ तो अस्पताल से खत लिखूंगी। मन में यही शांति कि चलो जिंदगी में मेरे लिए कोई आंसू बहाने वाला न था और न कोई रहेगा।

किसी के प्रति मेरा भी कोई कर्तव्य नहीं बचा है। जन्म-मरण तो मामूली रोजमर्रा की घटनाएँ हैं। दूसरों के लिए इनकी क्या खासियत हो सकती है?

॥इति॥

काउल ने एक दीर्घश्वास ली। मनीषा का चेहरा शांत, नीरव, निश्चल भाव से पड़ा हुआ था काउल की गोद में।

दोनों पत्र लिफाफे में रख दिए। गाड़ी नर्सिंग होम पहुंच गई थी। स्ट्रेचर पर रख कर निर्धारित कक्ष में ले जाया गया। डॉक्टर पहुंचे। रोगी की परीक्षा की गई।

बीमारी बढ़ती चली गई। छाती का कैंसर। मनीषा निस्तेज भाव से बिस्तर पर पड़ी हुई थी। किसी से कोई शिकवा नहीं। जिंदगी में उसे कुछ भी नहीं मिला। किसी से कोई आशा भी नहीं। मरुभूमि की बालू तरह मूल्यहीन, गंधहीन और अर्थहीन।

कोठरी से सब लोग जा चुके थे। काउल के हाथ में मनीषा का हैंडबेग था। उसमें से सारे कागज़ निकालकर काउल ने पढकर समझा मनीषा के जीवन के विक्षिप्त इतिहास। कभी पिता नैनीताल के रहने वाले थे। मां-पिता जल्दी चले गए इस दुनिया से। कोई सगा-संबंधी नहीं था। कुछ दिन पहले कलकत्ते की किसी कैंसर अस्पताल में इलाज के लिए गई हुई थी। वहाँ कुछ खास फर्क नहीं पड़ा। सारा धन इसके इलाज के लिए खर्च किया जा चुका था। फिर भी कोई आशा नहीं थी। इसलिए डॉक्टर ने आखिरी कोशिश के लिए उसे चेन्नई की इस कैंसर अस्पताल में भेजा था। उनका दृढ़ विश्वास था, बस वह कुछ महीने की मेहमान है। फिर यह
छोटा-सा दीप सदा-सदा के लिए बुझ जाएगा।

मनीषा ने फिर से आँखें खोली। उसके बिस्तर पर बैठकर काउल ने धीमे से पुकारा, “मनीषा! ”

जवाब देने भर की शक्ति नहीं थी मनीषा में।
“कष्ट हो रहा है?”
एक विनतीपूर्ण दर्दीली हंसी से देखती रही काउल की तरफ।
“सोने की कोशिश करो! ” निरीह शिशु की तरह मनीषा ने आंखें बंद कर ली। काउल ने चादर से उसका शरीर ढक दिया। अपनी घड़ी की ओर देखा तो उनके उस दिन के इंगेजमेंट का समय कब से निकल चुका था।
काउल ने नीचे उतरकर फॉर्म में गार्जियन की जगह अपना नाम लिख दिया। जरुरत होने पर किसे खबर दी जाए, उस जगह पर अपना पता लिख दिया। चेक काटकर डॉक्टर की फीस और नर्सिंग होम का किराया जमा करा दिया काउल ने। गहने बेचकर मिले पैसों को मनीषा

के बैग में डालकर ऑफिस में जमा करवा दिया। डॉक्टर को हिदायत दी गई कि मनीषा उनकी आत्मीय है। यथासंभव इसे बचा लें। जो कुछ करना होगा, उसके लिए वह तैयार है। इस फोन नंबर पर मुझे खबर देना, अगर कोई अर्जेंट जरूरत हो तो।

वहाँ से विदा लेकर काउल गाड़ी में बैठे। ड्राइवर को अपनी पूर्व निर्धारित एंगेजमेंट वाले कार्य-स्थल पर जाने के निर्देश दिए। गाड़ी में बैठे-बैठे अपने कोट की टाइ को संयत कर लिया। शर्ट के बटनों को रुमाल से साफ कर लिया। दफ्तर में पहुंचने पर पता चला कि मौसम की खराबी के कारण हवाईजहाज समय पर नहीं आ सका। आगंतुक लोग निर्धारित समय पर नहीं पहुँच पाए। काउल को उस दिन अपने ऑफिस का काम पूरा-पूरा करते करते दिन के दो बज गए। उस दिन काउल ने लंच होटल में लिया। फिर अपने कमरे में लेटकर अखबार पढ़ने लगे। अखबार के पीछे वाले पन्ने पर बनी एक फोटो उस दिन की खबर को बीच-बीच में याद दिला देती थी- मनीषा का बीमार सफेद बदन, विनती भरी निगाहें, असहाय होठ।

काउल की ऐसी धारणा थी कि किसी भी सामयिक प्रकृति ने उसे अपने जीवन में प्रभावित नहीं किया है। जीवन में उसने जो कुछ किया, धीर बुद्धि, स्थिर चित्त से। चाहे घोड़ों की रेस हो, चमड़े का व्यापार हो, यहाँ तक कि नारी उपभोग का प्रस्ताव क्यों न हो। पता नहीं क्यों, आज खुद पर थोड़ा संदेह हो रहा था। सोचने लगे, उसकी आंखें और होठों के समन्वय में कुछ बात जरूर है। लेकिन वह तो किसी शाम का सहारा बनने लायक भी नहीं है। फिर उसके साथ संबंध तो श्मशान की शोभायात्रा वाला संबंध है। केवल कुछ पल बाकी है।

क्लब में उस शाम उनकी मुलाक़ात हुई मिस्टर चौहान, मिस्टर सिंह, मैथ्यू और अनेक लोगों से। रमी का खेल चलता रहा रात के आखिरी प्रहर तक। खेल के लिए प्रेरित करते रहे मिस गुप्ता और जानी वाकर।

“डार्लिंग, तुम बहुत बड़े लकी हो। ”
“मिस गुप्ता, जीत आजकल की नारियों की तरह है। उपेक्षा करो तो आग्रह मिलेगा। ”

“तुम्हारे दंभ से घृणा करने पर भी तुम्हारे कृतकार्य का सम्मान करती हैं। ”

“रात के बचे-खुचे क्षणों में अपने सारे कृतकार्य तुम्हारे कदमों में समर्पित करता हूँ, मिस गुप्ता। ”

काउल नाटकीय अंदाज में सिर झुकाकर, हाथ हिलाकर सहमति प्रकट कर रहे थे।

अंत में खेल खत्म हुआ।
बटलर और चौकीदार ने उन्हें सलाम किया। चारों ओर से अर्धसुप्त ड्राइवर गाड़ी में लाइट लगाकर पोर्टिको तक चले आए। मिस गुप्ता और काउल चल पड़े काउल के फ्लैट की ओर।

सुबह उठने में देर हो चुकी थी। मिस गुप्ता बहुत पहले ही जा चुकी थी। एक कागज सिरहाने पर रखा हुआ था। उसमें लिखा हुआ था- “ब्रह्मचर्य प्रमाणित करने के लिए किसी नारी के साथ रात भर सोने की जरूरत नहीं है। अफसोस है कि मिस्टर काउल जैसे बुद्धिमान को यह बताना पड़ा। ”

गुप्ता

काउल ने कागज फाड़कर डस्टबिन में फेंक दिया। यथाशीघ्र तैयार हो गया नर्सिंग होम जाने के लिए।

रास्ते में कुछ फूल खरीद लिए। नर्सिंग होम पहुँचकर उन्हें देते हुए कहने लगे, “गुड मॉर्निंग। ”

मनीषा ने कृतज्ञता से काउल को नमस्कार किया।

बाएँ हाथ में एक अंगूठी पहनी हुई थी। जिसके ऊपर एक छोटा लाल पत्थर जड़ा हुआ था। नाखून लंबे और निस्तेज थे। बाकी उंगलिया नम्रता का सुंदर चित्र आंक रही थी।

“आज कैसा लग रहा है?”

मनीषा जरा-सी मुस्कुराई। कहने लगी, “कोलकाता में डॉक्टर हमेशा कहा करते थे, मनीषा! आज तुम्हारी अवस्था ‘बेटर’ है। मगर कहां कभी तो ‘गुड’ नहीं कह पाई। ”

काउल ने बात बदल दी।

कहने लगे, “अपने किसी आत्मीय के बारे में बता रही थी? उनके पते पर कुछ खबर करना है?”

“कोई जरूरत नहीं है। बस, वहाँ मेरा एक सूटकेस था, मंगवा लिया है। वह भी मेरे दूर-रिश्ते के हैं। कोई चारा नहीं मिला तो एक रात वहाँ रुकी थी। ”

कुछ सोचकर मनीषा गंभीर हो गई। भरे गले से पूछने लगी, “क्या मैं आपका नाम पूछ सकती हूं?”

“रमेश काउल। ”

“आप यहां ?”

“व्यापार करता हूं। पूरे भारत में। यहां भी हमारा केंद्र है। ”

“मैंने कल आपका वक्त और धीरज बर्बाद किया। ”

“कोई भी आदमी एक दूसरे के लिए इतना तो कर ही सकता है। ”

“शायद आपको पता नहीं है। मेरा रोग जानलेवा ..असाध्य ...है! बस उसकी एक ही परिणति है। ” मनीषा की आंखें छलछला उठी। अपने आप को संभालने के लिए मनीषा दूसरी दिशा में देखने लगी।

“मनीषा! सच या झूठ जानने की चेष्टा मैंने नहीं की। झूठ भी हो सकता है। मगर मन को संतोष देने और जीवित रहने में मदद करने वाली एक चीज है, जिस पर भरोसा करना होगा। वह है ‘भाग्य’। उस पर विश्वास करो। शायद परिवर्तन हो जाए। असाध्य साध्य में बदल जाए। असंभव संभव हो जाए। ”

“काउल साहब! मैं ढलता हुआ सूरज हूँ। कोई भी शक्ति मुझे ढलने से बचा नहीं सकती। दिग्वलय में लीन होने में बस वक्त कितना बाकी है?आज मन करता है कि आज की रात, संगीत, रोशनी, जिंदगी सब-कुछ का उपभोग कर लूँ। कुछ देर के लिए इच्छा होती है, खुद को सजाऊँ। दुनिया के सारे रूपों में खुद को ढक दूँ। मन-ही-मन देखती हूँ यह मेरी मम्मी है, यह मेरे डैडी है, यह मेरे पति है, मेरे बेटा, मेरी बेटी-इस तरह सभी को। रात बीत रही होती है। सभी लोग मुझे चारों तरफ से घेर लेते हैं। हल्का-हल्का प्रकाश घर को रंगीन बना देता है। धीरे-धीरे
मैं मिटती जाती हूँ। मगर नारीत्व की सार्थकता बनी रहती है। ”

“एक महीने बाद आप सुनेंगे नर्सिंग होम का पाँच नंबर कमरा खाली है। यह लंबा रास्ता जो है, इस पर सामने से एक और पीछे से दूसरा कोई स्ट्रेचर पर ठेल रहा होगा। मुंह ढककर रखा हुआ होगा। शरीर इधर-उधर डोलता होगा। लोग कहेंगे ‘शव’। कहां गए डैडी, कहां गई मम्मी, कहो काउल साहब! ”

इतनी बातें कर एक ही सांस में कहकर मनीषा थक-सी गई। फिर कहने लगी, “यह चित्र मेरे पास नया नहीं है। कई दिनों से परिचित हो चुकी हूं। लेकिन चिर-मिलन कब होगा, उसकी प्रतीक्षा है केवल। ”
मनीषा के चेहरे में कोई न कोई खास बात है, जिसके कारण कई लोग उस पर विश्वास करते हैं। थोड़ी देर में उसने गोपनीय गूढ सत्य को उजागर किया। काउल ने भी उसका आदर किया।

अकेले खाई में सोते हुए तेजी से निकट आ रहे शत्रु के इंतजार में बैठे सिपाही की तरह मौत के साथ हिसाब-किताब कर रही थी मनीषा। फर्क केवल इतना है दुश्मन के साथ संधि करना संभव है, मगर मनीषा का भविष्य अपरिवर्तनीय है। अतः कौन आता-जाता है?कौन परिचित-अपरिचित है? क्या नया-पुराना है?काउल साहब, कोई मायने नहीं रखता है। इतना कहने पर

भी मनीषा के मन में कोई पछतावा नहीं था। मगर मन में इतना संकोच जरूरत था-शायद यह सज्जन मेरे इस आत्मचरित को पसंद नहीं करें!

नर्स, डॉक्टर पहुँच गए। मनीषा को इंजेक्शन वगैरे दिए गए। डॉक्टर ने कहा, "कल से पूरी जांच शुरु होगी। "
काउल की तरफ देखते हुए डाक्टर ने कहा, "आपका पेशेंट अच्छा है। आपके मुताबिक मिस चौधरी के इलाज की दैनिक रिपोर्ट आपके पते पर भेज दी जाएगी। "
इधर-उधर की मामूली-सी बातचीत कर डॉक्टर और नर्स चले गए।

मनीषा ने घड़ी देखकर कहा, "अभी दस बज गए है। आप ऑफिस नहीं जाएंगे?"

"रोजमर्रा का काम खास नहीं होने पर भी मुझे आज जाना होगा। "
" तब तो बेमतलब देरी हो जाएगी। "

मनीषा का इतिहास काउल की नस-नस में स्पंदन कर रहा था। कैसी निसंग और लाचार जिंदगी! एक मुट्ठी दाने के लिए अख़बार बेचकर फुटपाथ की रोशनी में जो जिंदगी उसने बिताई थी, अपनी रोग-शय्या में उनींदे रात भर बैठे थे। खोज रहे थे, इस सारी दुनिया में कोई तो होता जिसे वह अपना कह सकते, अपने मन की वेदना बता पाते पल भर के लिए सही। मगर आशा अधूरी रह गई। काउल के अतीत जीवन का एक पन्ना थी मनीषा।

चेयर से उठ गए काउल।

मनीषा के बिस्तर पर दोनों हाथ रखकर मनीषा के बारे में गहराई से सोचने लगे। मन-ही-मन एक महत्वपूर्ण फैसला लेने के बारे में सोचने लगे। यह नारी इसके लायक है या नहीं! किसी प्रतिदान का प्रश्न नहीं था, कोई हताशा हाथ लगने वाली भी नहीं थी, केवल विजय पाने के लिए। अपने अतीत पर वर्तमान की। मनीषा की निस्सहाय परिस्थिति पर काउल की कृतकार्यता की।
बिना कुछ कहे काउल कमरे से बाहर निकल पड़े। बाहर निकलते समय दरवाजे पर हाथ हिलाकर मनीषा से विदा ले रहे थे।

उस दिन ऑफिस का काम पूरा होते-होते शाम हो गई। काउल सीधे नर्सिंग होम चले गए। नर्सिंग होम में शयन-बत्ती का हरा रंग कमरे में हल्का प्रकाश भर रहा था। मनीषा जूड़े में फूल खोंसे हुई थी। खूब सुंदर दिख रहा था उसका बीमार पांडुर चेहरा।

"मनीषा! "
उत्तर में धीरे-से नमस्ते कर दिया मनीषा ने।

"देखो, तुम्हारे लिए क्या लाया हूं। "
मनीषा के हाथ में उन्होंने एक पैकेट थमा दिया। उत्साह के साथ मनीषा ने वह पैकेट खोला। धागे की गांठ को हल्के से खोलकर कागज की परत को अच्छे से हटाकर देखा। अंदर में एक साड़ी थी। कोमल केले के पत्ते की तरह एक हरी साड़ी।

दोनों हाथों में लेकर छाती से चिपकाते हुआ कहा, "काउल साहब! थैंक्यू, थैंक्यू। "
कुछ समय तक साड़ी को खोलकर चारों ओर उलट-पलटकर वह उसका बॉर्डर, रंग और धागे को देखने लगी। अपने शरीर पर उस साड़ी को बिछाकर कहने लगी, "काउल साहब! एक बात जानते हो? जब मैं नैनीताल में पढ़ा करती थी। कान्वेंट स्कूल का वह आखिरी साल था। हम सब पास हो गए थे। आखरी दिन हम फैंसी नाईट मना रहे थे। सब अलग-अलग चेहरे बनाकर वहां पहुंचे थे। कोई वेस्टइंडीज बना था तो कोई इंडियन प्रिंस तो कोई मिलिट्री ऑफिसर। मुझे रानी बनने के लिए कहा गया था। मैं मुकुट लाई थी, वास्तविक मुकुट। हमारे साथ ग्वालियर के लड़की पढ़ा करती थी, उसका मुकुट। डैडी, मम्मी मुझे बाजार ले गए थे। ठीक ऐसे ही साड़ी खरीदी थी मेरे लिए। ऐसी ही सोने की जरी। मुकुट में साड़ी पहनकर मैं सचमुच एक रानी की तरह दिख रही थी। मम्मी खुश होकर मुझे गले लगा रही थी। मुझे उसमें फर्स्ट प्राइज मिला था। यह बहुत दिन पुरानी बात होगी। आज इसे पहनने पर मजाक-सा लगेगा। "

"मनीषा, बिना गहनों के भी तुम सदा रानी लगती हो। यह सारा आवरण तुम्हारे रूप की क्या मर्यादा बढ़ाएगा?"

"काउल साहब, पता नहीं आप मनोवैज्ञानिक है या नहीं। मगर इससे अधिक मधुर बात आप मुझे और कुछ नहीं कह सकते हैं। मेरा रूप, फिर उसकी समीक्षा। "

"मनीषा! तुम्हारे साथ परिचय इतने कम समय का है कि शायद ही मैं तुम्हारे बारे में कुछ कह पाऊं। "

"काउल साहब! रात बहुत हो गई। क्लब में आपका डिनर लेट हो जाएगा। फिर कभी वक्त निकालकर आइएगा तो मैं अपनी जिंदगी और अपने परिवार के बारे में बताऊँगी। बस, धीरज चाहिए। आपको फिर किसी शिकवे की कोई गुंजाइश नहीं रहेगी। "

मनीषा के लिए रात का भोजन नर्स टेबल पर सजा कर चली गई। काउल ने कहा, "ठीक है। पहले डिनर कर लो। फिर तुम्हारे सोने के बाद मैं चला जाऊंगा। "

“ मां का मतलब ऑफिस जाते समय या बाजार में सौदा करने के समय बच्चों की देखभाल करने के लिए घंटे की दर से जिस व्यक्ति को नियुक्त किया जाता था, उसे बेबीसिटर कहते हैं। मगर मरणासन्न रोगी नारी को साड़ी और अपना समय देकर डिनर तक अस्पताल में इंतजार करने वाले को क्या कहा जाएगा, जानते हो?”
“ सूप ठंडा हो रहा है, मनीषा! तुम्हारी डेफिनेशन के लिए ब्रेकफास्ट तक अनायास प्रतीक्षा की जा सकती है। ”
डिनर करने के बाद मनीषा छोटी टेबल से उठकर अपने बिस्तर की तरफ चली गई। काउल ने पीछे से स्प्रिंग मोडकर बिछौने को आधी ऊंचाई तक फ़ोल्ड कर दिया। मनीषा आराम कुर्सी पर बैठने की तरह विश्राम लेने लगी। काउल ने एक सफेद चादर उसके कमर तक ओढा दी।
“काउल साहब! लगता है मैं बहुत स्वार्थी हो गई हूँ। मैंने डिनर कर लिया है और अब विश्राम कर रही हूं। आप हैं कि ऑफिस से लौटकर यहां इतनी देर तक मेरे पास बैठे हैं। **एक कप कॉफी तक नसीब नहीं हो सकी**। बना लेती हूँ? यहाँ सारा इंतजाम है। ”
असहमति के लहजे में सिर हिलाते हुए काउल ने कहा, “मनीषा, एक बार नारद ने भगवान से पूछा, ‘प्रभु! माया क्या है?’”
भगवान ने कहा, “समय आने पर समझा दूंगा। ”
बहुत दिनों के बाद दोनों वेश बदलकर मृत्यु-लोक के सुख-दुख जानने के लिए विचरण कर रहे थे। गर्मी के दिन थे। गांव के मुहाने पर पहुंचकर भगवान को प्यास लगने लगी। भगवान ने कहा, “नारद! मेरे लिए थोड़ा पानी लाओ। ”
नारद पानी लाने के लिए गांव की ओर निकल पड़े। गाँव में घरों के सारे दरवाजे बंद हो चुके थे। कई घरों के दरवाजे खटखटाए, मगर किसी ने जवाब नहीं दिया। वह एक गांव से दूसरे गांव गए। वहाँ महामारी फैली हुई थी। फिर वह दूसरे गाँव गए। उस गांव में पहुंचने तक शाम हो चुकी थी। नारद को कमजोरी लग रही थी। उन्होंने थोड़ा विश्राम लिया। रात में एक ब्राह्मण के घर में अतिथि बने। ब्राह्मण की एक सुंदर कन्या थी। घर में कोई मां-बाप नहीं थे। उस कन्या ने नारद की खूब सेवा की। नारद उसके प्रेम-जाल में पड़ गए। उससे विवाह किया। कई दिन बीत गए। बाल-बच्चे भी पैदा हुए। भगवान को भूलकर नारद घर-संसार बसाकर सुख से रहने लगे। दुनियादारी की बाकी सारी बातें भी भूल गए। अचानक एक दिन भयावह बाढ़ आई। घर-बार सब बह गए। लोग-बाग ऊंची छतों और पेड़ों पर आश्रय लेने लगे। फिर भी स्थिति संभाल नहीं पाई। पानी का स्तर बढ़ता गया। पेड़ों और छतों तक पहुँच गया। नारद के कंधे पर बैठ गई उनकी स्त्री। उनकी स्त्री के कंधे पर बैठा उनका बेटा। उसके कंधे पर बैठा दूसरा लड़का। इस तरह वे पानी को पार कर रहे थे। मगर पानी बढ़ता ही जा रहा था। पानी बढ़ते-बढ़ते नारद के कंधे, गर्दन, नाक तक पहुँच गया। जब पानी का स्तर और ऊपर चढ़ने लगा तो नारद छटपटा कर बोलने लगे, “हे भगवान, रक्षा करो। ”

भगवान ने भक्त की पुकार सुनी। वहाँ प्रकट होकर भगवान ने कहा, “नारद, एक दिन तुमने पूछा था न माया क्या है! क्या इसका उत्तर मिला?”

मनीषा एकाग्रता से सुन रही थी। करवट बदलकर बैठ गई।

“मनीषा, मेरे मन में कोमल भावनाएँ नहीं है। वैसे किसी काम का नहीं हूं। मगर थोड़े ही परिचय ने तुम्हारे लिए मेरे मन में ममता पैदा कर दी है। मैं माया में पड़ गया हूं। यद्यपि मैं नारद नहीं हूं। ”

ममत्व की बात सुनकर मनीषा हंसने लगी।

वह कहने लगी, “ यह ममता नहीं है काउल साहब, यह दया है। दुर्भाग्य से सड़क पर किसी की दुर्घटना हो जाती है तो बटोही वहाँ जमा हो जाते हैं। यथा-संभव मदद करते हैं। एंबुलेंस में बैठाते हैं। फिर अपने-अपने घर लौट जाते हैं। एकाध आदमी अगले दिन अस्पताल में फोन कर कर लेते हैं, एक्सीडेंट केस का हाल-चाल जानने के लिए। काउल साहब! इसका मतलब यह नहीं है कि मैं आपकी मेहरबानी की हंसी उड़ा रही हूं या मैं आपके प्रति अकृतज्ञ हूं। ”

“मनीषा, कृतज्ञता या सम्मान की मैं आपसे आशा नहीं रखता। मानवता के नाते जितना मुझे करना चाहिए, बस मैंने उतना ही किया है। ” तभी नर्स नींद की दवा देने के लिए वहां आई। चे काउल वहाँ से चले गए।
अगले दिन वह व्यापार के सिलसिले में सिंगापुर चले गए। फोन पर नर्सिंग होम के डॉक्टर को कहा, “मनीषा को बता देना कि मुझे लौटने में एक हफ्ता लग जाएगा। मनीषा को मेरी तरफ से शुभकामनाएं दे दीजिएगा। ”

काउल को दैनिक समस्याएं हवाई-जहाज में बहुत मामूली लगती है। ऊंची-ऊंची इमारतें बच्चों के प्लास्टिक के खिलौने की तरह दिखती है। सड़के कागज पर खींची हुई सुर्ख लकीरों की तरह लगती है। कुछ समय बाद सफेद बादल रुई के फाहे बन जाते हैं। हवाई जहाज जब बादलों के
ऊपर उठता है तब चारों ओर केवल शून्य, महाशून्य दिखाई देता है।

“हेलो काउल! ”
“हेलो मिस! ” ज्यादातर एयर होस्टेस काउल को जानती है। **आधी जिंदगी तो आकाश में बिताई है**। फिर बीच-बीच में स्मगलिंग के माल को लाने लेजाने में इन्हीं में से कुछ एयर होस्टेस घड़ी, सोने के हार या कुछ पैसे लेकर काउल की मदद करती है।

काउल हर काम के लिए उचित कीमत देते हैं। उनका ख्याल है कि पैसों से दुनिया की हर चीज मिल सकती हैं। बस फर्क है केवल कीमत का, चीज पाने का नहीं।

हवाई जहाज से काउल सिंगापुर पहुंचे। पहले उन्होंने अपना व्यापारिक काम सफलतापूर्वक सम्पन्न किया। उसके बाद रात को सिंगापुर की मौज-मस्ती का लुफ्त उठाया।

चाहते तो वह कुछ दिन और रुक सकते थे। मगर लौटने का उनका मन कर रहा था। लौटते समय वह सोच रहे थे कि अचानक लौटने की आज ही इच्छा क्यों हुई। उनके लिए तो दुनिया का हर देश एक समान है। दिल्ली, **टोक्यो**, बेरूत, लंदन-सब बराबर। दिन में व्यापार संबंधी काम और रात में मौज-मस्ती। वास्तव में सारी दुनिया एक है। यह कथन वेंडल विल का है। मगर काउल ने इंतजार नहीं किया। खुद उन्होंने इस बात का अनुभव किया। फर्क सिर्फ एक्सचेंज में है। भाषा में कहीं पाउंड कह देते हैं तो कहीं फ्रेंक, कहीं इयान कहते हैं तो कहीं रुपया। कहीं फारसी भाषा है तो कहीं अरबी!

काउल लौटे। उनके मन के झिलमिलाते पर्दे की ओट में बीमार मनीषा की धुंधली-सी तस्वीर दिखाई देने लगी। यह इसकी दशा?बेचारी मनीषा! सगे-संबंधियों और मां-बाप विहीन मनीषा। सोचने लगे, परिचित अस्वस्थ व्यक्तियों के प्रति ममत्व और मानवता मनुष्य का कर्तव्य-मात्र है।
एयर होस्टेस लीला ने कहा, "ताज्जुब है आज काउल इतने शांत! "
दूसरी ने कहा, "नहीं, यह तूफान के पहले की निस्तब्धता है। "
लीला ने कहा, " ऐसा लगता है, सिंगापुर के उच्छृंखल जीवन के बारे में सोच रहे है?"

काउल सोचने लगे, इतने कम दिनों के अंदर उनकी मानसिक स्थिति में किस तरह परिवर्तन हो रहा है। यह परिवर्तन साधारण होते हुए भी महत्त्वपूर्ण है। जिन चीजों में कभी उन्हें आनंद आता था, आज अचानक रसहीन हो गई थी। जो अर्द्ध-नग्न कैबरे डांसर रात-रात भर उन्हें बांधे रखती थी, आज अचानक मांसपेशियों का मामूली प्रदर्शन नजर आने लगा था। जो शराब हरदम उनकी संगिनी बनी रहती थी, आज यह फालतू लगने लगी थी।

वह उस दिन सिंगापुर-क्लब से जल्दी लौटना चाहते थे। हंसते हुए किसी ने कहा, "स्वामीजी! रात होते ही आश्रम का द्वार बंद हो जाएगा। गुरुदेव रूठ जाएंगे। जल्दी प्रत्यावर्तन करें। "

काउल हवाई जहाज की खिड़की से आकाश की तरफ देख रहे थे। आदमी के मन की तरह आकाश भी अभेद्य है। चारों और तारे टिमटिमा रहे हैं। नीचे बादलों के झुंड कारपेट की तरह दिखाई दे रहे थे। पुराणों में इस बात का उल्लेख है, जो लोग महापुरुष होते हैं वे लोग इसी

प्रकार तारे होकर आकाश में निश्चल, विच्छिन्न होकर रहते हैं। मगर खूब सुनसान लगता होगा। कोई साथी नहीं, कोई मित्र नहीं, एकदम **अकेले**।
किन्तु मैं भी तो बहुत अकेला हूं। ऐसा क्यों? इतने मित्र, इतने कार्यकर्ता, इतने साथी, इतने पैसे तो है। जो चाहा सब मिला। केवल घर-संसार नहीं बसाया। मगर यह दुनिया तो पैरों की बेडी है।
ऊपर उठने में तुम्हारे लिए अवरोधक है।

एक बार चर्चिल के पास लॉर्ड बेब्रूक बैठे थे। चर्चिल ने पूछा, "मिस्टर बेब्रूक, आपके जिंदगी की बड़ी-बड़ी घटनाएं या माइल-स्टोन क्या है?"
बेब्रूक ने कहा, " जब मैं 22 बरस का था तब मैंने विवाह कर लियाथा। "

चर्चिल ने बात करते हुए कहा, "मैं माइल-स्टोन के बारे में पूछ रहा हूं। मिल स्टोन के बारे में नहीं। दुनिया, पत्नी, बाल-बच्चे सभी मिल स्टोन है, , गले के चारों ओर चक्की के पाट की तरह। "
काउल चिंतन करने लगे- इससे मजेदार बातें मिल्टन के बारे में है। विवाह के बाद मिल्टन ने लिखा था 'पैराडाइज लॉस्ट'। पत्नी के मरने के बाद में क्या लिखा था 'पैराडाइज रीगेंड'?यही तो दुनिया है! "
लीला सोने के लिए कंबल देकर चली गई। हवाई जहाज के अंदर की बत्तियां बुझा दी गई। खिड़की से तारें और भी ज्यादा उज्जवल दिखाई देने लगे।
काउल को नींद आने लगी। अपनी गोद में मनीषा के उसी शांत, निरीह सिर की उपस्थिति अनुभव करने लगे। अचानक नींद खुल गई, मगर स्मृति मधुर लगी। मन ही मन में सोच रहे थे, पहले दिन जिस तरह असहाय हालत में थी, यदि जागृत अवस्था में उसी तरह होती तो!
काउल ने सोचा, शायद यही तो नारी का मातृत्व है। जो हलचल पैदा नहीं करता, बल्कि एक प्रलेप प्रदान करता है। धीरे-धीरे काउल को फिर से नींद आने लगी। मनीषा की स्मृति में खोए हुए काउल चैन से सो गए।
जब काउल उठे, तब उगते सूर्य की आभा से आकाश में लालिमा छाई हुई थी। कुछ समय बाद वह हवाई जहाज से नीचे उतरे। चेन्नई एयरपोर्ट से सीधे नर्सिंग होम में मनीषा के पास पहुंचे।

"मनीषा! "काउल ने आवाज लगाई।

कोई उत्तर नहीं मिला। नर्स ने बताया, "पिछले दो दिनों से बीमारी बढ़ गई है। "

काउल ने नर्स को बाहर बुलाकर बातचीत की। **नस** के ख्याल से उसका आखरी समय नजदीक था। जीवन के दिए को बुझाने में सिर्फ कुछ दिन और बचे हैं। इसके लिए प्रतीक्षा करनी है। फिर नियति को रोकना असंभव है।

काउल को अपने अंदर बेचैनी-सी लग रही थी। तुरंत वह मनीषा के डॉक्टर के पास गए और पूछने लगे, "कैसी हालत है मनीषा की?"
"धीरे-धीरे हालत हमारे कंट्रोल से बाहर होती जा रही है। पंद्रह दिन के अंदर तुरंत ऑपरेशन की जरूरत है। " डॉक्टर ने कहा।
"ऑपरेशन कहां हो सकता है?" काउल ने पूछा।

"यहां हो सकता है। मगर कोई गारंटी नहीं है। संभव हो तो भारत के बाहर स्विजरलैंड ड्यूरिक में डॉक्टर एण्ड्र्युज के पास ऑपरेशन कराने की कोशिश करें। "इसी बीच मैंने उनसे काफी समय तक परामर्श किया है। वह ऑपरेशन के लिए तैयार है।
मनीषा की जिंदगी आज काउल के लिए एक चुनौती बन गई। अपना सारा अतीत मानो काउल को हुंकार रहा हो -"देख, एक दिन तू भी ऐसे ही लाचार, दरिद्र और बीमार था। भाग्य न तुझे बचा लिया। मगर क्या इसे बचा पाएगा? कितनी तेरी ताकत है, कितना पैसा है तेरे पास में? दिखा तेरी ताकत! दिखा दे तेरी मर्दानगी! "

काउल ने सोचा, "ठीक है, मैं यह चैलेंज स्वीकार करता हूँ। मनीषा को बचाऊंगा। यह मेरे जीवन का अतीत अध्याय है। चाहे, मुझे जो भी कीमत क्यों न चुकानी पड़े। "

वही जुए वाला नशा। जिस नशे की खुमारी में वह घुड़दौड़ में बर्बाद हो गए थे, जिस नशे में लात मारी चेयरमैनी को, उसी नशे में जिंदगी को मुट्ठी में भरकर फेंक सकते हैं। काउल अपने आपको मिटा सकते हैं।

काउल ने कहा, "डॉक्टर एण्ड्र्युज के पास ऑपरेशन कराने की आप व्यवस्था करें। स्विट्जरलैंड में अस्पताल तय करें। मैं खुद मनीषा को लेकर जाऊंगा। अगर परिस्थिति अनुकूल रही तो इसी हफ्ते के भीतर। "

मनीषा के लिए पासपोर्ट बन गया, टिकट आ गया। खुद के लिए तो ये सब आम बात थी।

मनीषा की हालत दिन-ब-दिन बिगड़ती जा रही थी। सूखे होठों पर बहुत सारे साँवले दाग **पद** गए थे। आंखों के नीचे भी काली रेखा दिखाई दे रही थी। अंगुलियां मैली हो गई थी। उसकी व्याकुलता कम नहीं हो रही थी, असहायता में कोई कमी नहीं आ रही थी!

“मनीषा! मैं काउल हूं। मैं सिंगापुर से लौट आया हूं। ” विनीत भरी नजरों से टुकुर-टुकुरकर देखती रही मनीषा। कुछ समय के लिए उसने आंखें खोली। फिर निर्जीव-सी लेटी रही।

मनीषा के दोनों हाथ पकड़कर काउल ने पूछा, “सुनो मनीषा, मैं तुम्हें स्विजरलैंड ले जाना चाहता हूं। कोई तुम्हारे साथ चलेगा ?”

मनीषा की दोनों छोटी-छोटी हथेलियां धीरे-धीरे काउल के हाथ में बिना किसी प्रतिवाद के कुछ समय तक पड़ी रही। मनीषा उत्तर देने की अवस्था में नहीं थी।

काउल ने पैसों की तलाश की। इतना पैसा उसके पास में नहीं हो सकता है। कई एजेन्टों से भी बातचीत की। परिस्थिति में कुछ सुधार हुआ, मगर आवश्यकता पूरा नहीं हो पा रही थी। उनका चेन्नई में छोटा-सा कारखाना था। उसे आनन-फानन में कौड़ियों के भाव बेच डाला।

एक सप्ताह बाद वह हवाई-जहाज से मनीषा को स्विजरलैंड ले गए। निस्तेज, निर्वाक मनीषा के सिर को अपनी गोद में लेकर वह आकाश की तरफ ताक रहे थे। सिंगापुर से वापिस आने के समय वाला सपना साकार हो रहा था। वह सोच रहे थे, इतने बड़े आकाश में भगवान अगर **कहीं है तो मेरी मनीषा की रक्षा करो, उसे बचा लो।**

हवाईजहाज ड्यूरीक पहुंचा। पूर्व निर्धारित प्रोग्राम के मुताबिक डॉक्टर एण्ड्र्युज ऑपरेशन के इंतजार कर रहे थे अपने अस्पताल में। मनीषा के शरीर की परीक्षा की गई। थोड़ी तबीयत ठीक होने पर ऑपरेशन किया जाएगा। एक-दो दिन इंतजार करना होगा।

काउल ने अपनी जिंदगी में अनेक शारीरिक कष्ट और मानसिक यंत्रणाएँ भोगी है। मगर इन दो दिनों की प्रतीक्षा के बारे में कुछ मत पूछो। आखिरकार ऑपरेशन हुआ। डॉक्टर एण्ड्र्युज सफल हुए। काउल की विजय हुई। काउल ने डॉक्टर को हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापन की।

रात-दिन मनीषा के बिस्तर के पास काउल बैठकर जगुआली कर रहे थे। बीच-बीच में मनीषा देख लेती थी उसी कृतज्ञता भरी दृष्टि से।

मनीषा स्वस्थ हो रही थी। वह उठकर बैठने लगी। धीरे-धीरे उसने चलना शुरू किया। डॉक्टर ने दो महीने बाद भारत लौटने की सलाह दी।

एक दिन मनीषा ने पूछ लिया, “काउल साहब, मेरा भगवान में तो विश्वास नहीं है। मगर कहीं भगवान है तो आप ही मेरे लिए उनके अवतार है। ”

काउल ने फूलों का गुच्छा मनीषा के बिस्तर के पास सजाया। “मेरे लिए आपने कितने कष्ट उठाए है। यह ऋण कैसे मैं उतार पाऊंगी। ”

काउल विजय की दृष्टि से देखते रहे मनीषा की तरफ।

भारत लौटने का समय पास आ गया। मनीषा ने कहा, “काउल साहब, आज आपको मेरे लिए सेक्रेटरी का काम करना होगा। कृपया कर आप कुछ पत्र मेरे लिए लिख दीजिए। ”

काउल ने मुंबई, कोलकाता के परिचितों मित्रों को पत्र लिखें। परिवार वालों को खबर दी गई। फर्श पर बिखरी माला जिस तरह समेटा जाता है, मनीषा आज उसी तरह अपनी विक्षिप्त दुनिया के लोगों को फिर से जोड़ रही थी।
एक दिन मनीषा ने पूछा, “काउल साहब, भारत लौटकर आप क्या करेंगे?घर-संसार में रम जाएंगे, पति, पत्नी, बेटा-बेटी आदि के साथ। स्नेह, सहानूभूति से उल्लासित हो जाएगा आपका जीवन। नारी सौभाग्यवती होगी, क्यों?”
काउल ने कहा, “मनीषा मुझे अगर ठीक से जानती हो तो समझ गई होगी कि मैं एक झूठ हूं, क्षण-स्थायी हूं। ”
मनीषा ने बात बीच में काट दी।
“सच-झूठ के विवाद का फैसला हो गया है, काउल साहब। ”
एक बार बादल ने मलय से कहा, “मलय, सत्य क्या है?”

इस संसार के माथे पर उगने वाला सूर्य, पृथ्वी के वक्ष-स्थल पर इतना बड़ा हिमालय क्या यही सत्य है? तू जो अदृश्य अनुभूतिरहित, अन्यथा अंभोग्या और मैं इन्हीं छोटे-छोटे जल-कणों का समूह, हम क्या असत्य, अचिरंजीवी, क्षणिक है?
मलय ने कहा, ”बादल, सृष्टि का यह अभियोग हमारे प्रति सत्य है। सूरज की प्रखरता, हिमालय का आधिपत्य जगत को स्वीकार्य अवश्य है। मैं अरूप हूँ, तुम अस्पष्ट। इसलिए हम दोनों क्षणस्थायी और असत्य है। ”
मगर पता है, अगर एक बार तुम मेरे आगोश में आ जाओगे तो हमेशा के लिए तुम विलीन हो जाओगे। हमारा मिलन दृढ़, अभेद्य और संपूर्ण हो जाएगा। इस गंभीरता, आड़ोलन और आलिंगन से धूम्र, विद्युत और कंपन उत्पन्न होंगे। जिससे सूरज डूब जाएगा, **हिमालय अवगुंठित हो जाएगा। ”**

यह आत्मीयता, आलिंगन और मिलन सत्य होता है। जिससे प्रलय हो सकता है।

काउल मनीषा की ओर देख रहे थे। देख रहे थे अपना अतीत। सलीम की दोस्ती। वैश्याओं के घरों में फूलों की बिक्री, शराबी, लंपट, जुआरी काउल। मनीषा एक प्रस्फुटित निरीह कोमल कली। जिसका स्थान देवताओं का सिर है।

मनीषा ने मेरे भीतर केवल दीप्त आभा, विस्तृत मानवता देखी है। जिस दिन वह देखेगी कि काउल अंधेरे गव्हर में है, उसका रूप विकलांग है, जहां सलीम रहता है, नीरा रहती है, बाईजी और अनेक है, शराबखाना है, जुए का खेल है, कालाबाजार का अड्डा चलता है-वहां मनीषा की कोमलता नष्ट हो जाएगी, बेचारी वह घायल हो जाएगी। शायद मनीषा मिल भी जाए तब भी उसकी जिंदगी किसी पेड़ से लिपटी मृत लता से कम नहीं होगी। सारी जिंदगी एक गहरी दीर्घश्वास बनकर रह जाएगी।

मनीषा क्षमा भी कर सकती है। मगर किसे क्षमा करेगी? उसने तो कोई पाप नहीं किया है, वह किसी भ्रम में भी नहीं हैं। जीवन में उसने जो कुछ किया उसके लिए कोई भी अनुताप नहीं था! क्या कालाबाजार बदल देंगे? जुए का नशा बदल सकेंगे? मगर क्यों?

काउल ने पूछा, “मनीषा, घर जाकर तुम क्या करोगी?पति, बेटे-बेटी की गृहस्थी में उलझ जाओगे। अस्पताल में उनके जो चित्र देख रही थी। ”

मनीषा ने पूछ लिया, “काउल साहब! अगर कहूं ‘हां’ घर बसाना चाहती हूं तो तुम उसमें मदद करोगे?”
“मनीषा तुमसे एक बात पूछनी है। तुम जिससे विवाह करती हो अगर वह शराबी, लंपट, जुआरी झूठा, झगड़ालू हो तो क्या करोगी?”

“काउल साहब! प्रत्येक नारी जो करेगी, वही मैं करूंगी-आत्महत्या। मगर जानते हो मैं जिस पुरुष को चाहती हूं, वह खुद राम है। आदमी इतना बड़ा हो सकता है, कल्पना नहीं की जा सकती है। इतना रूपवान होगा कि कोई उसका चित्र ही न बना सके। उसके स्पर्श की मुझे जरूरत नहीं है, **बस उसकी उपस्थिति ही मेरे लिए पर्याप्त है**। उसे देखते-देखते सारी जिंदगी गुजार दूंगी। ”

“मनीषा, आदमी में भी परिवर्तन होता है। ”
मनीषा ने उत्तर दिया, “असंभव काउल साहब! मेरे राम सदा राम बनकर ही रहेंगे। ”

काउल मन ही मन सोचने लगे, रावण भी राम बन सकता है। मगर मैं तो रावण नहीं हूं। मैंने तो कुछ अन्याय नहीं किया है, किसी का बुरा नहीं किया है, फिर भी यह कैसा समाज का अभियोग है?

मनीषा ने पूछा, “काउल साहब, आपने तो कभी भी अपने अतीत, अपने परिवार, अपने भविष्य के बारे में भी कुछ नहीं बताया। आपके महत्व का परिचय जरुर मिला है, मगर इतिहास तो छुपा ही रह गया। ”

काउल निरुत्तर थे। कुछ समय बाद कहने लगे, “समय आने पर खुद जान जाओगी मनीषा! ”

एक दिन काउल की तबीयत बिगड़ गई। बुखार और सिरदर्द बढ़ता गया। उस दिन शाम को वह नर्सिंग होम नहीं जा सके। उस शाम उनकी मनीषा से मुलाक़ात नहीं हो पाई।

रात को उस समय बारह बज रहे होंगे। दरवाजे पर घंटी की आवाज सुनाई दी। काउल बड़ी मुश्किल से उठे। देखा, नर्स के साथ मनीषा आई है। वह हाथ पकड़कर काउल को बिस्तर तक ले गई। कंबल ओढा दिया। काउल के दोनों हाथों को अपनी मुट्ठी में रखकर देखती रही मनीषा। आंखें भर आई। काउल ने कहा, “यह ठीक नहीं किया। अभी तुम पूर्ण स्वस्थ नहीं हुई हो। इतनी रात को शीत-लहर में तुम्हारा बाहर निकलना खतरे से खाली नहीं है। ”

मनीषा ने कहा, “काउल, क्या तुमने ही त्याग का झण्डा उठाने का ठेका लिया है? बाकी लोग क्या अमानुष है?”

उस रात मनीषा काउल के पैरों के पास बैठे-बैठे सोती रही।

सुबह हुई। काउल ने देखा, मनीषा उसके घुटनों के पास कोने में दुबककर उसी छोटे कंबल को ओढ़कर सो रही थी। काउल उठकर बैठ गए। कंबल से मनीषा की देह को ढक दिया। उसके चेहरे की तरफ देखते रहे। वही रेल वाला दृश्य। बिखरे केश, मधुर अधर, नम्र नेत्र और सुप्त नारी। इस बार वह केवल नारी नहीं थी। वह मनीषा थी। उनके हृदय की मनीषा। उनके जीवन का एक अंश।

कमजोरी लग रही थी काउल को। अधिक देर तक बैठना उनके लिए मुश्किल था। फिर से बिस्तर पर लेट गए। कुछ समय बाद मनीषा उठ खड़ी हुई। काउल के सिर पर हाथ रखा। देखा, बुखार कम नहीं हुआ था। काउल बेचैन हो रहे थे। उनके सिर को गोद में लेकर वह सहलाने लगी।

डाक्टर और नर्स की व्यवस्था की गई। दवाइयाँ बाजार से मंगवा ली। अपने हाथ से काउल को दवाई खिला दी। वह खुद देखभाल करने लगी।

तीन-चार दिन बीत गए। इस दौरान मनीषा नर्सिंग होम नहीं जा सकी। उस समय डयूरिक में कड़ाके की ठंड पड रही थी। काउल ने कहा, “मनीषा, आज हम दोनों का क्विट हो गया। एक दिन मैंने तुम्हारी सेवा की थी, तुमने सूद सहित मूल चुका दिया। ”

काउल एक कुर्सी में बैठे हुए थे और कार्पेट पर मनीषा। काउल के पैरों की तरफ देखते हुए कहने लगी, “हिंदू धर्म में पाप करने वालों को सजा मिलती है और पुण्य करने वालों को पुरस्कार। अगर कोई पाप और पुण्य दोनों करता है तो दोनों आपस में कटकर खत्म नहीं होते। आपको दोनों भोगने पड़ेंगे। अतः तुम अपनी सेवा के लिए अपना फल पाओगे और मैं अपनी सेवा के लिए अपना फल। दोनों क्विट नहीं हो सकते हैं। ” दोनों हाथों की अंजुली फैलाकर मनीषा ने काउल को दिखाते हुए कहा, “मेरा फल मुझे दे दो काउल। ”

काउल ने उस अंजुली को अपने हाथों में रखकर कहा, “तुमने पाप की बात कही। पाप होता क्या है?”

मनीषा ने कहा, “जिसे सारी दुनिया समझती है। ”
काउल ने तुरंत पूछा, “जैसे?”

“जैसे शराब पीना, जुआ खेलना, नारी-संभोग, झूठ बोलना इत्यादि। ”

काउल ने मनीषा का हाथ छोड़ दिया। उसका चेहरा गंभीर हो गया। वह बेचैन-सा लगने लगा।

कुछ दिन बाद मनीषा ने कहा, “डॉक्टर से कल मैंने बात की थी। वह कहते हैं कि अब मैं बिल्कुल स्वस्थ हूं। भारत लौटने की अनुमति दे दी है। डाक्टर के अनुसारतुम्हारे लिए भारत का क्लाइमेट अच्छा है। मैं भी लौटना चाहती हूं। मेरे कई काम पड़े हैं। सबसे बड़ा काम है- तुम्हारा ऋण। शायद जिंदगी में उतार न पाऊं, भरसक कोशिश तो फिर भी करुंगी, जितना जल्दी हो सके। **तुम्हें मंजूर है, काउल?”**

काउल ने सहमति जताई। कहने लगे, “ इसका मतलब तुम स्वीकार करती हो मेरा निवेश ठीक **जगह** पर हुआ है। अब मानती हो न कि मैं एक पक्का व्यापारी हूं?”

मनीषा ने कहा, “मैं तुम्हारे व्यापार के बारे में विशेष नहीं जानती हूँ। मगर इतना निश्चित कह सकती हूं कि तुम्हारा मूल-धन जीवंत भाव से लौट आएगा। जो तुम्हारे पास अक्षय अमर अनंत होकर चिरदिन के लिए तुम्हारे कदमों में पड़ा रहेगा। ”

उस दिन शाम को डयूरिक में दोनों सिनेमा देखने गए। अंग्रेजी फिल्म थी, चार्ल्स डिकन्स की “टेल ऑफ़ टू सिटीज”। लौटते समय मनीषा कह रही थी, “बहुत खूब! बैरिस्टर सिडनी कार्टून प्रेम के लिए हंसते-हंसते गिलोटिन में चला जाता है, जीवन परित्याग कर देता है। मगर काउल प्रेम के लिए खुद का नामोनिशान मिटा देना क्या संभव है?”

काउल ने पूछा, “तुम्हें क्या लगता है?”
मनीषा ने कहा, “काउल मैं बहुत स्वार्थी हूं। जिससे प्रेम करती हूँ, उसे जान देकर भी पाना चाहूंगी। उस पर अधिकार जमाऊँगी, अपना बना लूंगी। अगर मेरा नामोनिशान मिट गया तो तब तो यह मिलन संभव नहीं हो पायेगा। यह नारी की प्रेम की कल्पना है, हो सकता है पुरुष का प्रेम और दांभिक होगा। वह अपने को मिटा डालने में परिपूर्णता समझता है। ”

मनीषा कुछ समय चुप रहने के बाद पूछने लगी, “काउल, तुमने कभी प्रेम किया है?”
सवाल साधारण था, मगर उत्तर के लिए मनीषा एकनिष्ठ भाव से ताकती रही काउल की ओर।
काउल ने कहा, “नहीं। ”
मनीषा ने पूछा, “अब तक भी नहीं?”
“मैं नहीं जानता। ” काउल का उत्तर था।

नर्सिंग होम में मनीषा को छोड़कर टैक्सी ने काउल को उनके फ्लैट पर छोड़ दिया। काउल के मन में ‘सिडनी कार्टून’ की बात घूम रही थी। लूसी के प्रति प्रेम की कितनी बड़ी कीमत चुकाता है फिल्म का नायक, अपना जीवन त्याग कर। तुम महान हो सिडनी कार्टून! काउल के कानों में सिडनी कार्टून की आखिरी बात गूंज रही थी।

“ हां, आज मैं नेस्तनाबूद हो गया हूं, मगर लूसी के हृदय में सदा जीवित रहूंगा। आज के दिन हर वर्ष वह मेरे बारे में सोचेगी। अपने सुखी-संसार के भीतर वह कभी मुझे नहीं भूलेगी। अपने बच्चों को मेरे बारे में मेरा स्मृति-लेखा बताएगी। ”

“आज जो कुछ कर रहा हूँ, जीवन में ऐसा काम कभी नहीं किया। आज जो विश्राम ले रहा हूँ, जीवन में तो कभी ऐसा आराम नहीं मिला। अलविदा लूसी, हमेशा के लिए। ”

कुछ दिन बीत गए। अंत में दोनों मुंबई आए। मनीषा के परिवार के कुछ आत्मीय लोग खबर पाकर एरोड्रम पर आए। सभी उसे अपना अतिथि बनना चाहते थे। मनीषा ने काउल के साथ उनका परिचय करा दिया।

वह कहने लगी, “ये मिस्टर काउल है। एक प्रतिष्ठित व्यापारी, मेरे मित्र और मेरे जीवन दाता। ”

मनीषा आखिर में अतिथि बनकर अपने परिवार वाले किसी के यहां चली गई। तब तक काउल का व्यापार ठप्प होने लगा था। उनकी अवहेलना के कारण कर्ज काफी बढ़ गया था। पैसो का कोई हल तुरंत दिख नहीं रहा था।

काउल मुंबई के एक छोटे होटल में ठहरे। हर रोज मनीषा को देखने जाते। इसी दौरान मनीषा सुंदर युवती हो गई।

" काउल साहब! आप कहा करते थे न, भाग्य नाम की कोई चीज इस दुनिया में होती है। हमने खुद उसे प्रमाणित कर दिया। "

"मनीषा, तुम्हें एक बात कहनी है?"
"मैं जानती हूं, आप क्या कहेंगे? कहेंगे, मनीषा मुझे अपने व्यापार के काम पर जल्दी जाना होगा। उसका सीधा जवाब होगा, "नहीं"। मेरी अनुमति मिलने तक आपको यही इंतजार करना होगा। "
उस दिन होटल में पहुंचकर काउल आकाश-पाताल के बारे में सोचने लगे। मन ही मन हिसाब कर रहे थे, मैंने जो कुछ किया है, क्या बिल्कुल निस्वार्थ है? क्या इसमें कोई स्वार्थ नहीं है? केवल दंभ का प्रमाण भर देना था? या मैं मनीषा को चाहता हूं। यह जो खिलौना मैंने अपने हाथों से गढ़ा है क्या इसे किसी और के महल में छोड़ दूँ ? या उसे जीवन भर अपनी गोद में समेट लूँ ? फिर सोचने लगे, मगर जब मनीषा को पता चलेगा कि काउल उसकी कल्पना का राम नहीं है, तब वह खुद को भी क्षमा नहीं कर पाएगी। अगले दिन मनीषा से मिलने जाते समय तक शाम हो चुकी थी। काउल कहने लगे, "मनीषा याद है न, मैंने जो हरी साड़ी नर्सिंग होम में दी थी, उसे पहन लो। "
मनीषा कुछ समय बाद वह साड़ी पहनकर आ गई। होठों पर लाल-लिपिस्टिक। ललाट पर बिंदी। आँखों में काजल की रेखा।
"मनीषा, तुमने अपने को देखा है? इस रानी के रूप को? तुम्हारी स्कूल वाली रानी को?"
मनीषा ने काउल के दोनों हाथ पकड़कर कहा, "काउल साहब, ये सब तुम्हारा दान है। मेरी जितनी उन्नति होगी, मेरा कर्ज उतना ही बढ़ेगा। मेरी एक सलाह है। थोड़ी प्रतीक्षा करें। "

घर के भीतर चली गई मनीषा।
एक भव्य महल की तरह घर। मोजाइक का फर्श। मार्बल की सीढ़ियाँ। सामने सुंदर लान। पोर्टिको में नई अमेरिकन गाड़ी रखी हुई है। वर्तमान में यहाँ मनीषा रहती है। भीतर से कोल्ड-ड्रिंक लेकर मनीषा आई। कहने लगी, "काउल साहब, जीवन में भाग्य हो या नहीं, एक्सीडेंट होते ही है। **यह घर देसाई के पिताजी का है। नैनीताल में रहते समय वह मेरे पिताजी के घनिष्ठ मित्र थे**। उनके लड़के- लड़की मेरे साथ एक ही स्कूल में पढ़ते थे। उनका बेटा देसाई इसी बीच विलायत से इंजीनियर बनकर लौटा। उस समय सभी ने मजाक में हम दोनों की शादी करने के लिए प्रस्ताव दिया। अब 10 वर्ष बाद फिर हमारी भेंट होती है। उनकी बहन कहती है मैं जल्दी उनके घर चली आऊँ। मिस्टर देसाई भी विवाह के लिए जोर दे रहे हैं। आंटी, अंकल सब **बेंगलुरु** में है। अगर मैं हामी भर देती हूं तो हम सब कल सवेरे

चले जाएंगे **बेंगलुरु** उनकी सम्मति लेने के लिए। वे लोग तुरंत अनुमति दे देंगे। " मनीषा की आंखों में उपहास का संकेत था।
मगर काउल के दिमाग में कुछ समय के लिए सुनामी आ गई। ऐसा लगा जैसे वह एक भूकंपग्रस्त इलाके में फंस गया है। निरुत्तर थे काउल। मनीषा देखती रही काउल की तरफ।
मनीषा ने कहा, " काउल कुछ तो बोलो, समय बीत रहा है। "

काउल खुद को मनीषा के अंदर देख रहे थे।

इस बीच अंदर से एक युवक बाहर निकल आया। नाम था देसाई। नमस्ते का आदान-प्रदान हुआ। फिर देसाई ने कहा, "सुना है कि आपने मनीषा के लिए बहुत कष्ट उठाए है। काफी पैसे भी खर्च किए है। मगर मनीषा इतनी स्वाभिमानी है कि कभी एक बार भी खबर हमें नहीं दी। चारो ओर ढूंढते-ढूंढते थक-हारकर हम लोगों ने तो आशा छोड़ दी थी। "

देसाई अत्यंत सुंदर, शिक्षित और सज्जन दिखाई दे रहे थे। रूप, गुण, वंश में मनीषा के लायक। एक ही दुनिया के दो जीव। सहज मिलन, प्राकृतिक और विधेय।

काउल अपने बारे में सोच रहे थे। मनीषा की जीवन दृष्टि से देसाई के साथ अपनी तुलना कर रहे थे। प्रखर ज्ञान, प्रतिष्ठा, शिक्षा, रूप में देसाई मनीषा के आदर्श राम है। कभी कोई कल्पना कर नहीं सकता है कि देसाई कालाबाजारी के लिए जेल में तड़ीपार हुए, कभी कोई सोच भी नहीं सकता कि यह युवक बाईजी के मुजरे में हाजिर हुआ होगा?किसी वेश्या के आलिंगनबद्ध हुआ होगा? देसाई सूरज की तरह नियमित निर्दिष्ट दिखाई दे रहा था। मगर वह स्वयं? एक नीतिहीन, चरित्रहीन, कक्षच्युत सामग्री। जिसका अतीत घिनौना है, वर्तमान कलंकित है, भविष्य
अंधकारमय है।

मन ही मन कहने लगे, "मनीषा, मेरी मदद करो। मैं तुम्हें मुक्ति दे रहा हूं। मेरा कर्तव्य पूरा हो गया। " निर्विच्छिन्न भाव से मनीषा के नारीत्व के नव-कलेवर की तरफ देखते रहे।

मगर काउल मन ही मन सोच रहे थे, इतने सानिध्य और आत्मीयता के बावजूद मनीषा किसी और के साथ विवाह करने की सोच रही है? अन्य के साथ अपना यह प्रस्ताव?उसने जान-बूझकर मौका दिया है! मनीषा तुम रूपवती जरूर हो, गुणवती भी हो, मगर नारी की दुर्बलता से ऊपर नहीं उठ पाई हो। देख रही हो, किसी और के निवेदन को अपने गौरव के लिए। जिसे नारी खूब गर्व के साथ स्वीकार किया करती है।

मनीषा, तुमने मेरी भी तुलना देसाई के साथ की होगी। सोच रही होगी, कौन-सा पुरुष अधिक उपयुक्त है? मगर ऐसा मौका आने ही क्यों दिया? क्यों मेरी इस ममता का तुमने अपमान

किया? शायद अतीत के मेरे दान के कारण तुम मेरी ओर आकृष्ट भी हो। मगर वह तो तुम्हारी कृतज्ञता होगी, तुम्हारा प्रेम नहीं। जो आज तुलना कर सकता है, वह कल भविष्य में परित्याग भी कर सकता है। मेरे इस पापी जीवन के बावजूद भी मैं तुमसे एकनिष्ठता चाहता था। मगर और यह संभव नहीं है।
दुख और अपमान से विचलित हो गए काउल। मनीषा से उन्हें वितृष्णा होने लगी। काउल ने कहा, "थोड़ी बेचैनी लग रही है। सोचता हूं, होटल जाकर आता हूं। "

मनीषा ने कहा, "नहीं, हमारे साथ आइए आप। "
देसाई ने कहा, "तबीयत खराब है तो आराम करना जरुरी है। काउलको रोकना ठीक न होगा। "

मनीषा के विशेष अनुरोध पर काउल गाड़ी में बैठ गए। देसाई के निर्देश पर अगली सीट पर बैठ गई मनीषा। देसाई गाड़ी चला रहे थे। काउल पीछे बैठे हुए थे। देसाई ने मनीषा के कंधे पर हाथ रखकर कहा, "रास्ता तय करने का दायित्व मेरा है, जगह पसंद करने का तुम्हारा काम। पिक्चर, मैरिन ड्राइव, हैंगिंग गार्डन या क्लब?"

आंखों के आगे देख रहे थे काउल इतिहास की वही पुरानी कहानी। ईंट से ईंट सजाई जा रही थी। बीच में थी अनारकली। वह विनती कर रही थी, रो रही थी, चीत्कार कर रही थी। समाधि क्रमशः पूरी होती जा रही थी। फिर बंद हो गई समाधि। शरीर दिखाई देना बंद हो गया।

अनारकली ने विश्राम लिया। इस क्षेत्र में जहाँगीर की कोई अनारकली नहीं है! वह खुद ही कब्र में दफन हो रहा था। सांस रुक रही थी, सीने में हलचल हो रही थी। काउल ने कहा, "मेरी होटल इस गली में है, बस यही छोड़ दो। "

मनीषा ने कहा, "काउल साहब, अकेले आप नहीं जा सकेंगे। मेरे साथ आइए या फिर मुझे अपने साथ चलने दीजिए। "

काउल ने कहा, "कोई आवश्यकता नहीं है, मैं यही से विदा लेता हूं। फिर होटल बहुत छोटा है, साफ-सुथरा नहीं है। "मनीषा ने कहा, "काउल, देसाई नहीं जा पाएंगे, मेरे लिए तुम्हारी हर जगह सुंदर है। मुझे इजाजत दो। "

काउल ने कहा, "मनीषा, जो घृण्य, अस्पृश्य है, वह सबके लिए समान है। "

गाड़ी से उतरकर काउल के सामने खड़ी हो गई मनीषा। देर तक सिर्फ उधर देखती रही। उसने कहा, "रमेश! "

काउल यह सुनने के लिए तैयार नहीं थे। वह कहने लगे, “मनीषा, तुम्हारे मित्र प्रतीक्षा कर रहे हैं। जल्दी चली जाओ। ”
मनीषा ने कहा, “मेरे मित्रों के कर्तव्य की तुम अवहेलना नहीं करते, मगर मेरे प्रति तुम्हारा क्या कर्तव्य नहीं है? क्या कोई दायित्व नहीं है? क्या कोई आशा भी नहीं है?”

काउल ने कहा, “मनीषा, जो देवता पर चढ़ने लायक है, उसका स्थान कूड़े का ढेर नहीं हो सकता है। फिर तुम और असहाय नहीं हो। ”
मनीषा ने कहा, “वह ख्याल मेरा होगा, वह फैसला मेरा होगा। उस बारे में मैं विचार कर चुकी हूँ, और फैसला भी। ” कुछ समय रुककर कहा, “रमेश, एक बार अपना मुंह खोलो, अपना उत्तर दो। ”

देसाई ने आवाज लगाई, “मनीषा, यहाँ गाड़ी और नहीं रुक सकती। यहाँ पार्किंग करना मना है। ”
काउल ने कहा, “मनीषा, जाओ। ”
“आज जवाब लेकर जाऊँगी। आखिरी जवाब। ”
“अस्वाभाविक परिस्थिति पैदा न करो। सड़क पर जिंदगी के फैसले नहीं हुआ करते हैं। ”

“ इस सड़क से तो एक दिन उठाया था मुझे, काउल! ”

दूर से देसाई ने फिर आवाज लगाई।

मनीषा ने कहा, “रमेश, कल सुबह तक मुझे उत्तर चाहिए। ” नमस्कार किया मनीषा ने। दोनों सुरम्य पंखुड़ियों के मिलन वाली नमस्कार-मुद्रा। वही निवेदन भरी दृष्टि। वे ही कांपते होंठ। वही शांत मूर्ति, मनीषा।
मनीषा गाड़ी के पास चली गई। लाइट जलाकर वह गाड़ी चल पड़ी। काउल कुछ समय के लिए खड़े रहे। आँखों से बहती आंसुओं की दो धाराओं से नमस्कार का उत्तर दिया काउल ने। मनीषा को काउल की आखिरी अलविदा।
आशा जहां असीम होती है, वहाँ जरा-सा व्यतिक्रम प्रलय पैदा कर देता है। मनीषा से काउल ने जो आशा की थी, वह तो दुनिया का कोई मामूली-सा संबंध नहीं था, वह तो गंभीर आत्माओं का शाश्वत मिलन की आकांक्षा थी। काउल जहां रहना चाहते थे, वह पार्थिव जगत का कोई वास्तविक वक्ष-स्थल नहीं है, वह अतिभौतिक, अतींद्रिय मनीषा का अक्षय हृदय-स्थली हैं।
वर्तमान में काउल अपने अस्तित्व का मनीषा के पास में होने का संदेह कर रहे थे। अपनी स्थिति से संशय पैदा हो रहा था। अतीत और भी भयंकर, कुत्सित लग रहा था।

ठेस पहुंची काउल को। प्रत्याख्यान का प्रतिक्षेधक है, मगर अपमान का कोई उपशम नहीं है। जो अग्नि भस्म नहीं कर पाती, जलन पैदा करती है;जो व्याधि मृत्यु नहीं दे पाती, वेदना देती रहती है, जो अपूर्ण प्रेम सृष्टि नहीं करता, प्रलय की भूमिका बनती है- वही अग्नि, वह ही व्याधि और उसी तरह क्षत-विक्षत अधूरे प्रेम ने रमेश काउल को पराजित और असहाय बना दिया।

8.

इस विराट प्रासाद के प्रांगण में सुबह-सुबह आकाश की लालिमा की ओर देख रही थी मनीषा। आकाश की यह निर्विच्छिन्न कोमलता। सिंफोनी की तरह आकाश। उसी मधुर संगीत से झंकृत यह प्रकृति।

क्यों? कल शाम को काउल की आँखें इसी तरह रंगीन होती जा रही थी आंसुओं के पहले स्पर्श की तरह। काउल, तुमने त्याग, उपभोग करना सीखा है, **मगर अधिकार जताना नहीं**। हरपल मैं प्रतीक्षा करती रही कि तुम कहोगे, “मनीषा, मेरे पास आओ। ”
केवल इन तीन शब्दों के लिए कितनी रातें मैंने जागते हुए काटी। कितने विनीत निवेदन किए। एक दिन भी मेरा स्पर्श नहीं किया। कभी हल्का-सा इशारा नहीं किया। तुम्हारा जरा-सा इशारा पाकर मैं अपना सारा विश्व तुम्हारी चरणों में लुटा देती। तुम्हारे हृदय में खो जाती। कितने प्रसंग गढ़े। कितने छलावे दिखाएं। कभी जाहिर नहीं होने दिया तुमने अपना अधिकार। न शरीर की चाह रही, न मन की। केवल दूर ही रहे किसी मधुर सपने की तरह। मगर क्यों? क्या बाधा थी?

शायद बीमारी। मगर तुम तो एकमात्र ऐसे व्यक्ति हो, जिसने अपनी सारी संपदा लूटा दी। अपनी एकाग्रता, निष्ठा, जी-जान से मेहनत करके। इस व्याधि के लिए तुम नफरत करोगे, मुझे नहीं लगता है। रात-दिन उस बिस्तर के पास मैंने देखा मन के बाहर और भीतर देखा है।

एक बात जानते हो?जीने की अगर तमन्ना थी तो केवल तुम्हारे लिए। आशा थी बस तुम्हें पाने के लिए। मैंने भगवान को पुकारा सिर्फ तुम्हारे खातिर, भगवान तुम्हारी कोशिश सफल करें ।

तुमने एक बार भी निमंत्रण नहीं दिया मुझे अपने पास आने के लिए। मेरे शरीर के सस्ते उपभोग की भी इच्छा नहीं की। मैं तो उसके के लिए प्रस्तुत थी।

मैंने सोचा अपने विवाह के बात मैं खुद उठाऊंगी। उसके लिए कुछ साधारण संकेत तो दोगे। देसाई को लाकर तुम्हारे आगे हाजिर किया। फिर भी तुम मौन रहे। क्या अपना अहंकार दिखाना चाहते थे? मैं सिर्फ उसके लिए एक आयुध-मात्र थी! मगर अब भी मेरा मन इस बात को मानने के लिए तैयार नहीं है।

फिर ये आंखे उदास क्यों है, तुम्हारी दृष्टि विचलित क्यों है ?

मनीषा ने उसी पल काउल के होटल में जाने का निश्चय किया। निर्लज्ज होकर कहूँगी, " काउल, मैं तुम्हें चाहती हूं- तुम्हारी घृणा और उपेक्षा के बावजूद भी। अपने कदमों में मुझे जरा-सी जगह दे दो। मैं कुछ सुनना नहीं चाहती। मेरी कोई शर्त नहीं है। मेरे इस पिंड में जिसने प्राणों का संचार किया हैं, **वह केवल इसका अधिकारी है। "**

सूरज तब तक आकाश में ऊपर नहीं चढ़ा था। चुपचाप मनीषा बाहर निकल पड़ी। रास्ते से टॅक्सी लेकर होटल पहुंची। कमरे का दरवाजा खटखटाया, मगर कोई जवाब नहीं मिला। उसने धक्का देकर दरवाजा खोला। कोठरी एकदम खाली थी। मन में डर-सा लगा। एक अनजान आशंका की सिहरन मनीषा के शरीर में दौड़ गई।

काउल होटल छोड़कर जा चुके थे। बहुत समय तक उस सूने कमरे में वह इधर-उधर भटकती रही। आखिरकर वह होटल से बाहर निकल आई।
कोई भी काउल का अता-पता नहीं बता पाया।
****
काउल को ढूंढने के लिए मनीषा कलकत्ता गई। वहाँ भी उसकी कोई खबर नहीं मिली। चेन्नई गई। महाराष्ट्र में उनके गांव गई। कहीं कोई पता नहीं चला। पुलिस में इत्तला की। जितने भी काउल के मित्र थे, उनसे मुलाक़ात की। दुनिया के कोने-कोने में पत्र लिखे। मगर कुछ भी पता नहीं चला।

अपने अंतिम समय तक काउल की प्रतीक्षा करती रही मनीषा।

काउल के साथ जिस कैंसर अस्पताल में सबसे पहले भेंट हुई थी, वहाँ अब मनीषा सेविका थी।   काउल की प्रतीक्षा के लिए वह अपना पाथेय संग्रह कर रही थी। सेवा करती थी कैंसर के मरीजों की। एक छोटे-से कमरे में काउल का बड़ा फोटोग्राफ लगाकर रखी थी वह। उस फोटो पर हर-रोज मनीषा पुष्पांजलि अर्पित करती थी। जो स्मृतियाँ विगत वर्ष से काउल के साथ जुड़ी हुई थी, उन्हें मन ही मन तरोताजा कर काउल का सानिध्य पाती थी। जितने भी वार्तालाप हुए थे, उन सबका विस्तृत लेखा-जोखा तैयार किया था उसने। उसे वह रोज पढ़ती

रहती थी बाइबल, गीता की तरह। उसके जीवन का एकमात्र उद्देश्य था, एक पल के लिए ही सही काउल के दर्शन करने का।
कहा जाता है कि स्वामी निगमानंद ने अपनी मृत पत्नी को योग-बल से जीवित कर दिया था। मगर काउल तो जिंदा है। वह योग-साधना भी तो मनीषा के बस की बात नहीं है।

काउल मुझे इतना चाहते थे। मेरा जिंदा रहना ही पर्याप्त था। तुम्हारे साथ अवश्य मुलाक़ात होगी काउल! किसी न किसी दिन मैं तुम्हें अपना बनाकर ही रहूंगी।

अब मनीषा बीमार है। पूछने पर कहती है, “काउल मेरा नारीत्व नहीं चाहते थे। मेरी इस बीमार काया को देखकर आकर्षित हुए थे। शायद मुझे इसी हालत में उनका संस्पर्श प्राप्त हो जाए। ”

अचानक एक दिन मनीषा ने खुद को दुल्हन के वेश में सजाया। जितने पैसे उसके पास थे, उनके गहने खरीद लिए। काउल की दी हुई हरी साड़ी पहन ली। जुडे में फूल लगाए। पैरों में घुँघरू बांधे। ललाट पर रंगीन बिंदी और मांग में सिंदूर भर लिया।

परिजनों को आमंत्रित किया। वह बिस्तर पर सोई हुई थी। उसे तेज बुखार था। शरीर दुर्बल हो गया था। शहनाई वादक भी आए। रात भर शहनाई बजती रही। **मनीषा ने काउल के फोटोग्राफ** खूब सजाया। काउल के माथे पर चंदन की बिंदियों का मुकुट बनाया। गले में फूलों का हार पहनाया। परिजनों को कहने लगी, “आज मेरे विवाह का शुभ-लग्न है। आप लोग सादर आमंत्रित है। ”
काउल कहते थे, मनीषा, भाग्य नाम की भी कोई चीज होती है। उसीसे असंभव संभव हो जाता है। मगर मेरा ऐसा क्या भाग्य है, जिससे संभव भी असंभव हो गया। जिसने आश्रित को बेसहारा कर दिया।
उस रात के अंतिम प्रहर में मनीषा ने प्राण त्याग दिए। उसकी डायरी में एक खत लिखा हुआ था काउल के नाम।

मेरे प्राणों के काउल,

प्रतीक्षा करते-करते मेरा शरीर अवश हो गया हैं! अब मेरे काबू में नहीं है। बहुत इच्छा थी कि एक पल के लिए ही सही तुम्हें निबिड भाव से अपनी गोद में रख पाती। मगर तुम्हारे उस ‘भाग्य’ ने ऐसा नहीं होने दिया। यह दंड मुझे क्यों दिया?तुम क्यों निर्वासन में चले गए? तुम भोले-भाले हो।

काउल, सच में आज बहुत जी कर रहा है मेरे इन आखिरी क्षणों में तुम्हें देखने के लिए। तुम्हारी वे नशीली आंखें, उदास होठ, मासूम चेहरा अपने हृदय में एक मर्तबा सँजो लेना चाहती थी। भले, एक पल के लिए ही सही। इतने देवी-देवता है, क्या कोई भी थोड़ी-सी सहायता नहीं करेगा? मेरी आखिरी बात सुन लो, काउल। मैं विदा ले रही हूं। विदा की घड़ी नजदीक है। मगर मेरी बात अवश्य मानोगे, मुझे वचन दो। मेरे मृत शरीर की सौगंध। इस पत्र को पढ़ने के बाद तुम शीघ्र लौट आना मेरे पास। दूर आकाश के दिग्वलय के पास जहां से नीला-हल्का प्रकाश दिखाई देता है- वहाँ पर। कितनी बार तुमने मुझे वह जगह दिखाई है। तुम्हें वह जगह याद है?
मैं वहाँ पर तुम्हारी प्रतीक्षा करूंगी।

आज मेरी आँखों के सामने हर पल की घटनाएँ गुजर रही है। जिस दिन तुमने मुझे पहली बार उठाया था सड़क से, याद है? सुलाया था अपनी गोद में, याद है? गाड़ी में बहुत पीड़ा हो रही थी, मगर तुम नहीं जान पाओगे कि तुम्हारा वह संस्पर्श मुझे कितनी शांति दे रहा था!
उठने तक की भी मैंने कोशिश नहीं की। लगता था जैसे मैं अपनी मां की गोद में निश्चिंता से सोई हुई हूं। उस दिन मन में विश्वास पैदा हुआ। जैसे मैं तुम्हारे पास आजीवन रहूँगी, तुम्हारी गोद में। याद है, डयूरिक की होटल में जब तुम्हारी तबियत खराब हुई थी, मैं तुम्हारे पाँवों के पास सोई हुई थी, तुम्हारे पाँवों में मेरा चेहरा छुपाकर। तुम सो रहे थे। रात- दिन मैं तुम्हें देखती रही। सोच रही थी, यही तो मेरा है। और जब तुम पूरे मेरे हो जाओगे तो मैं सब-कुछ तुम्हें बता देती, प्रत्येक घटना, प्रत्येक विक्षिप्त चिंता। तुमने यह सामान्य मौका भी मुझे नहीं दिया।

आंखों के आगे नाच उठा सड़क का वह दृश्य। धीर, शांत, हताश शिशु की तरह खड़े थे, मगर क्यों? क्यों तुमने अपना अधिकार नहीं जताया?क्यों मेरी विनती स्वीकार नहीं की?
कितनी जोर-जबरदस्ती कर रहे थे देसाई, उनकी बहन, अंकल, आंटी सभी मेरे विवाह के लिए।
बाद में कहने लगे, विवाह भले ही मत करो, मगर यही रहो हमारे घर में। मगर काउल मेरी आंखों के आगे केवल दिख रहा था तुम्हारा निरीह त्यागी चेहरा, तुम्हारी भीगी पलकें। उस दिन तुम्हारे कमरे में बिस्तर पर बैठकर दीवारों को सहलाती रही। ऐसा लगा जैसे मैं तुम्हारे शरीर की सुगंध को सूंघ रही हूँ। उस दिन मैं डर गई, शायद तुम्हें और नहीं पा सकूंगी। वह भय आज सत्य में बदल गया।

मैं तुम्हें इतना प्यार करती हूँ काउल, दुनिया में कभी तुम्हें इतना प्यार नहीं मिलेगा और कोई इतना प्यार कर भी नहीं पाएगा। लौट आओ काउल; अभी भी आशा लगाए रखी हूँ। तुम जरूर आओगे।

कष्ट हो रहा है और ज्यादा लिखने के लिए हाथ भी नहीं चल रहा है। मगर क्या लग रहा है, जानते हो-यह खत लिखने तक ही मैं जिंदा हूँ। मैं तुम्हें अपने पास अनुभव कर रही हूँ। जैसे तुम्हारी साँसे भी मेरे चेहरे पर लग रही है। जिस समय यह पत्र लिखना बंद हो जाएगा-तुम फिर मुझसे दूर चले जाओगे- बहुत दूर। जो मैं इस जीवन में नहीं पा सकी, मरने के बाद तुमसे उसे पाने की तमन्ना बहुत तीव्र हो गई है। मेरा आलिंगन स्वीकार करो, निबिड, घनिष्ठ, एकांत आलिंगन।

इति
तुम्हारी पत्नी
मनीषा